मासिक

शिविरा पत्रिका

वर्ष : 61 | अंक : 02 | अगस्त, 2020 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹20

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

www.rajsevak.com

सत्यमेव जयते

श्री गोविन्द सिंह डोटासरा
राज्य मंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा) विभाग
(स्वतंत्र प्रभार)
पर्यटन एवं देवस्थान विभाग
राजस्थान सरकार

तमसो मा ज्योतिर्गमय

परिश्रम एवं प्रतिबद्धता दो ऐसे वाहन हैं जिनकी सवारी करने वाला कठिन से कठिन राहों से गुजरता हुआ मनचाही उपलब्धि हासिल करके ही रहता है। महान दार्शनिक अरस्तू ने कहा है-''ऐसी कोई प्रतिभा नहीं है जिसमें लगन का सम्मिश्रण न हो।'' प्रतिभा उत्तम साधन सुविधाओं की मोहताज नहीं होती। सच्चे संकल्प और बिना रूके चलने वालों को मंजिल मिलकर रहती है।

सीमावर्ती जिले बाड़मेर के मुकाम लोहारवा स्थित राउमावि. के प्रतिभाशाली विद्यार्थी प्रकाश फुलवारिया ने सीनियर सैकण्डरी (कला संकाय) परीक्षा 2020 में 99.20 फीसदी अंक प्राप्त कर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है।

आईये, जरा बच्चे की पारिवारिक पृष्ठभूमि जानने का प्रयास करते है। प्रकाश के पिताजी सामान्य मजदूर, कमठा मजदूर हैं। आप अन्दाज लगा सकते हैं कि कितने व कैसे साधन उसे मयस्सर हुए होंगे। ड्रेस बनवाने में भी मुस्किलों के चलते एक ही ड्रेस से दो साल निकाले। ना कोई ट्यूशन, ना कोई घर में पढ़ाने वाला, मगर इन सबसे बड़ी एक ताकत, परिश्रम और प्रतिबद्धता की ताकत ने उसे हीरो बना दिया। मैं छात्र प्रकाश फुलवारियाँ को इस अद्भुत उपलब्धि के लिए बधाई देते हुए जीवन में कदम-कदम पर सफलता प्राप्त करने हेतु शुभकामनाएँ देता हूँ। प्रकाश को ब्रांड स्टुडेंट बनाकर उसकी सफलता की कहानी विद्यार्थियों को सुनाई जानी चाहिए।

अगस्त माह उत्सव एवं पर्व का माह है। देश का स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त) हमें उन अमर शहीदों की याद दिलाता है जिन्होंने अपना बलिदान देकर, कष्ट वेदनाएं सहन कर हमें स्वतंत्रता दिलाई। यह वर्ष राष्ट्रपिता महात्मागांधी की 150वीं जयन्ती का वर्ष है। हमें इन महान राष्ट्रभक्तों के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए।

इसी माह में रक्षाबंधन, कजली तीज, श्री कृष्ण जन्माष्टमी, गोगा नवमी, गणेश चतुर्थी, परम त्यागी दधीचि जयन्ती एवं लोक देवता बाबा रामदेव व तेजा दशमी है। कोरोना महामारी से बचाव के लिए जारी एडवाइजरी का पालन करते हुए हमें इन तीज त्यौहारों को मनाना चाहिए। मेरी गुरुजनों से अपील है कि कोरोना से मुकाबला करने में यौद्धा के रूप में अपनी भूमिका को बनाए रखें। बृहदारणय कोपनिषद् के संदेश के साथ अपनों से अपनी बात को विराम देता हूँ-

ॐ असतो मा सद्गमय,
तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मृत्योर्मामृतंगमय।

हे परमात्मा! हमें असत्य से सत्य की ओर ले चलो। अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो। मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो।

(गोविन्द सिंह डोटासरा)

"परिश्रम एवं प्रतिबद्धता दो ऐसे वाहन हैं जिनकी सवारी करने वाला कठिन से कठिन राहों से गुजरता हुआ मनचाही उपलब्धि हासिल करके ही रहता है। महान दार्शनिक अरस्तू ने कहा है-''ऐसी कोई प्रतिभा नहीं है जिसमें लगन का सम्मिश्रण न हो।'' प्रतिभा उत्तम साधन सुविधाओं की मोहताज नहीं होती। सच्चे संकल्प और बिना रूके चलने वालों को मंजिल मिलकर रहती है।"

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।

In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 61 | अंक : 2 | श्रावण-भाद्रपद, २०७७ | अगस्त, 2020

प्रधान सम्पादक
सौरभ स्वामी

❁

वरिष्ठ सम्पादक
अनिल कुमार अग्रवाल

❁

सम्पादक
मुकेश व्यास

❁

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

❁

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 20

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 100
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 200
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 300
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका

माध्यमिक शिक्षा राजस्थान

बीकानेर-334 011

दूरभाष : 0151-2528875

E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- मौलिक एवं स्वतंत्र दृष्टिकोण 5

आलेख

- शिक्षामंत्री जी से साक्षात्कार 6
  ओम प्रकाश सारस्वत
- बापू के आदर्श आज भी प्रासंगिक हैं 12
  बजरंग प्रसाद मजेजी
- लक्ष्य को सदा अपनी निगाहों में रखो 13
  हीराराम चौधरी
- महात्मा गाँधी तथा सिनेमा 14
  राजेन्द्र प्रसाद मील
- हम खेल देखने वाले नहीं दिखाने वाले बनें : **सुभाष चन्द्र कस्वां** 16
- खेल की दुनिया में शिक्षा विभाग का नाम रोशन कर रहा है सॉफ्टबॉल 17
  शाकिर अली
- नो बैग डे 18
  विजय कुमार आर्य
- राष्ट्रीय स्तर पर राजस्थान हुआ गौरवान्वित 19
  सरूपाराम माली
- कोरोना के दौर में स्वाध्याय की प्रासंगिकता 20
  धर्मेन्द तिवारी
- शिक्षा की सार्थकता बनाम उपयोगिता 21
  नारायण दास जीनगर
- बोरियत से बचने के उपाय 22
  मदन लाल मीणा
- राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय हल्दीना, अलवर (राजस्थान) 31
  राजेश लवानिया
- महामारी में शिक्षा की बदली तस्वीर 32
  संजीव बेदी
- शिक्षा में नवाचार जरूरत व महत्त्व 33
  गौरव सिंह 'घाणेराव'
- नो नेगेटिव बी पॉजिटिव 34
  सत्यनारायण रोलन
- नमामि पुण्य निर्झरणी 35
  पुष्पा शर्मा
- रचनात्मक शनिवार 36
  तिलक राज

स्तम्भ

- पाठकों की बात 4
- आदेश-परिपत्र 23-30
- बाल शिविरा 42-43
- शाला प्रांगण 44-48
- चतुर्दिक समाचार 49
- हमारे भामाशाह 50

पुस्तक समीक्षा 38-41

- किनारा
  लेखक : डॉ. राधा किशन सोनी
  समीक्षक : **ओम प्रकाश तँवर**
- स्वागत चाँद तुम्हारा
  लेखक : डॉ. कृष्णा आचार्य
  समीक्षक : **शैलेन्द्र सरस्वती**
- सामाजिक सरोकार की सार्थक अनुभूतियाँ (अभिमत), लेखक : जुगराज राठौर
  समीक्षक : **राम गोपाल प्रजापति**
- पिता मेरे (लंबी कविता)
  लेखक : संतोष एलेक्स
  समीक्षक : **डॉ. नीरज दइया**

मुख्य आवरण :

नारायणदास जीनगर, बीकानेर

विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary

www.rajsevak.com

पाठकों की बात

- शिविरा जुलाई-2020 का अंक मिला जिसको पढ़ने की बड़ी लालसा रहती है। पूरा अंक एक ही बैठक में पढ़ डाला। आपकी अपनों से अपनी बात शिक्षा मंत्री श्री गोविन्दसिंह डोटासरा व मेरा पृष्ठ आदरणीय श्री सौरभ स्वामी निदेशक माध्यमिक शिक्षा द्वारा आपूरित था। दोनों ही पृष्ठों में शिक्षा विभाग के कर्मियों द्वारा कोरोना में किए गए भरसक प्रयासों की सराहना की गई और कार्मिकों को विशेषकर शिक्षकों को हार्दिक धन्यवाद दिया गया है। एक अनुकरणीय पहल भी पहले सेवा निवृत्त शिक्षा क्षेत्र के वरिष्ठ उच्चतम अधिकारियों द्वारा पूरा पेंशन वेतन का दान योगदान शिक्षामंत्री श्री डोटासरा को देना जाना है। एक अभूतपूर्व महादान की श्रेणी में आता है। यह उनका कोरोना महामारी से पीड़ित लोगों की मदद करेगा। उन सेवानिवृत्त शिक्षा अधिकारियों का हार्दिक बधाई। आलेख गुरुपूर्णिमा, कबीर, प्रभावी शिक्षण, पर्यावरण एवं जल संरक्षण, आपदा को अवसर में बदले, संकलन से सफलता, पर्यावरण एवं जल संरक्षण, प्रतिभाशाली बेटियाँ अंक में चार चांद लगा रहे हैं। इनके रचयिताओं को बहुत-बहुत बधाई। प्रथम पृष्ठ चिन्तन में दिया गया श्लोक बहुत ही सुन्दर है जो पाठकों के लिए पाथेय बनेगा। सम्पादक मंडल को प्रसंशानुसार बहुत-बहुत हार्दिक बधाई।

  -टेकचन्द शर्मा, झुन्झुनू

- वैश्विक आपदा कोरोना महामारी के चलते एक अन्तराल पश्चात् शिविरा पत्रिका को पाकर आत्मसंतोष की अनुभूति हुई। सबसे पहले तो इन विषम परिस्थितियों में कार्य करते हुए शिविरा के इस अंक को पाठकों तक पहुँचाने के लिए 'टीम-शिविरा' को साधुवाद। अंक में शिक्षा मंत्री महोदय का साक्षात्कार सबसे ध्यानाकर्षक रहा। उन्होंने अपने आप को शिक्षक-पुत्र बताते हुए शिक्षा, शिक्षक एवं शिक्षार्थी के लिए जो समर्पण भाव जताया है वह दुर्लभ है। एक स्थान पर उन्होंने प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल सी. राजगोपालाचारी के कथन का उल्लेख करते हुए कहा कि बालक वे चमकते हुए सितारें हैं जो भगवान के हाथ से छूटकर धरती पर गिर पड़े हैं। यह भाव जताता है कि माननीय शिक्षा मंत्री महोदय बच्चों के प्रति कितने समर्पित हैं। अंक में लोकेश कुमार पालीवाल का आलेख-आपदा को अवसर में बदले राजीव अरोड़ा का आलेख गुरु पूर्णिमा ने विशेष प्रभावित किया। आदेश परिपत्र, शिविरा पंचांग, शाला प्रांगण आदि स्थाई स्तम्भ भी उपयोगी थे। बाल पत्रिका का परिशिष्ट बाल लेखकों के लिए लेखन कला के विकास हेतु विशेष उपयोगी मंत्र बन पड़ा है। पत्रिका में समसामयिक विषय या मासिक इतिहास के स्थाई स्तम्भों को जोड़कर अधिक उपयोगी बनाया जा सकता है। पुनः शानदार अंक के लिए संपादक मण्डल का आभार।

  -विकास चन्द्र भारू, बीकानेर

- शिविरा जुलाई का अंक प्राप्त होते ही सुकून की अनुभुति हुई। शिविरा संपादक मण्डल ने वैश्विक आपदा कोरोना महामारी के इस कठिन समय में ही हम सब तक यह अंक पहुँचाया। निदेशक महोदय की एस.एम.एस. मंत्र के साथ दिशाकल्प के माध्यम से सम्पूर्ण शिक्षा जगत से इस आपदा को अवसर में बदलने की अपील सराहनीय एवं अनुकरणीय है। श्री सारस्वत जी का शिक्षा मंत्री महोदय का साक्षात्कार माननीय शिक्षा मंत्री महोदय और सरकार का शिक्षा के प्रति समर्पण को दर्शाता हैं। अंक में चैनाराम सीरवी का शिक्षा विमर्श-गिजूभाई बधेका का दर्शन विशिष्ट आलेख बन पड़ा। साथ ही पृथ्वीराज लेघा की केजीबीबी. पर जानकारी उपयोगी रही। साथ ही डॉ. कृष्ण आचार्य का कबीर पर एवं राजीव अरोड़ा का गुरु पूर्णिमा पर आलेख भी ज्ञानवर्द्धक रहे। शिविरा के अन्य स्तम्भ यथा पुस्तक समीक्षा, आदेश परिपत्र, चतुर्दिक समाचार, शाला प्रांगण, शिविरा पंचांग, आदि हमेशा की तरह उपयोगी एवं ज्ञानवर्द्धक रहें। बाल पत्रिका के साथ-साथ कोई बाल प्रतियोगिता को भी शिविरा का हिस्सा बनाना भी बच्चों की इस पत्रिका के प्रति रुचि को बढ़ाएगा।

  -सरोज, कुंडेली, राजसमंद

▼ *चिन्तन*

अल्पानामपि वस्तूनां संहतिः
कार्यसाधिका तृणैर्गुणत्वमापन्नैर्
बध्यन्ते मत्तदन्तिनः।

अर्थात : छोटी-छोटी वस्तुएँ एकत्र करने से बड़े काम भी हो सकते हैं। जैसे घास से बनायी हुई डोरी से मत्त हाथी बांधा जा सकता है।

www.rajsevak.com

सत्यमेव जयते

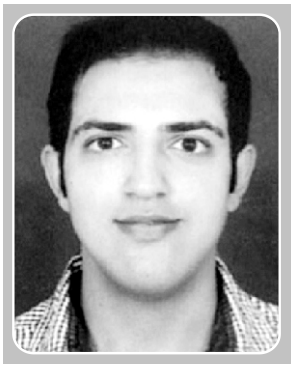

सौरभ स्वामी
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

मौलिक एवं स्वतंत्र दृष्टिकोण

राष्ट्रीय पर्व, स्वतंत्रता दिवस की आप सभी को बहुत-बहुत बधाई! हार्दिक शुभकामनाएँ!!

साथियों, स्वतंत्रता हमारे जीवन का ऐसा आधार है जिससे हमारा चिन्तन, कार्यपद्धति और जीवन-दृष्टि प्रभावित होती है। हमारे बड़े बुजुर्गों ने बहुत स्पष्ट कहा है ''पराधीन सुपनेहू सुख नाहीं'' इसलिए अनगिनत बलिदानों के बाद मिली स्वतंत्रता के मूल्य को हमें समझना चाहिए। वर्तमान समय विशिष्ट है हमारे सामने स्वतंत्रता के साथ आत्मनिर्भरता की बड़ी चुनौती है। हमारा सौभाग्य है कि हम शिक्षा जैसे पुनीत कार्य से जुड़े हैं। हमारा दृढ़ संकल्प होना चाहिए कि हमारा प्रत्येक विद्यार्थी तथ्यों और घटनाओं को समझने में अपना मौलिक एवं स्वतंत्र दृष्टिकोण विकसित कर सके।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड कक्षा-12 के गत-सत्र के परीक्षा परिणामों ने विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति के प्रति नई आशा और विश्वास जगाया है। विपरीत परिस्थितियों में भी शिक्षकों और विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम देकर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की है। सभी विद्यार्थियों के सुनहरे भविष्य के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ! वे अपने लक्ष्य के प्रति सचेत होकर दृढ़ता से आगे बढ़ें! निरन्तर प्रगति करें।

गत-सत्र में महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेज़ी माध्यम) जिला स्तर पर संचालित किए गए। नवीन सत्र में अंग्रेज़ी माध्यम राजकीय विद्यालयों को ब्लॉक स्तर पर भी संचालित किया जा रहा है। अभिभावकों का प्रवेश के प्रति उत्साह इन विद्यालयों से विशेष ऊर्जा की माँग करेगा, वहाँ कार्यरत सभी शिक्षक और कार्मिकों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की अपनी प्रतिबद्धता पर खरा उतरना है।

अगस्त माह में रक्षाबन्धन, कृष्णजन्माष्टमी के साथ और भी विशिष्ट पर्व हैं। पर्व और उत्सव हमारी सामूहिक मंगलेच्छा की भावना को उत्साह के साथ प्रकट करते हैं, परन्तु वर्तमान दौर में कोरोना के कारण हमें शासन द्वारा निर्धारित एडवायजरी की पालना करते हुए ही इन्हें मनाना है। आप सभी अपना कर्त्तव्यपालन श्रेष्ठतम रूप में करें। स्वस्थ रहें, प्रसन्न रहें।

मंगलकामनाओं के साथ...

(सौरभ स्वामी)

“हमारा सौभाग्य है कि हम शिक्षा जैसे पुनीत कार्य से जुड़े हैं। हमारा दृढ़ संकल्प होना चाहिए कि हमारा प्रत्येक विद्यार्थी तथ्यों और घटनाओं को समझने में अपना मौलिक एवं स्वतंत्र दृष्टिकोण विकसित कर सके।”

www.rajsevak.com

गतांक से आगे...

हिन्द देश के निवासी सभी जन एक हैं

शिक्षामंत्री जी से साक्षात्कार

शिविरा 15 : कोविड-19 के चलते प्रदेश में बोर्ड एवं विश्वविद्यालयों की परीक्षाएं बीच में स्थगित कर दी गई थी। उसके बाद सीबीएसई ने शेष परीक्षाएं नहीं करवा कर औसत आधार पर मार्क्स अवार्ड करने का मध्यम मार्ग निकाला। विश्वविद्यालयी परीक्षाएं नहीं करवाने की चर्चाएं चल रही हैं। इन सबके बावजूद राजस्थान बोर्ड की शेष रही परीक्षाएं करवाने का आपका साहसिक निर्णय एवं बिना किसी बाधा के परीक्षाओं का सफलतापर्वूक आयोजन व रिकार्ड समय में रिजल्ट्स घोषित करना अविश्वसनीय सच है। इस प्रेरणादायी, अनुकरणीय पहल की समूचा देश सराहना कर रहा है। आप क्या सोचते हैं सर?

शिक्षामंत्री : आप ठीक कह रहे हैं। सीबीएसई एवं विश्वविद्यालय परीक्षाओं से सम्बन्धित एग्जामिनेशन सेन्टर्स की तुलना में हमारे सेन्टर दूर दराज एवं अपेक्षाकृत असुविधाजनक स्थानों पर स्थित हैं। संख्या भी बहुत ज्यादा है। कुछ दिन हम भी असमंजस में रहे। हमारे बोर्ड की विश्वसनीयता एवं व्यवस्था हमें परीक्षाएं कराने का आह्वान कर रही थी तो कोविड के बढ़ते खतरे तथा सीबीएसई के फैसले को लेकर हमारी चिन्ता भी बढ़नी स्वाभाविक थी। हमें हमारी निष्ठा, योजनाबद्ध तैयारी तथा टीम भावना में पूरा भरोसा था। जब भाव सही होता है तो फिर कोई अभाव नहीं रहता। आपकी पवित्रता, प्रामाणिकता, परिश्रम एवं प्रतिबद्धता सब काम सफल बना देती है, यश दिला देती है। बकाया परीक्षाएं पूर्ण हुई। कोई दिक्कत नहीं आई। किसी का सिर नहीं दुखा। रिकार्ड समय में परीक्षा परिणाम घोषित हुए। सीनियर सैकण्डरी-विज्ञान का परीक्षा परिणाम, परीक्षा समाप्त होने के 18वें दिन जारी होना सच्चे संकल्प का द्योतक है। इसी प्रकार वाणिज्य का परीक्षा परिणाम भी परीक्षा समाप्त हाने के 16वें दिन जारी हो गया। बिना साधना के सफलता नहीं मिलती। सच्ची

साधना मन में रखने वाले साधन नहीं ढूंढ़ते। वे तो कर्त्तव्य पालन में बस लगे रहते हैं। सफलता ऐसे साधकों के कदम चूमती है। हमारे बोर्ड परीक्षा परिणाम भी बहुत शानदार रहे हैं। (यह कहकर मंत्री जी ने तुलनात्मक परीक्षा परिणाम की एक तालिका सुपुर्द की जो साक्षात्कार के अन्त में दी गई है।) इस सफलता के लिए मैं माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष, सचिव, सम्पूर्ण बोर्ड परिवार एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग की मेरी टीम एज्यूकेशन के प्रति साधुवाद प्रकट करता हूँ। उत्कृष्टता की ओर उनके कदम सदैव आगे बढ़ें, कर्त्तव्य पालन करने में वे सुख दुख की परवाह न करें। मैं यही चाहता हूँ। मुझे मुंशी प्रेमचन्द का कहा याद आ रहा है उन्होनें कहा था कि कर्त्तव्य का पालन ही चित्त की शान्ति का मूल मंत्र है। इसलिए कर्त्तव्य कभी आग और पानी की परवाह नहीं करता।

शिविरा 16 : राजस्थान के विद्यार्थियों में आप कैसा टेलेंट देखते हैं? अक्सर राजस्थान को बीमारू राज्य कहा जाता है। साक्षरता दर की दृष्टि से दशकों हम देश के समस्त राज्यों में नीचे से दूसरे स्थान पर रहे। अब आप क्या महसूस करते हैं?

शिक्षामंत्री : हाँ, यह सही है कि राष्ट्रीय दशकीय जनगणना के अनुसार वर्षों तक राजस्थान प्रदेश की साक्षरता दर चिन्ताजनक रही। हमारे से नीचे केवल एक राज्य बिहार आता था। लेकिन अब स्थिति वो नहीं रही है। अब उसकी उलट स्थिति है। राष्ट्रीय स्तर पर भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय स्कूल एवं साक्षरता विभाग कतिपय पेराटीचर्स के आधार पर राज्यों में शिक्षा की स्थिति का आकलन करता है। आपको यह जानकर हर्ष होगा कि इन पेराटीचर्स के अनुसार हमारा राज्य राजस्थान देश में उपर से दूसरे स्थान पर स्टेण्ड कर रहा है। इस पर हम सबको गर्व होना स्वाभाविक है। राजस्थान में किए जा रहे नवाचारों के बारे में राष्ट्रीय बैठकों में चर्चा होती है। सराहना सुनकर मुझे बहुत प्रसन्नता होती है। इसका श्रेय मेरी टीम, **'टीम एज्यूकेशन'** को जाता है। राजस्थान में टेलेण्ट की कोई कमी नहीं है। इन दिनों राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के रिजल्टस में राजस्थान निश्चित रूप से मेरिट में स्थान पाता है। यह हम सब जानते हैं। पिछले महीने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान अजमेर की उच्च माध्यमिक परीक्षा विज्ञान संकाय में हमारे विशिष्ट प्रतिभाशाली विद्यार्थियों ने लगभग शत प्रतिशत अंक हासिल किए। पाँच सौ अंकों की परीक्षा में केवल 2 अंक कटना यानी 99.6 प्रतिशत अंक हासिल करना कोई साधारण कार्य नहीं है। मैंने छात्र श्याम सुन्दर शर्मा की अंक तालिका देखी! उसे केवल हिन्दी में 100 में से 98 अंक मिले। शेष चारों विषयों में 100 में से 100 अंक मिले। यह छात्र श्री डूँगरगढ़ (बीकानेर) स्थित भारती निकेतन स्कूल में पढ़ता था। मैं छात्र, उसके माता-पिता एवं स्कूल सभी को बधाई देता हूँ। होनहार विद्यार्थी श्याम सुन्दर शर्मा के माध्यम से प्रदेश के सभी सफल छात्र-छात्राओं को मेरा स्नेह भरा आशीर्वाद एवं उनके उन्नत भविष्य के लिए कोटि-कोटि शुभकामनाएं। सौ में से सौ अंक देने से पहले एग्जामिनर दस बार सोचता है और यह है भी सही लेकिन मेरे होनहार ऐसा करने के लिए उन्हें मजबूर कर देते हैं। प्रतिभा इसे कहते हैं। मैं सभी गुरुजनों को भी बधाई देते हुए उनसे अपील करता हूँ कि उत्कृष्टता के पथ पर वे अपनी चाल कभी धीमी न करें। उन्हीं के द्वारा तराशे विद्यार्थी ही देश/प्रदेश के भविष्य निर्माता बनेंगे।

www.rajsevak.com

शिविरा 17 : आप अपने उद्‌बोधन एवं बातचीत में प्राय: 'टीम एज्यूकेशन' 'मेरी टीम एज्यूकेशन' शब्दों का उपयोग करते हैं। इस टीम एज्जूकेशन शब्दावली का निहितार्थ क्या है ?

शिक्षामंत्री : मेरी कार्यप्रणाली विशुद्ध प्रजातांत्रिक है। सबको साथ लेकर चलना मेरा स्वभाव है। घर-परिवार से लेकर राज्य सरकार तक के कार्यों को करने में बहुत से व्यक्तियों/संस्थाओं/संगठनों से हमारा वास्ता पड़ता है और कार्य सम्पादन में सबका अपना-अपना योगदान होता है। मशीन में अनके छोटे-बड़े पुर्जे होते हैं लेकिन मशीन को चलाए रखने के लिए प्रत्येक पुर्जा आवश्यक होता है। यदि हम किसी बड़े पुर्जे से तुलना कर छोटे पुर्जे की तरफ ध्यान नहीं दें तो क्या मशीन सही ढंग से चल पाएगी। ऐसे ही विभाग रूपी बड़ी मशीन के प्रभावी संचालन के लिए पुर्जे रूपी हर कार्मिक का अहम् स्थान है। जब किसी सफलता को मैं देखता हूँ तो पर्दे के पीछे जैसे चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी से लेकर शिक्षक, संस्था प्रधान, लिपिक, विभिन्न स्तर के अधिकारी, छात्र-छात्राओं, अभिभावकों, उदारमना भामाशाहों सबकी तस्वीर मेरे जहन में प्रकट हो जाती है। मैं एक-एक का नाम लेकर मेरी प्रसन्नता उन तक प्रेषित करूं, इससे अच्छा है एक ही मूल्यवान शब्द को बोलूं और वह शब्द है **'मेरी टीम एज्यूकेशन'।** ऐसा बोलते समय मुझे हर्ष और गर्व की अनुभूति होती है। साढ़े पाँच लाख कार्मिक, लाखों विद्यार्थी एवं उनके अभिभावक आदि मिलकर टीम एज्यूकेशन हैं। यही कारण है कि बड़े से बड़े और कठिन से कठिन काम को देखकर भी मैं कभी विचलित नहीं होता। मुझे मेरी टीम की ताकत पर पूरा भरोसा है।

शिविरा 18 : शिक्षा का सार्वजनीनकरण एवं सर्वशिक्षा (Education for All) किसी भी कल्याणकारी सरकार (Wellfare State) का प्रमुख उद्देश्य होता है। 'सब पढ़ें-सब बढ़ें' के लिए सरकार क्या प्रयास कर रही है ?

शिक्षामंत्री : 'सब पढ़ें-सब बढ़ें' हमारी सरकार का मूलमंत्र है। कोई बच्चा स्कूल से वंचित न रहे, इस लक्ष्य को ध्यान में रखकर हम प्रवेशोत्सव जैसे अभियान चलाते हैं। इस अभियान के दौरान शिक्षक घर-घर जाकर शिक्षा के महत्त्व पर अभिभावकों एवं आम जनता के साथ चर्चा करते हैं। वे बच्चों को विद्यालयों में प्रवेश दिलाने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करते हैं। इस वर्ष तो कोरोना महामारी की वजह से शिक्षा व्यवस्था प्रभावित हुई है, जो स्वाभाविक है। हमारे गुरुजन जुलाई प्रारम्भ से ही प्रवेशोत्सव के अन्तर्गत नामांकन बढ़ाने के लिए प्रयासरत हैं। गत सत्र (2019-20) के आंकड़े बहुत उत्साहजनक हैं। पिछले सत्र में प्रवेशोत्सव के दो चरण हुए। पहला चरण ग्रीष्मावकाश से पूर्व अप्रैल-मई 2019 तथा दूसरा चरण जुलाई-अगस्त 2019 में चलाया गया। प्रथम चरण में 48005 एवं द्वितीय चरण में 570351 नए प्रवेश दिलाए गए। इस प्रकार 6,18,356 नए विद्यार्थी स्कूलों से जुड़े। शाला दर्पण पोर्टल पर हम इन सब सूचनाओं को दिखाते हैं। हमारा कुल नामांकन 48.49 लाख है। इतना ही नहीं, स्कूल में नामांकित प्रत्येक छात्र-छात्रा को निःशुल्क पाठ्यपुस्तकें, नाम मात्र की फीस, नियमानुसार वजीफे व प्रोत्साहन, मिड-डे-मील जैसी महत्त्वपूर्ण योजनाएं भी चलाई जा रही हैं। हमारे लिए विद्यालय में प्रविष्ट प्रत्येक बालक-बालिका अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। हम उनकी बेहतरी के लिए साधन-सुविधाओं की कमी नहीं आने देंगे।

शिविरा 19 : प्रत्येक स्कूल जाने और प्रत्येक शिक्षक से मिलने का आपका भाव बहुत सराहनीय है। पैंसठ हजार विद्यालयों और साढ़े पाँच लाख कार्मिकों का विशाल भीमकाय परिवार! सबसे मिलने के आपके उत्तम भाव की सराहना करते हुए हम आपके टेलीफोनिक संवाद के बारे मे जानना चाहेंगे।

शिक्षामंत्री : भारत एक आध्यात्मिक देश है। अनेक धर्म और धर्मावलम्बी इस महान देश में रहते हैं। धर्म निरपेक्षता हमारी विशिष्ट पहचान है। हम सेक्यूलर स्टेट हैं। यह हमारे संविधान में वर्णित है। आध्यात्म में सब अपने-अपने ढंग से पूजा अर्चना करने के लिए स्वतंत्र हैं। पूजा में एक साक्षात एवं एक मानस पूजा होती है। मेरा अपने विद्यालयों एवं शिक्षकों से दोनों प्रकार से सम्बन्ध रहता है। मेरे मन मन्दिर में हर समय शिक्षा का चिन्तन चलता रहता है। जब भी किसी स्कूल के आगे से निकलता हूँ तो मेरा मन वहाँ रुकने का करता है। ऐसे अनेक स्कूलों में मैं गया हूँ। जब टीचर मेरे से मिलने के लिए आते हैं तो मैं उनसे नवाचारों, शैक्षिक वातावरण आदि के बारे में जरूर चर्चा करता हूँ। मैंने एक ओर पहल की है, मैं टेलीफोन करके स्कूलों से उनके हाल जानता हूँ। मुझे प्रसन्नता है कि बीकानेर मंडल के द्वारा काफी समय पूर्व टेलीफोनिक सम्बलन कार्यक्रम चलाया गया, जिसकी शिक्षा ही नहीं अपितु मीडिया एवं अन्य प्लेटफार्म पर बड़ी सराहना हुई। मैं रेण्डमली किसी भी स्कूल में फोन करता हूँ और वहाँ की शैक्षिक एवं भौतिक स्थिति बाबत जानने का प्रयास करता हूँ। सामान्यत: उच्च अधिकारियों के फोन किसी काम के तगादे के रूप में आते हैं और वे कठोर भाषा का इस्तेमाल करते हैं। इसके विपरीत फोन पर कोई पूछे कि आपके क्या हाल चाल हैं, कोई समस्या तो नहीं है भाई और यदि है तो बताओ। ऐसा सुनकर ही सामने वाला गदगद् हो जाता है। इस प्रकार फोन पर सुनकर किसी समस्या का निराकरण यदि आप कर देते हैं तो आपकी महानता का ग्राफ कितना उँचा उठेगा, आप अंदाज लगा लीजिए। मेरी शिक्षा अधिकारियों से अपील है कि वे प्रतिदिन 5-7 स्कूलों में फोन करके उसका सम्बलन करें। अब आईटी. का जमाना है। साक्षात जाए बिना कहीं भी बैठकर आप निरीक्षण, सम्बलन कर सकते हैं। मैं तो ऐसा करता हूँ और ऐसा करने में मुझे सुख व सकून मिलता है।

शविरा 20 : सरकार के सबसे बड़े विभाग के मुखिया हैं आप! जितने ज्यादा व्यक्तियों से सरोकार उतनी ही ज्यादा शिकायतें, वदेनाएँ, परिवेदनाएँ। सैंकड़ों महानुभावों से रोज मिलना, सुनना और सन्तुष्ट करना। कैसा लगता है सर ?

शिक्षामंत्री : जैसा कि मैंने पहले कहा, शिक्षा विभाग का उत्तरदायित्व मिलना मैं अपना सौभाग्य समझता हूँ। छात्र-छात्राओं, शिक्षकों, कर्मचारियों, अधिकारियों, अभिभावकों, दानदाताओं, स्वैच्छिक संस्थाओं सबका मुझ पर आत्मीय हक है। यह संख्या लाखों की ईकाई से पार करोड़ों में हैं। यह जानकर मेरे में एक नई ताकत व ऊर्जा का संचार होता है। सबको अपनी बात कहने का अधिकार है। व्यवस्था में उच्च व अधीनस्थ दो स्टेज होती हैं। हर उच्च का कर्त्तव्य

www.rajsevak.com

होता है कि वह अपने अधीनस्थों की बात सुने, समझे और संवाद करे। अधिकार एवं डयूटीज को सब समझे। जितना बड़ा कुटुम्ब होगा, उतनी ही ज्यादा शिकायतें होंगी, इसे जरा पलट कर देखते हैं। जितना बड़ा कुटुम्ब होगा, उतनी ही बड़ी ताकत होगी। मैं इस ताकत को देखता हूँ। अभी कोरोना महामारी से मुकाबला करने में शिक्षण संस्थाओं एवं विभाग के शिक्षकों अधिकारियों, कर्मचारियों ने जिस मुस्तेदी से कार्य किया वह सराहनीय है। मैं इन यौद्धाओं को नमन करता हूँ। अब शिकायत की बात करते हैं, अपना हित प्रभावित होने अथवा कोई अन्याय व नियम के विपरीत काम ध्यान में आने पर शिकायत करना हर व्यक्ति का अधिकार नहीं बल्कि धर्म है। उसकी जाँच होकर आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करना अधिकारियों का काम है। मैं अक्सर बैठकों, मुलाकातों में यह बात जोर देकर कहता हूँ कि शिकायतों पर नियमानुसार त्वरित कार्यवाही की जावे। इसकी एक तय प्रक्रिया है, उसकी पालना की जावे। परिवेदनाओं के त्वरित निस्तारण हेतु राज्य सरकार द्वारा राजस्थान सम्पर्क पोर्टल बनाया गया है। इस पोर्टल पर कोई भी व्यक्ति बिना किसी कार्यालय का चक्कर लगाए, बिना किसी अधिकारी से मिले, इंटरनेट द्वारा ऑनलाइन शिकायत दर्ज करवा सकता है। इन पर त्वरित कार्यवाही होती है। इस पोर्टल पर जनवरी 2014 से मई 2020 तक माध्यमिक शिक्षा सेट अप में 79146 शिकायतें पंजीकृत हुई जिनमें से 78070 परिवेदनाओं का निस्तारण किया जा चुका है। केवल 1076 शिकायतें लम्बित हैं जो निस्तारण की प्रक्रिया में हैं। इस प्रकार लगभग 99 प्रतिशत (98.64) उपलब्धि होना क्या कम बड़ी बात है। इसी प्रकार प्रारम्भिक शिक्षा विभाग में भी कुल पंजीकृत 57914 शिकायतों के मुकाबले 57419 का निस्तारण हो चुका है। यह उपलब्धि भी 99 प्रतिशत (99.14) से ज्यादा है। इस प्रसंग में एक बात मैं अधिकारियों से कहना चाहूँगा कि वे कार्मिक विभाग द्वारा जाँच कार्य के लिए जारी दिशानिर्देशों के अनुसार कार्यवाही करें। शिकायतकर्ता से कोई शपथपत्र आदि लेना आवश्यक हो, तो उसे प्राप्त करके ही कार्यवाही प्रारम्भ की जावे। झूठी एवं मनगढ़ंत शिकायतों की जाँच मे बिना मतलब समय, श्रम एवं धन लगता है। इससे, जिनके विरुद्ध शिकायत दर्ज हुई है, उनकी कार्य क्षमता पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है। अत: झूठी, मनगढ़ंत एवं छद्मनाम से की गई शिकायतों के ऐसा सिद्ध होने के बाद सम्बन्धित शिकायतकर्ता के खिलाफ कानूनी कार्यवाही की जानी चाहिए। मेरी जाँच अधिकारियों से भी अपेक्षा है कि वे पूर्ण निष्पक्ष होकर पंच परमेश्वर भाव से जाँच कर दूध का दूध और पानी का पानी करें। वे पुर्वाग्रह बिल्कुल न रखें और वास्तविक स्थिति सम्बन्धित नियंत्रण अधिकारी के सामने लाएं।

शिविरा 21 : सीसीए रूल्स के अन्तर्गत नियम 16, 17 में शिक्षकों, शिक्षा अधिकारियों, कर्मचारियों के विरुद्ध कार्यवाही चलती है। इसकी प्रक्रिया लम्बी होने के कारण सेवानिवृत्ति के उपरान्त भी काफी समय तक कार्यवाही पूर्ण नही होती। लिहाजा कार्मिक सेवानिवृत्ति परिलाभों से वंचित रहते हैं। जो भी निर्णय होना हो, वो समय पर हो ताकि सम्बन्धित व्यक्ति मानसिक सन्ताप से मुक्त हो। यह बहुत संवेदनशील इश्यु है। इस सम्बन्ध में आपके क्या विचार हैं?

शिक्षामंत्री : सच में यह बड़ा संवेदनशील इश्यु है। समय पर जाँच पूरी नहीं होने से किसी का प्रोमोशन रूका रहे अथवा रिटायर होने के बाद पेंशन व नियमानुसार मिलने वाले आर्थिक लाभ मिलने में विलम्ब हो तो बुरा लगना स्वाभाविक है। जाँच समय पर पूरी हो। जो भी सजा बनती है, उसे दें लेकिन फाइनल फैसला करें। यह मैं चाहता हूँ। कई बार सुनने में आता है कि नाम मात्र की राशि वसूल करने के आरोप में लम्बी चौड़ी लिखा पढ़ी होती रहती है। सम्बन्धित अधिकारियों को संवेदनशीलता से काम करते हुए इनका नियमानुसार निस्तारण करना चाहिए। हालांकि पेंशन केसेज को लेकर अब स्थिति कुल मिलाकर ठीक है, फिर भी हार्ड केसजे तो रहते ही हैं। मैं निदेशालय से चाहूँगा कि वह इनको चिन्हित तथा एक अभियान चलाकर विभागीय जाँच प्रकरणों तथा बकाया पेंशन प्रकरणों का निस्तारण करें।

शिविरा 22 : शिक्षकों के स्थानान्तरण सदैव चर्चा का विषय रहे हैं। शिक्षक स्थानान्तरण/पदस्थापन की पारदर्शी नीति बनाने की आवश्यकता महसूस की जा रही है। कुल मिलाकर पदस्थापन एवं स्थानान्तरण बहुत सवेंदनशील मसले हैं। इनमें सुधार हेतु आप क्या कर रहे हैं?

शिक्षामंत्री : यह एक सहज मानवीय स्वभाव है कि व्यक्ति अधिक बेहतर एवं सुविधाजनक स्थान पर रहना चाहता है। शिक्षक ही नहीं, अन्य विभागो के कर्मचारी-अधिकारी भी अपेक्षाकृत बेहतर स्थान पर ट्रांसफर के लिए प्रयास करते हैं। चूंकि हमारा विभाग बहुत बड़ा विभाग है। लाखों-लाख शिक्षक, शिक्षा अधिकारी एवं अन्य मंत्रालयिक व सहायक कर्मचारी इसमें काम करते हैं, अत: अन्य विभागों कि तुलना में अपने बड़े आकार के अनुपात में चर्चा भी ज्यादा होना स्वाभाविक है। हमारे जन घोषणा पत्र के अनुसार एक स्पष्ट एवं पारदर्शी शिक्षक स्थानान्तरण नीति बनाने के लिए हम प्रयास कर रहे हैं। देश के कुछ राज्यों में शिक्षा स्थानान्तरण नीति बनी हुई हैं। हमने पूर्व आइएएस ओंकार सिंह की अध्यक्षता में गठित शिक्षानीति समिति से पंजाब, आन्ध्रप्रदेश, दिल्ली आदि राज्यों की शिक्षक स्थानान्तरण नीतियों का अध्ययन कर राजस्थान प्रदेश के लिए शिक्षक स्थानान्तरण नीति का मसौदा तैयार करवाया है। इस पर शासक स्तर पर विचार हो रहा है। हमारा प्रयास है कि पंजाब, आंध्रप्रेदश, दिल्ली की तरह हम भी शिक्षकों के स्थानान्तरण के लिए एक स्पष्ट एवं पारदर्शी स्थानान्तरण नीति लागू कर सकें। जहाँ तक पदोन्नति व नई नियुक्ति में चयनित शिक्षकों एवं शिक्षा अधिकारियों के पदस्थापन की बात है, हम बहुत पारदर्शी ढंग से काउंसलिंग केम्प लगाकर पदस्थापन कर रहे हैं। इस व्यवस्था में पदस्थापन हेतु उपलब्ध व्यक्तियों की चयन में उनकी मेरिट के अनुसार सूची तथा उपलब्ध रिक्त स्थान वाले विद्यालयों की सूची पारदर्शिता के साथ उपलब्ध रहती है। विकलांग, असाध्य रोगों से पीड़ित, विधवा/परित्यक्ता, महिला एवं पुरुष श्रेणियों के चयनित व्यक्तियों को प्राथमिकता से स्कूल चयन करने का अवसर देते हैं। वे सोच विचार कर, अपने परिवारजन एवं मित्रगण से सलाह मशवरा कर स्कूल चुनते हैं और काउंसलिंग समाप्त होते ही पदस्थापन आदेश जारी कर दिए

www.rajsevak.com

जाते हैं। शिक्षा विभाग की इस पहल की भारत सरकार स्तर पर सराहना हुई है। प्रदेश के कई विभागों ने इसे अपनाया है। हायर एज्यूकेशन में चयनित सहायक आचार्य का पदस्थापन इसी तर्ज पर किया गया। इससे हमें बहुत राहत मिली है। अपनी इच्छा से मांगकर स्कूल लिया हुआ होने के कारण वे तुरन्त ज्वाइन कर लेते हैं। पदोन्नति पदस्थापन पर यात्रा भत्ता व योगकाल नहीं देना पड़ता। इससे राजकोष में करोड़ों रुपयों की बचत हुई है। पदस्थापन आदेश जारी होने के पश्चात कहीं असन्तोष के स्वर सुनाई नहीं देते। कुल मिलाकर हमारा यही प्रयास रहता है कि गुरुजन को अधिक से अधिक राहत मिले।

शिविरा 23 : विद्यालय समाज के दर्पण कहलाते हैं। एक शिक्षित व दीक्षित समाज की रचना विद्यालय ही कर सकते हैं। कुल मिलाकर दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। समाज किस प्रकार शिक्षण संस्थाओं की सहायता करता है तथा आपकी समाज से क्या अपेक्षाएं हैं?

शिक्षामंत्री : शिक्षा का उद्देश्य एक सदाचारी, स्वस्थ, सुसंस्कृत एवं सुखी समाज का निर्माण करना है। यह काम विद्यालय एवं शिक्षक करते हैं। मुझे प्रसन्नता है कि समाज विद्यालयों की खुशहाली के लिए सहायता करने में सदैव आगे रहता है। सरकार एवं समाज मिलकर स्कूलों में संसाधन जुटाने, नामांकन बढ़ाने, ठहराव सुनिश्चित करने का काम करते हैं। शाला प्रबन्ध समितियों के माध्यम से विद्यालय में शिक्षण एवं भौतिक सुधार के लिए कार्य किए जाते हैं। हम प्रतिमाह अमावस्या के दिन पी.टी.एम. (अभिभावक-अध्यापक बैठक) का आयोजन करते हैं जिसमें बच्चों के अभिभावक एवं गुरुजन बैठकर बच्चों की शिक्षा के स्तर एवं उसमें सुधार के लिए विचार करते हैं। स्कूलों में भौतिक विकास हेतु भी योजनाएं बनाते हैं। विद्यालय के भामाशाह योजना के अन्तर्गत भी करोड़ों रुपये का सहयोग उदारमना दानदाताओं के सौजन्य से प्राप्त होता है। कुल मिलाकर समाज के सहयोग के बिना विद्यालयों का प्रभावी संचालन एवं वांछित परिणाम हासिल हो पाना संभव नहीं है और इसमें समाज सदैव आगे रहता है।

शिविरा 24 : आपने विद्यालय के भामाशाह योजना का जिक्र किया। यह योजना क्या है तथा किस प्रकार शैक्षिक उन्नयन में यह मददगार रही है? कृपया इस पर प्रकाश डालें।

शिक्षामंत्री : दानवीर भामाशाह एवं महाराणा प्रताप का वृतान्त तो हम और आप सब जानते हैं। वीर शिरोमणी महाराणा प्रताप की सेवा में मेवाड़ के धनाढ्य सेठ भामाशाह ने अपना सारा खजाना न्यौछावर कर दिया था। यह उदाहरण राजस्थान के उज्जवल इतिहास का स्वर्णिम अध्याय है। कालान्तर में वे उदारदिल दानवीर सेठ भामाशाह एक प्रतीक बन गए। समाज, देश, प्रदेश एवं मानवता के हित में अपनी गाढ़ी कमाई में से दान देने वाले व्यक्ति को भामाशाह सम्बोधित कर उसका मान किया जाता है। राजस्थान शिक्षा विभाग में ऐसे अनेक भामाशाह हुए हैं जिन्होनें विद्यालय भवन एवं खेल मैदान हेतु भूमि दान में दी है। भव्य विशाल भवन बनाकर दिए है। कमरों का निर्माण करवाया है। मूल्यवान संसाधन उपलब्ध करवाए हैं। कहाँ तक गिनाएं। ऐसे सहयोग की बहुत लम्बी सूची है। विभाग इन भामाशाहों के प्रति सदैव कृतज्ञ है। प्रतिवर्ष 28 जून, भामाशाह जयन्ती के दिन इन दानदाताओं के सम्मान में राज्यस्तरीय सम्मान समारोह रखकर, उन्हें सम्मानित किया जाता है। यह बहुत भव्य समारोह होता है। सामान्यत: माननीय मुख्यमंत्री जी इस समारोह में उपस्थित रहकर भामाशाहों के प्रति संपूर्ण प्रदेश की ओर से आभार प्रकट करते हैं तथा उन्हें सम्मानित करते हैं।

शिविरा 25 : भामाशाह सम्मान समारोह में किन दानदाताओं को सम्मानित करने के लिए चुना जाता है तथा अब तक कितनी सहयोग राशि प्राप्त कर उसके पेटे कितने दानदाताओं को भामाशाह सम्मान से नवाजा गया है?

शिक्षामंत्री : मैं यहाँ यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि हमारे लिए प्रत्येक दानदाता महत्त्वपूर्ण है, आदरणीय है। विद्यालय लेवल से लेकर जिला लेवल पर भी समय-समय पर भामाशाहों को सम्मानित किया जाता है। राज्यस्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह में वर्तमान में उन दानदाताओं को सम्मानित किया जाता है जिनकी सहयोग राशि 15 लाख रुपये अथवा उससे ज्यादा है। इसकी एक निर्धारित प्रक्रिया है जिसके तहत संस्था प्रधान, जिला शिक्षा अधिकारी के माध्यम से सम्मान हेतु प्रस्ताव भिजवाते हैं। राज्यस्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह की शुरुआत 1995 में हुई थी। इसके पश्चात यह समारोह लगातार प्रति वर्ष 28 जून, भामाशाह जयन्ती के दिन राजधानी जयपुर में आयोजित होता रहा है। भामाशाह सम्मान समारोह के रजत जयन्ती वर्ष 2019 में पच्चीसवाँ समारोह आयोजित किया गया। इन 25 वर्षों में 1651 दानदाताओं को भामाशाह सम्मान समारोह से सम्मानित किया गया। उनके द्वारा किए गए सहयोग का मूल्य 48522.93 लाख रुपये है। भामाशाहों को प्रेरित कर दान करने के लिए तैयार करने वाले व्यक्ति का भी बहुत महत्त्व है। दरअसल वे नींव की ईंट के समान होते हैं। वर्तमान में 30 लाख रुपये अथवा उससे अधिक राशि का सहयोग करवाने वाले व्यक्ति को प्रेरक के रूप में सम्मानित किया जाता है। अब तक 378 व्यक्तियों को प्रेरक के रूप में सम्मानित किया जा चुका है। इस वर्ष कोविड-19 महामारी के चलते यह समारोह औपचारिक रूप से आयोजित नहीं किया जा सका। भामाशाह जयन्ती, 28 जून 2020 के दिन मैंने अपने आवास से वीडीओ कान्फ्रेन्सिंग के माध्यम से 59 दानदाताओं से बात करके राज्य सरकार की ओर से उनके सहयोग की सराहना करते हुए उनका आभार प्रकट किया। उनके द्वारा दिए गए सुझावों के अनुसार कार्यवाही करने का हम प्रयास कर रहे हैं। बातचीत में इन भामाशाहों ने भविष्य में भी उदारतापूर्ण सहयोग देने का भरोसा दिलाया है। मैं शिविरा पत्रिका के माध्यम से पुन: इन भामाशाहों के प्रति संपूर्ण राजस्थान प्रदेश और शिक्षा विभाग की ओर से शुक्रिया करता अदा करता हूँ।

शिविरा 26 : पिछले सत्र में आपकी पहल पर विद्यालयों में वार्षिक उत्सव आयोजित हुए। आप और हम, जब विद्यार्थी थे, तब वार्षिक उत्सवों का आयोजन किया जाता था। अब भी कुछ उत्साही संस्थाप्रधान ऐसा कर रहे थे, लेकिन सामान्यत: उदासीनता थी। एक भूली हुई परम्परा को

www.rajsevak.com

आपने पुर्नजीवित किया। इसके पीछे कौनसी प्रेरणा काम कर रही थी ?

शिक्षामंत्री : मै जब विद्यार्थी था, तब प्रतिदिन होने वाली प्रार्थना सभा तथा शनिवार को आयोजित होने वाली बाल सभा तब बहुत आकर्षक होती थी। प्रार्थना सभा में राष्ट्रीय एकता का गीत **'हिन्द देश के निवासी, सभी जन एक है'** हम सब विद्यार्थी मिलकर गाते थे तो मन डोलने लगता था। शनिवारीय कार्यक्रमों की बेस्ट परफोरमेंस का चयन कर उन्हें वार्षिक उत्सव में शामिल किया जाता था। मैं राजस्थान के शेखावाटी प्रदेश से हूँ। सेठ, साहुकारों एवं दानदाताओं की पावन भूमि है शेखावाटी! वार्षिक उत्सव, पन्द्रह अगस्त, छब्बीस जनवरी के समारोह में इन उदारमना सेठ साहुकारों द्वारा हम विद्यार्थीयों को मिठाई, पुरस्कार दिए जाते थे। वहीं पर स्कूलों में लाखों रुपयों के निर्माण कार्यो की घोषणा होती थी। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में छात्र-छात्राएं शानदार प्रस्तुतियाँ देते थे। मुझे ये सब बातें याद आती थी। इसलिए मैंने राज्यस्तर पर निर्णय लेकर सभी स्कूलों में अनिवार्य रूप से वार्षिक उत्सवों का आयोजन करवाया। मैं स्वयं कई स्कूलों में गया। बहुत अच्छे रिजल्टस इन उत्सवों के आए। सत्रह हजार से भी अधिक स्कूलों में वार्षिक उत्सव आयोजित किए गए।

शिविरा 27 : पुरातन छात्रों के सम्मेलन (एल्यूमीनी मीट) भी वार्षिक उत्सवों के समान्तर विद्यालयों में आयोजित किए गए। विद्यालय के पूर्व छात्रों का किस रूप में सहयोग विद्यालय को मिल सकता है? इस वर्ष के पुरातन छात्र सम्मेलनों की सफलता के बारे में आप क्या कहेगें ?

शिक्षामंत्री : गुरुजनों एवं विद्यालयों को लेकर मेरे मन में बहुत सम्मान है। प्राइमरी लेवल तक पढ़ते हुए जिन आदरणीय गुरुजनों का आशीर्वाद मुझे मिला, जब उन्हें याद करता हूँ अथवा कहीं उनसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त होता है, मेरा सिर श्रद्धा से झुक जाता है। विद्यालय केवल चूने पत्थर से बने भवन ही नहीं होते बल्कि उनकी जड़ों में उत्तम संस्कारों के बीज होते हैं। इसलिए कोई व्यक्ति भले ही कितना ही बड़ा हो जाए अथवा कितना ही दूर, सात समंदर पार विदेश में ही चला जाए, अपने विद्यालय और गुरुजनों को भूल नहीं सकता। शेखावाटी क्षेत्र में मेरे अनेक मित्र हैं जो ऐसे उत्तम विचार रखते हैं। मैंने महसूस किया कि आह्वान करने पर वे लाखों रुपये स्कूलों के लिए लगा सकते हैं। इन्हीं भावनाओं को मध्यनजर रखते हुए पूर्व छात्रों के सम्मेलन करवाए गए। बहुत दूर-दूर से चल कर पूर्व विद्यार्थी अपने विद्यालयों में आए जो आज दिन महानगरों में बहुत बड़े उद्योगपति, कारोबारी हैं। स्कूल में घूम-घूम कर उन्होनें अपने बचपन, अपने छात्र जीवन को याद किया। उस समय उनके चेहरों को देखने का आनन्द निराला था। एक दूसरे से हँसी-ठिठोली कर रहे थे। मुझे कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता याद आ रही है-

चिन्ता रहित खेलना खाना
और फिरना निर्भय स्वछंद,
कैसे भूला जा सकता है
बचपन का अतुलित आनंद ।

खेर, ज्यादा क्या कहूँ। बहुत अच्छा रहा। मेरा विभागीय अधिकारियों, संस्थाप्रधानों एवं शिक्षकों से अपील है कि वे ऐसे आयोजनों को अपनी वार्षिक योजना में शामिल करें तथा उचित समय इनका आयोजन अवश्य करें। किसी राजकीय आदेश का इंतजार न करें। अपना धर्म समझ कर यह सब करें।

गत सत्र में 15847 विद्यालयों में पूर्व विद्यार्थी सम्मेलन आयोजित किए गए। वार्षिक उत्सवों एवं पूर्व विद्यार्थी सम्मेलनों से नकद एवं अन्य सामग्री के रूप में शानदार सहयोग विद्यालयों को मिला। मुझे यह बताते हुए गर्व होता है कि सहयोग स्वरूप प्राप्त कुल राशि सौ करोड़ रुपयों से भी अधिक है। (वास्तविक राशि रु. 1004887214/-) इसके अलावा विद्यालयों के प्रति श्रद्धा, सम्मान एवं विश्वास की भी वृद्धि हुई।

हिन्द देश के निवासी सभी जन एक हैं
रंग-रूप, वेश-भाषा चाहे अनेक हैं।
बेला, गुलाब, जूही, चम्पा, चमेली
प्यारे-प्यारे फूल गुंथे माला में एक हैं।
कोयल की कूक प्यारी, पपीहे की टेर प्यारी
गा रही तराना बुलबुल, राग मगर एक हैं।
गंगा, जमुना, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, कावेरी
जाके मिल गई सागर में हुई सब एक हैं।
हिन्द देश के निवासी सभी जन एक हैं
रंग-रूप, वेश-भाषा चाहे अनेक हैं।

शिविरा 28 : महात्मा गाँधी की 150वीं जयन्ती वर्ष के अवसर पर बापू के जीवन-कर्म से प्रेरणा लेने की जरूरत है। विभिन्न कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं। गाँवों में महात्मा गाँधी पुस्तकालय-वाचनालय फिर से खोलने की घोषणा हुई है। इस सम्बन्ध में क्या कार्यवाही की जा रही है ?

शिक्षामंत्री : इस साक्षात्कार के माध्यम से मैं शिक्षकों व विद्यालयों को यह बताना चाहता हूँ कि महात्मा गाँधी के 150वीं जयन्ती वर्ष के आयोजनों के लिए गठित राज्यस्तरीय समिति की 4 जुलाई को माननीय मुख्यमंत्री जी की अध्यक्षता में सम्पन्न बैठक में इस सम्बन्ध में आयोजित हो रहे कार्यक्रमों को एक वर्ष और बढ़ाकर 2 अक्टूबर 2021 गाँधी जयन्ती तक जारी रखने का निर्णय लिया है। साथ ही, ग्राम स्तर पर साक्षरता मिशन के तहत शुरू किए गए महात्मा गाँधी पुस्तकालयों-वाचनालयों को फिर से खोलने एवं इनमें गाँधीजी से जुड़ा साहित्य उपलब्ध कराने का निर्णय लिया गया है। जब तक साक्षरता मिशन की ओर से कोई कार्यक्रम स्वीकृत होकर राज्य को नहीं प्राप्त हो जाता, तब तक राज्य सरकार की ओर से इन पुस्तकालयों का संचालन किया जाएगा। इसकी कार्ययोजना एवं प्रस्ताव साक्षरता विभाग द्वारा तैयार किए जाएंगे। हम चाहते हैं कि महात्मा गाँधी जी के नाम से शुरू किए गए ये पुस्तकालय-वाचनालय गाँवों में लोक चेतना एवं सूचना केन्द्र के रूप में विकसित हों। स्कूलों में गाँधीवादी विचारों की विशेष कक्षाएं लगाई जाएंगी। इसके अलावा भारत इंटीग्रेटेड मिशन के अन्तर्गत बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर के जीवन एवं योगदान से शिक्षा ग्रहण करने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित किया जाएगा। ईश्वर जल्दी से जल्दी कोरोना महामारी के संकट से मुक्ति प्रदान करें ताकि हमारे प्रस्तावित कार्यक्रमों को आयोजित किया जा सके।

शिविरा 29 : हमारा प्रदेश राजस्थान भौगोलिक दृष्टि से देश का सबसे बड़ा राज्य

www.rajsevak.com

है। शिक्षा व्यवस्था में राजकीय विद्यालयों के समान्तर गैर सरकारी प्राइवेट विद्यालय भी बड़ी संख्या में सचांलित हैं। इन गैर सरकारी प्राइवेट विद्यालयों के बारे में आप क्या सोचते हैं?

शिक्षामंत्री : प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था में गैर सरकारी प्राइवेट विद्यालयों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। मैं इन प्राइवेट विद्यालयों को सरकारी व्यवस्था के साथ एक तरह से एज्यूकेशन पार्टनर मानता हूँ। प्रदेश के शैक्षिक उन्नयन में इनके योगदान को कमतर नहीं आंका जा सकता। शिक्षा का काम इतना बड़ा और व्यापक है कि अभी भी हजारों विद्यालय और हो सकते हैं। प्राइवेट विद्यालयों से मेरी अपील है कि वे उनके लिए बने नियमों, क्रमोन्नति एवं मान्यता की शर्तों आदि का पालन करते हुए काम करें। उनके यहाँ काम करने वाले शिक्षकों ने अपना जीवन वहाँ खपाया होता है। दरअसल उन्हीं की मेहनत एवं समर्पण के कारण उनका नाम होता है। अत: उनके योगक्षेत्र के लिए विद्यालय प्रबन्ध को काम करना चाहिए। इसी प्रकार छात्र-छात्राओं एवं अभिभावकों के प्रति भी संवेदनशील एवं उदार रहना चाहिए। इन दिनों नए-नए नियम, छात्र हितेशी योजनाएं सामने आती रहती हैं। प्राइवेट स्कूलों को स्वयं को अप-टू-डेट रखते हुए छात्र-छात्राओं को उनके लिए प्रचलित योजनाओं के अन्तर्गत समुचित लाभ समय पर दिलाएं। अभी कोरोना महामारी के कारण उनके लिए जारी हुए तथा भविष्य में जारी होने वाले निर्देशों का पालन करें। मैं पुन: दोहराना चाहता हूँ कि प्राइवेट विद्यालय, शिक्षा व्यवस्था के अंग हैं। हम उनकी भूमिका को स्वीकार कर उनकी सराहना करते हैं। मेरी शिक्षा अधिकारियों से भी अपील है कि प्राइवेट स्कूलों के लिए भी फ्रेंड, फिलोसोफर, गाइड बनकर व्यवहार करें। उनकी त्रुटि और लापरवाही के लिए उन्हें टोके तो उनकी विशेषताओं की प्रशंसा करने में भी कंजूसी न करें। वे निर्धारित प्रक्रिया अपनाते हुए, आवश्यक शर्तों को पूरा कर स्थापित हुए हैं, अपनी मर्जी से नहीं। अत: उनकी समुचित देखभाल करना उनका धर्म है। सार बात यह है कि सरकारी एवं प्राइवेट विद्यालय एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। उन्हें मिलकर प्रदेश को शिक्षित व संस्कारित बनाने का पावन कार्य करना है।

शिविरा 30 : विभाग से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर आपके विचार एवं जानकारी प्राप्त कर शिविरा के लाखों पाठक निश्चय ही प्रेरित और प्रोत्साहित होगें। अनन्त गहराईयाँ लिए है यह मातृ विभाग जिसे आपने समय दिया और खुलकर अपने विचार प्रकट किए। आभारी हैं हम! शिक्षा विभाग के अधिकारियों, कार्मिकों, विद्यार्थियों, अभिभावकों को आप क्या सदेंश देना चाहेंगे?

शिक्षामंत्री : साक्षात्कार के प्रारम्भ में मैंने कहा था कि शिक्षा का कार्य समाज के उत्थान का कार्य है। ऐसे महान कार्य से सम्बन्धित होने पर हमें गर्व करना चाहिए। शिक्षा का दारोमदार शिक्षकों पर है। वे सामान्य व्यक्ति नहीं हैं, वे ज्ञान के दूत हैं। ज्ञान से बड़ा कुछ नहीं है। गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है-**न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।** मुझे प्रसन्नता है कि शिविरा पत्रिका ने योगेश्वर कृष्ण के इस कथन को अपना मोटो बना रखा है और पत्रिका के प्रत्येक अंक में प्रथम पृष्ट पर इसे प्रकाशित किया जाता है। मैं शिक्षक भाई बहनों से बड़े भाई के रूप में निवेदन करना चाहूंगा कि वे स्वयं के शिक्षक होने पर गर्व करें। ज्ञान ग्रहण करने तथा ज्ञान बांटने का पवित्र काम उन्हें मिला है। वे अपना सर्वश्रेष्ठ अपने विद्यार्थी बालक-बालिकाओं के हित में समर्पित कर दें। माता-पिता की तरह गुरुजन ही अपने विद्यार्थियों का सुखी व उज्ज्वल भविष्य चाहते हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की 150वीं जयन्ती हम मना रहे हैं। उन्होनें कहा था कि जैसे सूरज सबको एक-सा प्रकाश देता है, बादल जैसे सबके लिए समान बरसते हैं, उसी प्रकार विद्यावृष्टि सब पर बराबर होनी चाहिए। बापू का यह कथन मैं गुरुजन को समर्पित कर रहा हूँ।

शिक्षाधिकारियों, संस्था प्रधानों, मंत्रालयिक कर्मचारी लिपिकों एवं सहायक कर्मचारियों का सम्पूर्ण व्यवस्था में बहुत अहम् स्थान है। वे सुनियोजित योजना बनाकर, प्रभावी निरीक्षण व सम्बलन कर तथा लिपिक व सहायक कर्मचारी आवश्यक सुविधाएं यथा समय उपलब्ध करवाकर शिक्षण-अधिगम की यात्रा को सुगम बना सकते हैं। छात्र-छात्राओं के माता-पिता एवं संरक्षक शिक्षकों व छात्र-छात्राओं के मध्य सेतु बनकर राष्ट्र निर्माण का कार्य करें। मैं शिक्षा से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति के प्रति उनके योगदान के लिए आदर एवं आभार प्रकट करता हूँ। शिक्षा से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण बिन्दु बनाकर मेरे से लम्बी चर्चा करने तथा मेरे विचारों को लिपिबद्ध कर इतने बढ़िया ढंग से प्रकाशन हेतु तैयार करने के लिए मैं आपके प्रति आभार प्रकट करता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम सब मिलकर हमारे प्यारे राजस्थान को विकसित-शिक्षित, स्वस्थ एवं सम्पन्न राज्य बनाने की दिशा में कोई कसर नहीं रखेंगे। पुन: धन्यवाद-जयहिन्द। (समाप्त)

साक्षात्कारकर्ता : **ओम प्रकाश सारस्वत**
पूर्व संयुक्त निदेशक, ए-विनायक लोक,
बाबा रामदेव मंदिर रोड, गंगाशहर (बीकानेर)
मो. 09414060038

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राज. अजमेर : उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2020 परीक्षा परिणाम-एक नज़र में

क्र. सं.	उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2020	परीक्षा समाप्ति तिथि	परीक्षा परिणाम		परीक्षा परिणाम प्रतिशत 2020	परीक्षा परिणाम प्रतिशत 2019	वृद्धि/कमी (+)	विशेष विवरण
			घोषित होने की तिथि	दिन लगे				
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1.	विज्ञान संकाय	20 जून 2020	8 जुलाई 2020	18	91.96	94.54	-2.58%	
2.	वाणिज्य संकाय	27 जून 2020	13 जुलाई 2020	16	94.49	92.06	+2.43%	
3.	कला संकाय	30 जून 2020	21 जुलाई 2020	21	90.70	88.66	2.04%	

www.rajsevak.com

150 वी गाँधी जयन्ती विशेष

बापू के आदर्श आज भी प्रासंगिक हैं

❒ बजरंग प्रसाद मजेजी

''आने वाली पीढ़ियाँ इस बात पर शायद ही विश्वास करेगी कि हाड़-माँस का ऐसा कोई पुतला धरती पर रहा था, जिसने बगैर हथियार उठाए अपने देश को आजाद कराया और संसार को सत्य और अहिंसा का पाठ पढ़ाया।''-आइंस्टीन

बापू का व्यक्तित्व एवं भारतीयों से अपेक्षा : महात्मा गाँधी यानी आधे तन पर कपड़ा धारण करने वाला एक संत जैसा मनुष्य जो सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, चरखा, स्वभाषा और स्वदेशी की बात करता है। वे स्व के आधार पर भारत की पुनर्रचना का स्वप्न देखने वाले समता, सामाजिक और सम्पूर्ण समरसता के पक्षधर थे। वे अपनी कथनी का स्वयं के आचरण से उदाहरण देने वाले सभी के लिए आदर्श पुरुष थे। वे कहते थे-'सबको देखना-समझना और अपने आचरण में उतारना चाहिए। उनका स्वप्न समावेशी, स्वावलंबी भारत का था, जिसके लिए स्वराज और स्वदेशी मूलमंत्र था। गाँधीजी का मानना था कि एक सीमा तक भौतिक सुविधाएँ और सुख आवश्यक हैं। परन्तु, एक स्तर के बाद वह सहायक होने की जगह बाधक हो जाता है। इसलिए अंतहीन जरूरतों को पैदा करना और उन्हें पूरा करना एक भ्रम है। स्वावलंबन का उनका सर्वोत्तम उदाहरण आश्रम व्यवस्था का था। उनका मानना था कि आश्रम जीवन में स्वयं शौचालय सफाई, शुद्ध शाकाहारी भोजन बनाने-खाने, सामूहिक रूप से प्रार्थना करना, समाधान ढूँढ़ना, राष्ट्र की समस्याओं पर विचार करना, कर्म पथ पर निरन्तर गतिमान रहकर लक्ष्य प्राप्ति तक न रूकने का धीरज संवरण कर, ऊर्जस्वित जीवन को स्वराष्ट्र के लिए भस्मीभूत करने की भारतीय सनातनता है। आश्रम की कल्पना और उसको व्यवहारिक रूप देना, उनकी शिक्षा व्यवस्था का हिस्सा था। उनका 'कोचरब आश्रम' तेजोमय व्यक्तित्व की बुनियाद पक्की करने के लिए शुरू हुआ था। ग्राम्य जीवन को वे सुखद और शांति के लिए अच्छा मानते थे। उनका कहना था कि भारत की आत्मा गाँव में रहती है। शहरों के विस्तार से गाँव उजड़ रहे हैं। यदि गाँव कमजोर होंगे तो देश कभी मजबूत नहीं बन सकता। वे आदर्श गाँव बनाना चाहते थे। ये ही नए भारत का निर्माण करेंगे बशर्ते संसाधनों की पूर्ति हो, गाँव जनतांत्रिक तरीके से संचालित हों। वे आर्थिक संसाधनों के लिए बाहरी संस्था पर आश्रित न हों, उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं ग्रामवासी करें तथा बचत का हिस्सा आपस में बंटवारा करें। तब गरीब-अमीर के बीच कोई झगड़ा नहीं होगा। गाँव का विकास, भारतीय आत्म स्वाभिमान, विखंडित और विस्मृत भारतीय मूल्यों की पुनर्स्थापना से ही होगा जिससे भारत विकसित राष्ट्र बनेगा।

गाँधीजी के सिद्धांत-

स्वच्छता के समर्थक : वे आश्रम व सभाओं में बार-बार स्वच्छता की बातें करते थे। वे रेलगाड़ी से लेकर मंदिर, गलियों व सड़कों पर बिखरी गंदगी से बहुत दुखी थे। वे कहते थे कि हमारी गरीबी की वजह अस्वच्छता है। सभी लोग स्वयं साफ-सफाई करें तो देश के लाखों रुपये बचाए जा सकते हैं और बीमारियों से मुक्त हो सकते हैं।

पर्यावरण के समर्थक : हमें अपनी जरूरतों को सीमित रखना होगा। इस हेतु 3 बातें याद रखें (1) अपनी आवश्यकताओं को कम करके साधारण जीवन (2) धीमी गति और छोटे कदम (3) जीवन विलासितापूर्ण न हो। प्रकृति का दोहन न कर सम्पत्ति अर्जित करने की बैचेनी न हो।

कौशल विकास शिक्षा : भारतीयों में कौशल और संस्कार की परम्परा रही है। खादी तथा कताई बुनाई का कार्य कौशल को विकसित करने के लिए ही था। भारत में कृषि कार्य प्रमुख था। हाथ से काम करने को प्राथमिकता देते थे। चरखा कातकर, लघु एवं कुटीर उद्योगों को विकसित कर कम पूंजी से जीवन निर्वाह कर सकते हैं। बढ़ई, लुहार, कुम्हार अपनी कला को अगली पीढ़ी तक देते थे।

सत्य के पुजारी : नीतिवान होना खराब नहीं है। लेकिन विशेष जाति वाला दूसरे को निम्न स्तर का समझे, इससे जघन्य अधर्म दूसरा हो ही नहीं सकता। शुभ विचार जहाँ से मिले वहाँ से लो। इस्लाम से, सनातन धर्म से, ईसाई से, जैन-बौद्ध धर्म से लें। उनका सत्य विचार ही मेरा धर्म है। सत्य को प्राप्त करने का मेरा मार्ग अहिंसा है। वे कहते हैं-'सत्यं ब्रूयात प्रियं ब्रूयात।'

मानवता के पक्षधर: वे कहते हैं कि मानवता सागर की तरह है। अगर सागर की कुछ बूंदें गंदी हैं तो सागर गंदा नहीं हो जाता। खुद को जानने का सबसे अच्छा तरीका है कि आप खुद को दूसरों की सेवा में भुला दो। सच्चा मानव वह है जो दूसरों के दर्द को महसूस करे। दूसरों की तकलीफों को दूर करे और इसका उसे कभी अहंकार न हो। गाँधीजी सुनागरिक होने के लिए 10 बातों पर ध्यान रख कर चलने को कहते हैं- (1) विनम्रता से आप दुनियाँ को हिला सकते हैं। (2) खुशी इस बात पर निर्भर है कि आप क्या सोचते हैं, क्या कहते हैं, क्या करते हैं। (3) किसी काम से किसी को खुशी देने वाला प्रार्थना सभा में हजारों लोगों से अच्छा है। (4) भगवान हमारे काम की गुणवत्ता को महत्त्व देता है न कि मात्रा को। (5) गुलाब को उपदेश देने की आवश्यकता नहीं होती, वह तो केवल अपनी खुशबू बिखेरता है, उसकी खुशबू ही उसका संदेश है। (6) गरीबों की उपेक्षा कर बलशाली द्वारा उनकी धन सम्पत्ति छीनना न्याय नहीं कहा जा सकता है। (7) लोगों में अच्छा देखो और उनकी मदद करो। (8) स्वयं को खोजने का सबसे अच्छा तरीका है कि आप दूसरों की सेवा में खुद को खो दो। (9) हो सकता है आप कभी ना जान सकोगे कि आपके काम का क्या परिणाम हुआ, लेकिन आप कुछ करेंगे ही नहीं तो कोई परिणाम प्राप्त नहीं होगा। (10) मानवीय रिश्ते चार सिद्धांतों पर आधारित

www.rajsevak.com

होते हैं-सम्मान, समझ, स्वीकृति और प्रशंसा इनका आत्मसम्मान करना चाहिए।

विधवा विवाह के समर्थक : गाँधीजी ने अविवाहित युवाओं को कहा कि आप विधवाओं से विवाह कीजिए। विशेषरूप से बाल विधवा से विवाह हेतु प्रेरित किया। उन्होंने कहा जैसे बाल विवाह नहीं रहे वैसे ही बाल वैध्वय जी नहीं रहना चाहिए।

आत्मिक शिक्षा के पक्षधर : शरीर और मन को शिक्षित करने की तुलना में आत्मा को शिक्षित करना और आत्मा के विकास के लिए आवश्यक कार्यों को करना अधिक जरूरी मानते थे। इस हेतु आचरण का ध्यान रखना, बोलना एवं संयमी बनकर रहना चाहिए।

मातृभाषा के समर्थक : 'मैंने शुरू से ही यह माना है कि जो हिन्दुस्तानी माता-पिता अपने बच्चों को बचपन से ही अंग्रेजी पढ़ाने-बोलने वाले बना देते हैं, वे उनके और देश के साथ द्रोह करते हैं। वे कहते थे मातृभाषा का अनादर माँ के अनादर के बराबर है। जब तक वैज्ञानिक विषय मातृभाषा में नहीं समझाए जाते तब तक राष्ट्र को नया ज्ञान नहीं मिल सकेगा।' भारतीय भाषा के रूप में विशेष रूप से संस्कृत और हिन्दी की समृद्धि के लिए जोरदार वकालत की।

भारत को अंग्रेजों की दासता से स्वतंत्र कराने में अहिंसा के सिद्धांत पर चलकर, स्वतंत्रता आंदोलन को चलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका के लिए महात्मा गाँधी को याद किया जाता है। गाँधीजी के कुशल नेतृत्व और नीति से भारत आजाद हुआ। इस कारण भारतवासी सदैव इनके कृतज्ञ रहेंगे। आज भले ही बापू हमारे मध्य में नहीं हैं परन्तु उनके सिद्धांत एवं उनकी आत्मा सम्पूर्ण भारत में बसी हुई है। उनके मार्गदर्शन, सबको एक रखने की कला समयानुकूल निर्णय लेने की क्षमता उनके आदर्श, सिद्धांत को देशवासी, राजनीति के कार्यकर्त्ता स्मरण कर उनके आदर्शों पर चलने का आह्वान करते हैं। भारत ही नहीं विदेशों में भी उनका यशगान किया जाता है। यही कारण है कि विदेशों में 43 सड़कों तथा भारत में 53 सड़कों का नामकरण गाँधीजी के नाम से है। बापू का नाम अमर है।

प्रधानाध्यापक (सेवानिवृत्त)
सांपला (अजमेर)
मो. 9460894708

इच्छा-शक्ति

लक्ष्य को सदा अपनी निगाहों में रखो

❒ **हीराराम चौधरी**

जीवन में सफल होना है तो अपने जीवन का एक लक्ष्य बनाओ, मन में दृढ़ प्रतिज्ञ हो और उस लक्ष्य के प्रति अटूट श्रद्धावान हो। फिर देखो जीत आपकी ही होगी। कहते हैं कि जहाँ चाह वहाँ राह। जीवन में चाह ही महत्त्वपूर्ण है। चाह से ही नई राह निकलती है। आपने मन से ठान लिया है तो फिर कोई भी मंजिल कठिन नहीं होगी। हर सपने को साकार होने में देर नहीं लगती है। इस संदर्भ में भारत के महान स्वतंत्रता सेनानी और अमर शहीद भगत सिंह के बाल्य जीवनकाल का दृष्टान्त यहाँ उल्लेखित कर रहा हूँ। भगतसिंह सदा भारत की चिंता में खोए रहते और आजादी का सपना देखा करते थे। एक बार की बात है कि भगतसिंह अपने विचारों में खोए हुए थे कि उनकी कक्षा में निरीक्षक आ गए। सब लड़कों ने खड़े होकर उनका अभिवादन किया परन्तु भगतसिंह के ध्यान में नहीं था। वे नहीं उठे। ज्यों के त्यों बैठे रहे। निरीक्षक महोदय ने उनसे पूछा, तुम्हारा नाम। भगत सिंह ने कहा-'आजादी।' तुम क्या सोच रहे हो? भगतसिंह ने कहा कि- 'आजादी के बारे में'।

निरीक्षक महोदय ने कहा कि जिस आजादी के बारे में तुम सोच रहे हो, वह इतनी आसान नहीं जितना तुम समझते हो। भगत सिंह ने पलटकर जवाब दिया कि महोदय जी, कोई काम आसान होता नहीं है, आसान बनाया जाता है। मैं एक दिन भारत माँ को आजाद करवा कर ही रहूँगा। उन जैसे महान राष्ट्रभक्त सपूतों के अप्रतिम योगदान से ही अपना राष्ट्र आजाद हुआ है। अमर शहीद भगतसिंह के इस प्रसंग से हमें सीख लेनी चाहिए कि कोई काम आसान होता नहीं है, आसान बनाना पड़ता है। जब हम दृढ़ इरादों से अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए प्रयास करते हैं तो हमें सफलता जरूर मिलती है।

जीवन संघर्ष का ही दूसरा नाम है। जीवन में कितनी ही विपदाएँ या विपत्तियाँ आए, डटकर मुकाबला करना चाहिए तथा उस पर पार पाने का सतत् प्रयास करना चाहिए। जीवन में संघर्षो से डरना नहीं चाहिए। बल्कि संघर्षों को जीवन का अभिन्न हिस्सा मानकर सफलता के पथ पर पूर्ण आत्मविश्वास तथा दृढ़ इरादों के साथ अग्रसर होना चाहिए। भारतीय सिविल सेवा परीक्षा, 2015 में अव्वल रही IAS 'इरा सिंघल' से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए, जो 60 प्रतिशत दिव्यांग थी। इरा सिंघल ने अपने जीवन में बहुत संघर्ष किया लेकिन कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा, लक्ष्य को निगाहों से ओझल नहीं होने दिया, निरंतर प्रयास और बुलंद हौंसलों से वह मुकाम हासिल किया जिसकी प्रशंसा के लिए शब्द भी बौने हो जाते हैं। दिव्यांग होते हुए भी भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) जैसी उच्च स्तरीय प्रतिष्ठित परीक्षा में अव्वल स्थान पर चयनित हुई। लगन, निष्ठा, सतत् प्रयास और दृढ़ इरादों से सब कुछ संभव है। लक्ष्य प्राप्ति की राह कभी सरल और सुगम नहीं होती। यह राह त्याग, तपस्या, संयम और अनुशासन की है। अपने आपको सदा लक्ष्य केन्द्रित रखें। अपने आत्मविश्वास को कभी गिरने नहीं देना है। आपका आत्मविश्वास, दृढ़ इच्छा शक्ति और सतत् प्रयास आपको जरूर मंजिल तक पहुँचाएगा। जीवन में याद रखें, अर्जुन की वह बात जब उसने कहा कि मुझे कुछ नहीं, केवल चिड़िया की आँख दिख रही है। जब अपने अंतर्मन में इतना ठान लेते हैं और अपने मन को अपने लक्ष्य से भटकने नहीं देते हैं तो लक्ष्य कठिन नहीं है, उसे आसानी से पाया जा सकता है। जीवन में कोई भी काम असम्भव नहीं है।

विश्व विजेता नेपोलियन बोनापार्ट ने कहा था कि, असम्भव शब्द केवल मूर्खो के शब्दकोश में ही मिल सकता है। इस वाक्यांश से स्वप्रेरित होने की आवश्यकता है। जीवन में सब कुछ सम्भव है, असम्भव कुछ भी नहीं है। जो व्यक्ति जीवन में असफल होते हैं, उसका कारण यह है कि वे लक्ष्यहीन परिश्रम करते हैं और वे आधे-अधूरे मन से प्रयास करते हैं। बिना उद्देश्य, बिना लक्ष्य के किया गया परिश्रम जीवन में निराशा ही देता है। लक्ष्यहीन व्यक्ति, बिना राडार की नाव की तरह है जिसकी न कोई दिशा, न कोई मंजिल, हवा के झौंकों के साथ समुद्र में इधर-उधर भटकना ही उनके भाग्य में लिखा है। बेंजामिन मेज ने कहा है कि जीवन में लक्ष्य तक नहीं पहुँचना बहुत दुखांत बात नहीं है, दुखांत बात है कि कोई लक्ष्य न हो।

अतः हमें जीवन में लक्ष्य को निगाहों से ओझल न होने देना चाहिए तथा लक्ष्य की प्राप्ति में दृढ़ इरादों और आत्मविश्वास से सतत् अग्रसर होते रहना चाहिए। जीवन का हर पल परीक्षा का होता है। हर व्यक्ति को परीक्षा के लिए सदा तैयार रहना चाहिए।

अध्यापक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सोडावास,
वाया-सोमेसर, जिला-पाली (राज.)

www.rajsevak.com

150वीं गांधी जयन्ती विशेष

महात्मा गाँधी तथा सिनेमा

❒ राजेन्द्र प्रसाद मील

महात्मा गाँधी इस सदी के महान व्यक्तित्व थे जिन्होंने साहित्य तथा सिनेमा को भी काफी प्रभावित किया है। गाँधी जी के 1915 ई. में भारत आने के बाद वे सम्पूर्ण स्वतन्त्रता आंदोलन के केंद्र बिन्दु बन गए थे। भारत में फीचर फिल्मों की शुरुआत 1913 में दादा साहब फाल्के द्वारा निर्मित राजा हरिश्चंद्र फिल्म से हुई थी और शुरुआती दौर में अधिकांशत: पौराणिक एवं धार्मिक फिल्मों का ही निर्माण हुआ। इस दौरान स्वाधीनता आंदोलन भी अपने चरम पर था जिसके प्रभाव से समाज सुधार तथा जनजागृति भी फिल्मों के विषय बनने लगे। स्वाधीनता आंदोलन के उस दौर में गाँधी जी प्रमुख जननायक बन चुके थे। अत: तत्कालीन फ़िल्मकारों को उनके सत्य, अहिंसा, जाति-पाँति का विरोध, अछूतोद्धार, हिन्दू-मुस्लिम एकता आदि विचारों ने आकर्षित किया तथा ये विषय भी किसी न किसी रूप में फिल्मों में शामिल किए जाने लगे। उस दौर में सामान्यत: फिल्मों के प्रति अच्छी धारणा नहीं थी। यह सर्वविदित है कि महात्मा गाँधी की भी फिल्मों में कोई रुचि नहीं थी। वे फिल्मों को समाज के लिए अनावश्यक मानते थे। 1928 में इंडियन सिनेमेटोग्राफ कमेटी की भेजी प्रश्नावली का जवाब देते हुए उन्होंने लिखा था, 'मैंने कभी सिनेमा देखा ही नहीं है, लेकिन किसी बाहरी का भी इसने जितना अहित किया है और कर रहा है, वह प्रत्यक्ष है, यदि इसने किसी का भला किसी रूप में किया है, तो इसका प्रमाण मिलना बाकी है।'

'हरिजन' पत्रिका के एक लेख में उनकी राय थी, 'सिनेमा-फिल्म ज्यादातर बुरे होते हैं।' उनकी ऐसी प्रतिक्रियाओं से आहत होकर ख्वाजा अहमद अब्बास ने 'फिल्म इंडिया' पत्रिका के अक्टूबर, 1939 के अंक में उनके नाम एक खुला पत्र लिखा। इस पत्र में अब्बास ने उनसे आग्रह किया था, एक हाल के बयान में आपने सिनेमा को जुआ, सट्टा, घुड़दौड़ आदि जैसी बुराइयों के साथ रखा है, जिससे आप जाति बहिष्कृत होने के डर से दूर रहते हैं। यह

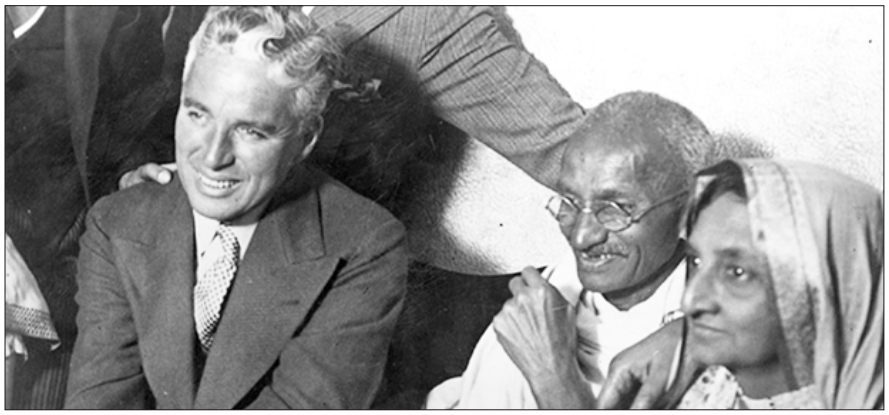

महात्मा गाँधी तथा चार्ली चैप्लिन डॉ. कर्टेल के घर पर-कैनिंग टाउन, ईस्ट लन्दन, सितम्बर 1931

बयान किसी और ने दिए होते, तो इसमें चिंतित होने की जरूरत नहीं थी। आखिर अपनी-अपनी पसंद का मामला है... बापू आप एक महान आत्मा हैं। आपके हृदय में पूर्वाग्रहों के लिए कोई जगह नहीं है। हमारे छोटे से खिलौने- सिनेमा पर जो इतना अनुपयोगी नहीं है, जितना दिखता है, थोड़ा ध्यान दें और उदारतापूर्ण मुस्कान के साथ इसे अपना आशीर्वाद दें।' अब्बास के पत्र की फोटो कॉपी मुंबई स्थित भारतीय सिनेमा के राष्ट्रीय संग्रहालय में रखी गई है। इस संग्रहालय में पूरा एक फ्लोर गाँधी और फिल्मों को समर्पित किया गया है। गाँधीजी ने अपने जीवन में संभवत: सिर्फ दो ही फिल्में देखी थी उनमें माइकल कर्टिज निर्देशित **'मिशन टु मॉस्को'** और विजय भट्ट निर्देशित **'रामराज्य'** (1943) थी। पहली फिल्म उन्होंने अपनी एक सहायिका मीराबेन के अनुरोध पर देखी, जबकि दूसरी फिल्म स्वतंत्रता सेनानी तथा प्रसिद्ध आर्ट डायरेक्टर कनु देसाई के आग्रह पर। कहते हैं गाँधीजी ने अपने जीवन में संभवत: सिर्फ दो ही फिल्में देखी हो, लेकिन वह उन भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों में से एक थे जिन पर शायद सबसे अधिक फिल्में बनीं और इतना ही नहीं इस शख़्सियत ने हॉलीवुड को भी अपनी ओर खींचा। सन 1931 ई. में गोलमेज़ सम्मेलन में भाग लेने गाँधीजी इंग्लैंड गए उस समय महान अभिनेता चार्ली चैप्लिन उनसे मिलने आए और सितंबर 1931 में कैनिंग टाउन, पूर्वी लंदन स्थित डॉ. कर्टेल के घर पर चार्ली चैप्लिन और गाँधी जी के बीच एक गंभीर बैठक हुई। चार्ली चैप्लिन की प्रसिद्ध फिल्म मॉडर्न टाईम्स (1936) का प्रसिद्ध दृश्य जिसमें मानव को मशीन का एक पुर्जा ही दर्शाया गया है गाँधी जी के मशीनीकरण विरोधी विचारों का ही प्रभाव माना जाता है।

सिनेमा से अरुचि की महात्मा गाँधी की स्पष्ट घोषणा के बावजूद सिनेमा ने उनमें रुचि ली। राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन के नेतृत्व की राजनीतिक सक्रियता के अपने प्रभाव की वजह से वह फिल्मकारों के प्रिय रहे। उनका करिश्माई व्यक्तित्व आकर्षित करता रहा। यही वजह है कि 1914 से 1946 तक ब्रिटिश सरकार द्वारा संचालित फिल्म्स डिवीजन द्वारा अनेक वृत्त चित्र बने। उनकी पहली चलती-फिरती तस्वीर वृतचित्र 'न्यूजरील' में मिलती है। जिसमें उन्हें 'कुख्यात आंदोलनकारी' कहा गया है। तब ब्रिटिश सरकार के लिए वे 'कुख्यात' और 'आंदोलनकारी' ही थे, लेकिन भारतीय फिल्मकारों की निगाह में उनका दर्जा अलग था। उनके लिए गाँधी एक उम्मीद थे।

ब्रिटिश सरकार फिल्मों के व्यापक असर से वाकिफ थी। सेंसरशिप की सख्ती थी। यही वजह है कि1921 ई. में प्रदर्शित मूक फिल्म 'भक्त विदुर' को प्रतिबंधित करते हुए उन्होंने लिखा था, 'यह विदुर नहीं है। यह गाँधी है और

www.rajsevak.com

हम इसकी अनुमति नहीं देंगे।' इस फिल्म में द्वारकानाथ संपत ने विदुर की भूमिका निभाई थी। उन्होंने बाद में एक संस्मरण में लिखा था कि दर्शकों को कुछ नहीं बताया गया था कि विदुर में गाँधीजी की छवि है, लेकिन ब्रिटिश अधिकारियों ने भांप लिया। बाद के दिनों में वी. शांताराम को भी ब्रिटिश अधिकारियों के आदेश पर अपनी फिल्म **'महात्मा'**(1935) का शीर्षक बदल कर **'धर्मात्मा'** करना पड़ा था। आजादी के पहले की कुछ और फिल्मों को भी सेंसर का कोपभाजन बनना पड़ा। महान फ़िल्मकार देवकी बोस ने गाँधीजी के असहयोग आंदोलन से प्रेरित होकर एम.ए. की परीक्षा का बहिष्कार कर दिया था। उनकी फिल्म **'चंडीदास'** (1932) गाँधीवादी फिल्म थी जिसमे जाती-पाँति तथा ऊँच-नीच का विरोध किया गया है। प्रसिद्ध फ़िल्मकार हिमांशु राय की अशोक कुमार एवं देविका रानी अभिनीत प्रसिद्ध फिल्म 'अछूत कन्या' (1936) भी गाँधीजी से प्रभावित थी जिसमें एक ब्राह्मण युवक एवं दलित लड़की के बीच प्रेम दिखाया गया है। महान फ़िल्मकार वी. शांताराम गाँधीजी से अत्यंत प्रभावित थे और उनकी ज्यादातर फिल्मों में सुधारवादी दृष्टिकोण मिलता है। उनकी 'दुनिया ना माने' (1937), 'पड़ोसी' (1941) तथा 'दो आँखें बारह हाथ' (1957) गाँधीजी के विचारों से प्रेरित प्रसिद्ध फिल्मे हैं। सत्येन बोस की प्रसिद्ध फिल्म 'जागृति' (1954) मे गाँधीजी को संबोधित प्रसिद्ध गीत 'दे दी हमें आजादी बिना खड़ग बिना ढाल, साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल' भी उल्लेखनीय है। गाँधी जी के सत्याग्रह को 2003 में आई राजकुमार हिरानी की फिल्म **'मुन्नाभाई एमबीबीएस.'** में एक नए मनोरंजक रूप गाँधीगीरी के रूप मे प्रस्तुत कर आज के दौर में गाँधीगीरी को बहुत लोकप्रिय बना दिया। इस फिल्म ने भारत के साथ ही यूएस में भी कई अहिंसात्मक आंदोलनों को प्रेरणा दी। यूनाइटेड स्टेट नेशन में दिखाई जाने वाली यह पहली हिंदी फिल्म है। महात्मा गाँधी के विचारों से प्रभावित अनेक फिल्मों का निर्माण उनके जीवनकाल से ही होता रहा लेकिन स्वयं महात्मा गाँधी के जीवन पर फिल्म निर्माण का साहस लंबे समय तक किसी भारतीय फ़िल्मकार ने नहीं किया। कारण शायद महात्मा गाँधी के विराट व्यक्तित्व और कार्यों को किसी एक फिल्म में समेट पाना किसी भी फिल्मकार के लिए नामुमकिन काम रहा हो। राज्यसभा में पंडित नेहरु से इस बारे मे पूछे गए सवाल के जवाब में पंडित नेहरु ने कहा था, **'गाँधी'** पर फिल्म बनाने की चुनौती मुश्किल है। कोई भी सरकारी विभाग इसे नहीं संभाल सकता। सरकार इस योग्य नहीं है और हमें इस काम के योग्य व्यक्ति नहीं मिला। फ़िल्मकारों के लिए दुष्कर बने इस कार्य को ब्रिटिश फ़िल्मकार रिचर्ड एटनबरो ने 1982 ई. में **'गाँधी'** फिल्म का निर्माण कर मार्ग की रुकावट दूर की। रिचर्ड एटनबरो से पूर्व भी एक इतालवी फ़िल्मकार गेब्रियल पास्कल ने 1954 ई. मे तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित नेहरु से मिलकर गाँधी जी पर फिल्म बनाने का समझौता किया था लेकिन गेब्रियल पास्कल की आकस्मिक मृत्यु से ये प्रोजेक्ट सफल नहीं हो सका। एटनबरो की **'गाँधी'** के निर्माण की कहानी भी रोचक है। सन 1962 ई. में रिचर्ड एटनबरो ने पंडित नेहरु से मिलकर गाँधी जी पर फिल्म बनाने की योजना पर काम शुरू किया लेकिन नेहरु जी की मृत्यु से एक बार फिर इस कार्य मे विलंब हुआ और अंततः तत्कालीन प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी और भारत सरकार के सहयोग से 30 नवंबर 1982 को फिल्म **'गाँधी'** भारत मे प्रदर्शित हुई। एंग्लो-इंडियन प्रॉजेक्ट के तौर पर बनी इस फिल्म में हॉलीवुड स्टार 'बेन किंग्स्ले' ने गाँधी जी का किरदार निभाया था। फिल्म में बेन के अलावा अमरीश पुरी, ओम पुरी, रोहिणी हट्टंगणी और रजित कपूर जैसे भारतीय कलाकार भी थे। भारत सरकार के सहयोग से बनी **'गाँधी'** सर्वाधिक चर्चित और देखी गई फिल्म हैं। इस फिल्म के निर्माण के पहले पंडित जवाहरलाल नेहरु ने एटनबरो को सलाह दी थी कि गाँधीजी को देवता की तरह न पेश करें। यह फिल्म गाँधीजी की बेहतरीन बायॉपिक में से एक मानी जाती है। बापू पर बनी इस फिल्म ने आठ ऑस्कर के साथ ही बाफ्टा, ग्रैमी, गोल्डन ग्लोब और गोल्डन गिल्ड समेत 26 अवॉर्ड अपने नाम किए थे। रिचर्ड एटनबरो की फिल्म में भी कमियाँ रेखांकित की गई। फिर भी इस फिल्म ने पॉपुलर माध्यम से महात्मा गाँधी को देश-दुनिया के दर्शकों के बीच पहुँचाया। उनके जीवन, संघर्ष और विजय से परिचित कराया। गौर करें कि आजादी और गाँधी जी के देहांत के बाद के 34 सालों में किसी भारतीय फिल्मकार ने उन पर फिल्म बनाने की कभी गंभीर कोशिश नहीं की।

बहरहाल **'गाँधी'** फिल्म ने भारतीय फिल्मकारों को जोश और विषय दिया। 1982 के बाद अनेक फिल्में आई, जिनमें किसी न किसी रूप में **'गाँधी'** दिखाई पड़ते हैं। वह कहीं चरित्र हैं, तो कहीं नायक। एक-दो फिल्मों में वह प्रति नायक की भूमिका में भी नजर आते हैं। अच्छी बात है कि उन्हें पवित्र आत्मा की तरह निरूपित करने की जबरन कोशिश नहीं की गई है। सरकार ने उन पर या उनसे प्रभावित फिल्मों के प्रति किसी प्रकार की सख्ती नहीं दिखाई।

गाँधी जी पर दूसरी महत्त्वपूर्ण फिल्म 1996 मे आई श्याम बेनेगल निर्देशित **'द मेकिंग ऑफ महात्मा'** फिल्म गाँधीजी के आरंभिक जीवन का विवरण प्रस्तुत करती है। दक्षिण अफ्रीका में बिताए उनके 21 सालों के प्रवास और अनुभवों को सहेजती यह फिल्म एक सामान्य वकील से महात्मा बन रहे गाँधी से परिचित कराती है। सामान्य बैरिस्टर से सजग राजनीतिज्ञ बनने की गाँधी की प्रक्रिया को इस फिल्म से समझा जा सकता है। भारत आने के बाद सक्रिय हुए गाँधी में आजादी की चेतना दक्षिण अफ्रीका में ही विकसित हुई थी।

फिरोज अब्बास खां की **'गाँधी माय फादर'**(2007) महात्मा गाँधी के पारिवारिक जीवन के संवेदनशील पहलू को छूती है। बड़े बेटे हरिलाल से उनके संबंध सामान्य नहीं रह गए थे। दोनों के सोचने और जीने के तरीके अलग थे। यह फिल्म गाँधी को एक व्यक्ति और पिता के तौर पर चित्रित करती है।

अल्जीरियन डायरेक्टर करीम ट्राडिया निर्देशित हॉलिवुड फिल्म **'गाँधी: द कॉन्सपिरेंसी'** में भारत के विभाजन के बाद से गाँधीजी की हत्या तक के घटनाक्रम को दिखाया गया है।

साल 2005 में आई फिल्म मैंने गाँधी को नहीं मारा में अनुपम खेर ने उत्तम चौधरी का किरदार निभाया है, जिसे गाँधी जी की हत्या से इतना सदमा पहुँचता है कि वह कुबूल कर लेता है कि उसने ही गाँधी की हत्या की।

सहायक निदेशक, शाला दर्पण,
माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, बीकानेर
मो. 8118852336

www.rajsevak.com

राष्ट्रीय खेल दिवस विशेष

हम खेल देखने वाले नहीं दिखाने वाले बनें

❒ सुभाष चन्द्र कस्वां

चालीस का व सतर का दशक भारत के लिए बड़ा ही गौरवशाली रहा है। इन कालों में दो महान हस्तियों ने अपने-अपने क्षेत्रों में अतुल्य योगदान के जरिए अविस्मरणरीय किवंदतियाँ बनाई। राजेश खन्ना की हिट फिल्मों को देखकर उनके बारे में कहा जाने लगा-'ऊपर आका तो नीचे काका।' यही बात हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद की गेंद व स्टिक के चमत्कारिक संगम को लोग देख कह उठे- 'ऊपर चँद तो नीचे मेजर ध्यानचंद।' 'चंद' अर्थात चन्द्रमा। इससे पूर्व विश्व के कई देशों में भारत के बारे में यह गलत धारणा बन गई थी कि भारत सपेरों, मदारियों व नचनियों का देश है। इस भूत को बोतल से बाहर निकालने का काम हिटलर ने 1928, 1932 व 1936 के हॉकी ओलम्पिक खेलों को देख बाहर निकाला। 1936 का बर्लिन ओलम्पिक खेल देख हिटलर को लगा कि भारतीय प्रतिभाएँ करिश्माई हैं। 1936 का बर्लिन ओलम्पिक खेल जिसमें फाइनल मैच मेजर ध्यानचंद की अगुआई में खेला जा रहा था, में दर्शक दीर्घा में बैठे हिटलर के होश तब उड़ गए जब जर्मनी के खिलाड़ियों के चक्रव्यूह को हॉकी के अभिमन्यु मेजर ध्यानचंद ने तोड़ गोल पर गोल दाग कर स्वर्ण पदक भारत के दामन में डाल दिया। लगातार तीसरी बार स्वर्ण पदक विजेता भारत के महान खिलाड़ी ध्यानचंद पर हिटलर का ध्यान टिक गया। बस फिर क्या था। ध्यानचंद को पाने के लिए हिटलर ने उन्हें जर्मनी की नागरिकता, सेना में बड़ा आहदा व बड़ी तनख्वाह का ब्रह्मस्त्र उनकी ओर चलाया पर भारत माँ के इस महान सपूत ने हिटलर की इस पेशकश को मैदान में ही ठुकरा दिया। 29 अगस्त 1905 को जन्मे देश भक्त व महानायक के जन्मदिन को राष्ट्रीय खेल दिवस रूप में हम प्रतिवर्ष मना कर मेजर ध्यानचंद का ही आदर नहीं कर रहे हैं बल्कि उन खिलाड़ियों का भी हम सम्मान करते हैं जो मेजर ध्यानचंद बनना चाहते हैं। असली सितारा आसमान व पर्दे पर दिखने वाला नहीं होता

बल्कि सितारा तो वही होता है जो जमीं पर कुछ कर दिखा जाता है।

किसी भी देश की वास्तविक ताकत वहाँ के नागरिकों में उपजी शारीरिक, बौद्धिक एवं भावनात्मक लय ही होती है जो उन्हें हर स्तर से लड़ने व उसका सामना करने का हुनर सिखाती है। यही वजह है कि आज दुनिया का हर राष्ट्र खेल में काफी निवेश कर रहा है तथा उसका रिटर्न भी उसे मिल रहा है। कोविड-19 (कोरोना) जैसी महामारी को खिलाड़ी भाव वाला व्यक्ति ही मात दे सकता है। बिना किसी वैक्सीन व उचित दवा के रोग प्रतिरोधक क्षमता वाले व्यक्तियों ने कोरोना को ही डरा दिया स्वयं नहीं डरे। रोग प्रतिरोधक क्षमता खेलों से बढ़ती है का दावा आज चिकित्सा विज्ञान कर रही है।

सबसे युवा देश भारत की ही हम बात करें तब हमें सोचना होगा कि हम खेल प्रेमी ही नहीं, खेल दिखाने वाला राष्ट्र बनें। यहाँ का मानव संसाधन व भौगोलिक परिदृश्य हमें खेल के क्षेत्र में बहुत कुछ देने वाला साबित हो सकता है। निरंतर अभ्यास व प्रयास की आवश्यकता है। पिछले दो-तीन दशकों में भारत ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर खेलों में प्रदर्शन पर खेल तकनीक अपना देश को सम्मानजनक स्थिति में अन्य देशों के समक्ष ला खड़ा किया है। खेल संघ व खिलाड़ी दोनों ही अपनी-अपनी भूमिका में लतिका की भाँति विस्तार लेते प्रतीत हो रहे हैं। यहाँ के खिलाड़ी जब देश की बात होती है तब भावना से बड़ा कर्त्तव्य होता है को तरजीह देने लगे हैं। मिजोरम की लालरेम सियासी राष्ट्रीय हॉकी टीम (महिला) की फॉरवर्ड खिलाड़ी 21 जून, 2019 को जापान में ओलम्पिकस क्वालिफाई एफ.आई.एच. सीरीज के सेमीफाइनल में खेलने जा रही थी, तभी कोच ने उन्हें मिजोरम के सुदूर गाँव में उनके पिता के निधन की दुखद सूचना दी और कहा कि वे जाना चाहें तो अगली उड़ान से मिजोरम जा सकती हैं। भावना में न बह वह कर्त्तव्य पर डटी रही। देश के प्रति कर्त्तव्य से अभिभूत सियामी वह सीरीज जीतकर ही स्वदेश लौटी। उनके संयम व समर्पण की प्रशंसा खेल मंत्रालय के साथ-साथ समूचे देश ने की। यदि यही ललक खिलाड़ी, कोच व खेल संघों में दिखने लगेगी तब निस्संदेह अपलक सुन्दर झलक हमें खेलों में भी दिखने को मिलेगी।

जब हम विराट कोहली को कवर ड्राइव लगाते देखते हैं या सानिया का स्मैश, साइना का अविश्वसनीय रिटर्न या सिंधू का ड्रॉपशॉट तब हम बड़े रोमांचित हो जाते है। ऐसा इसलिए कि हमें यह देखना पसंद है। हम यह पसंद क्यों नहीं बना लेते कि हम भी उनकी तरह खेलें? जिस दिन देश का युवा यह पसंद बना लेगा तब मैदान में उसके लिए भी खूब तालियाँ बजेंगी। कभी हॉकी हमारी शान थी जो आज अतीत की परछाई बन कर रह गई है। अतीत चाहे कितना भी आदरणीय हो, वर्तमान को कोरा उसके आधार पर प्रक्षेपित नहीं किया जा सकता। उसके लिए खेलों में भी अभिनन्दनीय कर्मों की आवश्यकता है।

स्वतंत्र लेखक
हेतमसर, वाया-नूँआ,
झुंझुनूं (राज.)-333041
मो: 9460841575

www.rajsevak.com

खेल दिवस विशेष

खेल की दुनिया में शिक्षा विभाग का नाम रोशन कर रहा है सॉफ्टबॉल

❒ शाकिर अली

खेल की दुनिया में सॉफ्टबॉल आज अपनी एक अलग पहचान बना चुका है। अमेरिका का यह खेल भारत में कभी पहचान का मोहताज था। इस खेल को भारत में पहचान दिलाने का श्रेय राजस्थान के दूसरे बड़े शहर जोधपुर के खेल प्रेमी स्व. दशरथमल मेहता को जाता है, जिन्हें भारत में इस खेल का जनक भी माना जाता है। भारत में इस खेल की शुरूआत वर्ष 1961 में भारतीय सॉफ्टबॉल संघ के गठन के साथ हुई, लेकिन सॉफ्टबॉल की पहली राष्ट्रीय स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन स्व. मेहता के प्रयासों से वर्ष 1967 में हुआ। भारत में धीरे-धीरे इस खेल की लोकप्रियता बढ़ती गई। इसी के साथ सॉफ्टबॉल के प्रति देश के बालक-बालिकाओं का भी रूझान बढ़ता रहा। इस खेल के खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से भारतीय खेल प्राधिकरण ने वर्ष 1999 से डिप्लोमा प्रमाण पत्र शुरू कर रखा है।

शिक्षा विभाग में सॉफ्टबॉल की शुरूआत : स्कूल गेम्स फेडरेशन आफ इंडिया (एसजीएफआई) ने राष्ट्रीय स्कूली प्रतियोगिता में इस खेल को 1994-95 में शामिल किया। तत्पश्चात् माध्यमिक शिक्षा विभाग राजस्थान ने सत्र 2001 में इस खेल को अपने विद्यालय के स्कूल कैलेण्डर में शामिल किया गया, लेकिन किसी कारणवश राजस्थान की टीम को वर्ष 2001 की राष्ट्रीय प्रतियोगिता में खेलने का अवसर प्राप्त नहीं हो सका। वर्ष 2002 से नियमित रूप से सॉफ्टबॉल टीम राष्ट्रीय स्तरीय प्रतियोगिता में न सिर्फ भागीदारी निभा रही है, बल्कि अपने श्रेष्ठ प्रदर्शन से दबदबा भी कायम कर रही है। विगत कुछ वर्षों में खिलाड़ियों ने सराहनीय प्रदर्शन कर शिक्षा विभाग को स्वर्ण, रजत एवं कांस्य पदक दिलाकर पूरे देश में राजस्थान माध्यमिक शिक्षा का नाम रोशन किया। समय-समय पर माध्यमिक शिक्षा विभाग बीकानेर द्वारा प्रतिभावान खिलाड़ियों को छात्रवृत्ति के रूप में नगद राशि देकर प्रोत्साहित किया जाता रहा है। इसी का परिणाम है कि शिक्षा विभाग में आज बड़ी संख्या में सॉफ्टबॉल खिलाड़ी, शारीरिक शिक्षक का दायित्व निभा रहे हैं।

अब तक जीते गए पदक

क्र. सं.	सत्र	प्रतियोगिता स्थल	स्थान	वर्ग
1.	2003-04	49वीं राष्ट्रीय स्तरीय स्कूली सॉफ्टबॉल प्रतियोगिता दिनांक 02.01.2004 से 07.01.2004 तक देवास (मध्यप्रदेश)	कांस्य पदक	19 वर्ष छात्र
2.	2004-05	50वीं राष्ट्रीय स्तरीय स्कूली सॉफ्टबॉल प्रतियोगिता दिनांक 18.12.2004 से 23.12.2004 तक लुधियाना (पंजाब)	रजत पदक	19 वर्ष छात्र
3.	2005-06	51वीं राष्ट्रीय स्तरीय स्कूली सॉफ्टबॉल प्रतियोगिता दिनांक 18.01.2006 से 23.01.2006 तक लुधियाना(पंजाब)	कांस्य पदक	19 वर्ष छात्र
4.	2006-07	52वीं राष्ट्रीय स्तरीय स्कूली सॉफ्टबॉल प्रतियोगिता दिनांक 01.12.2006 से 06.12.2006 तक चण्डीगढ़	कांस्य पदक	19 वर्ष छात्रा
5.	2008-09	54वीं राष्ट्रीय स्तरीय स्कूली सॉफ्टबॉल प्रतियोगिता दिनांक 20.01.2009 से 24.01.2009 तक कडप्पा (आंध्रप्रदेश)	स्वर्ण पदक	19 वर्ष छात्रा
6.	2009-10	55वीं राष्ट्रीय स्तरीय स्कूली सॉफ्टबॉल प्रतियोगिता दिनांक 22.10.2009 से 27.10.2009 तक चण्डीगढ़	रजत पदक	19 वर्ष छात्रा
7.	2011-12	57वीं राष्ट्रीय स्तरीय स्कूली सॉफ्टबॉल प्रतियोगिता दिनांक 27.01.2012 से 31.01.2012 तक जलगाँव (महाराष्ट्र)	रजत पदक	17 वर्ष छात्र
8.	2013-14	59वीं राष्ट्रीय स्तरीय स्कूली सॉफ्टबॉल प्रतियोगिता दिनांक 12.09.2013 से 16.09.2013 तक बुरहानपुर (मध्यप्रदेश)	कांस्य पदक	17 वर्ष छात्रा
9.	2014-15	60वीं राष्ट्रीय स्तरीय स्कूली सॉफ्टबॉल प्रतियोगिता दिनांक 22.10.2014 से 17.10.2014 तक पाली मारवाड़ (राजस्थान)	स्वर्ण पदक	19 वर्ष छात्र
10.	2014-15	60वीं राष्ट्रीय स्तरीय स्कूली सॉफ्टबॉल प्रतियोगिता दिनांक 22.10.2014 से 17.10.2014 तक पाली मारवाड़ (राजस्थान)	स्वर्ण पदक	19 वर्ष छात्रा
11.	2015-16	61वीं राष्ट्रीय स्तरीय स्कूली सॉफ्टबॉल प्रतियोगिता दिनांक 02.11.2015 से 06.11.2015 तक जोधपुर (राजस्थान)	स्वर्ण पदक	17 वर्ष छात्र
12.	2015-16	61वीं राष्ट्रीय स्तरीय स्कूली सॉफ्टबॉल प्रतियोगिता दिनांक 02.11.2015 से 06.11.2015 तक जोधपुर (राजस्थान)	स्वर्ण पदक	19 वर्ष छात्रा
13.	2015-16	61वीं राष्ट्रीय स्तरीय स्कूली सॉफ्टबॉल प्रतियोगिता दिनांक 20.11.2015 से 24.11.2015 तक राजनन्द गाँव (छत्तीसगढ़)	कांस्य पदक	19 वर्ष छात्रा

शारीरिक शिक्षक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सजाड़ा, लूणी, जोधपुर
मो: 9414477664

www.rajsevak.com

एक सकारात्मक अवधारणा

नो बैग डे

❒ विजय कुमार आर्य

बहुत खूबसूरत अवधारणा है 'नो बैग डे' की, जो सप्ताह में एक दिन उनका बचपन लौटा देगी। हालांकि शनिवारीय बाल सभा हमारी पुरानी परम्परा रही है परन्तु थैले का बोझ बालक के दिमाग का बोझ बन रहा था।

बच्चों में होगा सामाजिक गुणों का विकास : मनोवैज्ञानिकों के अनुसार तार्किक बुद्धि की अपेक्षा सांवेगिक बुद्धि जीवन की सफलता तथा समायोजन के लिए बेहतर है। बालक जब दलीय गतिविधियों में सहभागिता निभाएंगे, एक दूसरे का सहयोग करेंगे तो सम्प्रेषण क्षमता तो बढ़ेगी, अनायास ही सबसे बड़े संवैधानिक मूल्य समानता, भाईचारा जैसे लोकतांत्रिक गुणों का विकास होगा। भविष्य में जब सुधरी हुई मनोवैज्ञानिक चयन पद्धतियों का विकास होगा, उस समय प्रार्थी की नेतृत्व क्षमता, पहल, निर्णय क्षमता, सहयोग भावना, सम्प्रेषण क्षमता की परख होगी, उस समय 'नो बैग डे' मनाने वाले बालक उत्कृष्ट सिद्ध होंगे। प्रोफेसर यशपाल कमेटी ने थैले का बोझ कम करने के विषय में रिपोर्ट दी थी परन्तु हम थैले का मोह कम नहीं कर सके, हमारा मोहभंग तब होता है जब हम बालक के मानसिक स्वास्थ्य की जाँच करते हैं। हम उसे उसकी नैसर्गिक मूल प्रवृत्तियों की आपूर्ति से वंचित रखते हैं, उसके अवचेतन में विकृतियों को भरते जाते हैं, अनेक विकृत ग्रन्थियाँ जीवन भर के लिए नासूर बन जाती हैं। इसी का परिणाम है कि हमारे बच्चे संकटग्रस्त स्थितियों का सामना करने से कतराते हैं, नवाचार से दूर रहते हैं, नई चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों का सामना करने का साहस नहीं बटोरते और मात्र जिंदगी ढोना ही अपना कर्त्तव्य समझ बैठते हैं। वे प्रत्येक क्रान्तिकारी विचारों से दूर रहना चाहते हैं, उन्हें दूसरों का बना बनाया माल पसन्द है, वे इस दुनिया को बेहतर बनाने में अपना योगदान नहीं करना चाहते। वे स्वयं स्वतंत्रतापूर्वक अपने विचारों का सर्जन करना तभी सीखेंगे जब उन्हें रचनाशीलता का खुला प्लेटफार्म मिलेगा, बहुआयामी खुले क्षेत्र मिलेंगे, ज्ञातव्य है कि दिमाग और पैराशूट खुलने पर ही काम करते हैं।

पाठ्यक्रम की सीमाओं ने बालक के व्यक्तित्व विकास को बड़ी क्षति पहुँचाई है क्योंकि कोई भी शिक्षक एकीकृत शिक्षा अर्थात जीवन से जोड़ने वाली शिक्षा की अपेक्षा अपने विषय की दक्षताओं के पीछे ही पड़ा रहता है, न बालक को ज्यादा अभिव्यक्ति का अवसर मिलता है, न ही अपनी विशिष्ट योग्यताओं को पनपाने का मौका, वह तो मात्र कोल्हू के बैल की तरह सीमित दायरे में बोझिल दक्षताओं के इर्द-गिर्द ही घूमता रहता है। हालांकि सतत तथा व्यापक मूल्यांकन योजना में हमने व्यक्तिगत गुणों के विकास, अभिनय, नृत्य, गायन, सहयोग, अन्तर्निहित शक्तियों के विकास को चैकलिस्ट में सर्वोपरि लक्ष्य माना है।

'नो बैग डे' के दिन बालकों को आपसी अन्तर्क्रिया की पूर्ण स्वतंत्रता मिलेगी, वे अपना वजूद दर्शा सकेंगे। खेलकूद, नृत्य, गायन, प्रदर्शन, अभिनय, चित्रांकन, क्ले-मॉडलिंग इत्यादि गतिविधियों के माध्यम से अपनी विशिष्ट सृजनात्मक शक्तियों को विकसित करने में सक्षम हो सकेंगे। अपने विशिष्ट गुणों का विकास करने में, अभिरुचियों को पनपाने में, सकारात्मक अभिवृत्तियों तथा सकारात्मक सोच और सामान्य समझ के विकास का अवसर उन्हें इस अवधारणा से प्राप्त होगा।

आनंदमयी बचपन बालक का जन्मसिद्ध अधिकार है। आज का बालक भविष्य का नागरिक है। किसी भी देश की खुशहाली के लिए रचनात्मक सोच के नागरिकों का विकास करना अनिवार्य है अन्यथा वे अपनी ऊर्जा आलोचना-प्रत्यालोचना में ही व्यय कर देंगे तथा अपने को त्याग के लिए प्रस्तुत न कर अन्य से अपेक्षाओं का अम्बार लगा देंगें।

थैला मुक्त दिवस बालक में व्यवहार का विकास करेगा जिससे वे एक दूसरे की विभिन्नताओं को स्वीकार करना सीखेंगे, निज संस्कृति को श्रेष्ठ मानने के प्रति उनका मोह भंग हो पाएगा। कुछ बालक जो मिथ्या अहम् के भाव में रहते हैं, उच्चता ग्रन्थि (सुपीरियरिटी कॉम्पलेक्स) उनमें घर कर लेती है, तो कुछ बालक अपने को दीन-हीन समझ बैठते हैं, प्रत्येक पहल से वे बचना चाहते हैं, हीन-भावना उनमें घर कर लेती है, ये दोनो अतिशय ग्रन्थियों का बालक द्वारा की गई दलीय गतिविधियों द्वारा शमन-शोधन होता है। वे दल (टीम) का स्वयं को सक्रिय सदस्य मानते हैं, अपनी भूमिका का बखूबी से निर्वहन करते हैं, उनमें एक आत्मसन्तोष पनपता है और एक जुझारू व्यक्तित्व का जन्म होता है।

इस दिन के कार्यक्रमों को सफल बनाने हेतु ज्यादा से ज्यादा प्रहसन गतिविधियों, सामूहिक नृत्य, सामूहिक गायन, खेल, रोचक सांस्कृतिक प्रस्तुतियों, विज्ञान, प्रदर्शनियों, रस्सा कस्सी, कुर्सी दौड़, चम्मच दौड़, निनादों, योग-ध्यान सत्रों, क्ले मॉडलिंग, ओरोगेमी, कलात्मक कृतियों का निर्माण, कबाड़ से जुगाड़, चित्रकारी, माण्डना-मेंहदी सजावट, व्यायाम प्रदर्शन, सामुदायिक सफाई, वृक्षारोपण, व्यक्तित्व विकास के अभिप्रेरक सत्रों इत्यादि विविधतापूर्ण कार्यों से सज्जित किया जा सकता है। इस योजना से उत्साहवर्धक सकारात्मक परिणाम आने की सम्भावनाएँ हैं। शिक्षक अपने गुरुत्व को न दर्शा कर इन कार्यक्रमों में सहभागी, विद्यार्थी मित्र, सुगमकर्त्ता के रूप में प्रस्तुत करें तो इसकी गुणवत्ता में आश्चर्यजनक अभिवृद्धि हो पाएगी। बाल संसद का गठन लाभकारी सिद्ध होगा, जिसमें बालकों को जिम्मेदारियाँ सौंपी जाएँ, जिन्हें वे बखूबी से निभाएँगे, अनुशासन स्थापना का अपना दायित्व समझेंगे। कार्यक्रम संचालन का कार्य भी बालकों को ही सौंपा जाए, जिससे उनमें आत्मनिर्भरता आएगी, हालांकि प्रारम्भ में वे गलतियाँ करेंगे, अव्यवस्था भी फैलेगी परन्तु धीरे-धीरे वे गलतियों से सबक लेना सीख जाएँगे तथा उत्तरोत्तर सुधार होते चले जाएँगे तथा गुणवत्ता में अभिवृद्धि हो पाएगी। शिक्षा शास्त्री रामप्रताप आर्य रचित पद्य रचना है-

खुल कर जीओ जिंदगी,
कि जीने का सलीखा आ जाए।
थैले का बोझ, न होवे रोज-रोज,
तो विद्यालय बालमन को भा जाए।।

No bag day, tension away.
That is the way, to be happy and gay.

प्राध्यापक (मनोवैज्ञानिक)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
थिरपाली, बड़ी (चूरू) **मो: 8094070004**

www.rajsevak.com

अर्थियन अवार्ड 2019

राष्ट्रीय स्तर पर राजस्थान हुआ गौरवान्वित

❒ सरूपाराम माली

केन्द्रीय वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा देशभर के विद्यालयों में सत्र 2002-03 से ही नेशनल ग्रीन कोर योजना के तहत गठित ईको क्लब के माध्यम से विद्यार्थियों एवं आमजन में पर्यावरण के प्रति जागरूकता एवं सस्टेनेबिलिटी की समझ पैदा करने के प्रयास किए जा रहे हैं। साथ ही राज्य सरकारें भी विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से पर्यावरण चेतना के लिए प्रयासरत हैं। राजस्थान सरकार ने सत्र 2019-20 से विद्यालयों में यूथ एवं ईको क्लब के नाम से महत्त्वपूर्ण योजना प्रारंभ की है, जिसके तहत विद्यालय में अध्ययनरत समस्त विद्यार्थियों को पाँच सदनों (पृथ्वी, वायु, अग्नि, जल, आकाश) में विभाजित कर उनके नाम के अनुरूप तत्व पर आधारित विभिन्न गतिविधियाँ करवाई जाती हैं। इसी योजना के तहत कार्य करते हुए सिरोही जिले के छोटे से गाँव डोडुआ के विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय स्तर पर राजस्थान का परचम लहराया है।

नेशनल ग्रीन कोर योजना : प्रदेश में राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड को नोडल एजेन्सी बनाकर संचालित की जा रही है। एन.जी.सी. योजना के प्रारंभिक अवस्था में विद्यालयों में वृक्षारोपण, नारा लेखन, विभिन्न प्रतियोगिताएँ, जन जागरण रैलियाँ, शैक्षिक भ्रमण, स्वच्छता अभियान आदि गतिविधियाँ की जाने लगी। लेकिन मंत्रालय द्वारा समय-समय पर किए गए मूल्यांकन को आधार बनाकर इसे बहुआयामी एवं कक्षागत शिक्षण का अंग बनाने के लिए सत्र 2009 में मंत्रालय की रिसोर्स एजेन्सी 'पर्यावरण शिक्षण केन्द्र' द्वारा पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के मार्गदर्शन में 'पर्यावरण मित्र कार्यक्रम' तैयार कर इसे विद्यालयों तक पहुँचाने के साथ-साथ विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों को भी जोड़ा गया।

अर्थियन अवार्ड : सन 2011 से 'पर्यावरण मित्र कार्यक्रम' के साथ विप्रो फाउंडेशन द्वारा 'अर्थियन अवार्ड कार्यक्रम' प्रारंभ किया गया। यह अवार्ड प्रतिवर्ष देश के दस विद्यालयों एवं दस महाविद्यालयों को दिया जाता है। जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों में जल, जैव विविधता एवं कचरा प्रबंधन से जुड़ी गतिविधियों के माध्यम से स्वयं करके सीखते हुए विद्यार्थियों एवं स्थानीय समुदाय में सस्टेनेबिलिटी की समझ पैदा करना है। अर्थियन कार्यक्रम पूर्णतया 'राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005' की मंशा के अनुरूप पाठ्यक्रम को विद्यार्थियों के जीवन के ज्ञान से जोड़ने के सिद्धांत पर आधारित है। इस वर्ष के अर्थियन अवार्ड में देश के दस विद्यालयों में आठ निजी और दो सरकारी विद्यालयों का चयन हुआ है, जिसमें छः अंग्रेजी, तीन हिंदी और एक मराठी माध्यम का विद्यालय शामिल है।

स्वयं करके सीखा : स्काउट मास्टर सरूपाराम माली द्वारा ईको क्लब के माध्यम से विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के सहयोग से जैव विविधता एवं सस्टेनेबिलिटी की बहुआयामी गतिविधियों पर आधारित प्रोजेक्ट तैयार किया गया जिसमें भाग 'अ' में विद्यार्थियों द्वारा व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से विद्यालय परिसर, बाँध क्षेत्र, स्थानीय ओरण, नर्सरी, खेत एवं जंगल का अवलोकन करके उनमें रहने वाले छोटे बड़े जीवों की विभिन्न गतिविधियों एवं पर्यावरण में उनके योगदान के संबंध में जानकारी एकत्रित की, पेड़ पौधों की विभिन्न प्रजातियाँ एवं उनके उपयोगों का अध्ययन, कचरे से सड़कर खाद बनने की संपूर्ण प्रक्रिया का वैज्ञानिक तरीके से अध्ययन करने के लिए मिट्टी, पत्तियों एवं पानी का मिश्रण तैयार करके साप्ताहिक पीएच मान, तापमान, वजन, गंध, जीवों की उपस्थिति एवं रासायनिक व जैविक बदलावों को स्वयं करके सीखा। जैव विविधता एवं रोजगार के संबंधों को समझने के लिए किसानों, पशुपालकों, सब्जी बेचने वालों और बड़े बुजुर्गों से साक्षात्कार किया गया। जैव विविधता के विभिन्न पहलुओं के आपसी संबंधों को समझने के लिए कार्ड खेल, जीवन जाल खेल के साथ-साथ पहेलियाँ, मुहावरों, कहावतों एवं लोकोक्तियों का संकलन किया गया। पौराणिक मान्यताओं में छिपे तार्किक आधारों को ढूँढ़ा गया। दो चयनात्मक गतिविधियों में से टेरेरियम निर्माण करके प्रकृति में मौजूद जैविक एवं अजैविक घटकों के आपसी संबंधों को जानते हुए वैश्विक पर्यावरण पर ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावों को समझा।

सभी विषयों को आपस में जोड़ने का अनुभव : वैसे तो विद्यालयों में पढ़ाए जाने वाले सभी विषयों का पाठ्यक्रम अलग-अलग होता है लेकिन फिर भी उनका आपस में बहुत ही घनिष्ठ संबंध होता है। इस प्रोजेक्ट के दौरान विद्यार्थियों ने कक्षा पहली से बारहवीं तक के सभी विषयों के पाठ्यक्रम का विश्लेषण करके उसमें जैव विविधता से जुड़े सभी अध्यायों का चयन करके उनके मुख्य बिंदुओं के साथ-साथ मुहावरों, लोकोक्तियों, कविताओं, श्लोकों, पहेलियों का संकलन किया गया। साथ ही पौराणिक मान्यताओं, परंपराओं और विश्वासों में निहित तार्किक आधारों का पता लगाया गया।

केस स्टडी ने सभी विषयों को प्रत्यक्ष रूप से जोड़ने का नया अनुभव कराया जिसमें परंपरागत एवं आधुनिक भोजन (सामाजिक विज्ञान) में मौजूद पोषक तत्व एवं उनके स्रोतों की जानकारी (विज्ञान) के साथ-साथ उनकी लागत की सूक्ष्म गणना (गणित) एवं उनके उपयोग से समाज पर पड़ने वाले आर्थिक प्रभावों का अध्ययन (अर्थशास्त्र) करके आँकड़े एकत्रित किए गए। आधुनिक भोजन के स्रोतों के उत्पादन स्थलों (भूगोल) से लंबे परिवहन से उत्सर्जित कार्बन फुटप्रिंट (प्रदूषण) के प्रभाव से उत्पन्न विश्वव्यापी ग्लोबल वार्मिंग (अन्तर्राष्ट्रीय समस्या) को लेकर आयोजित सम्मेलनों एवं समझौतों (अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति) की सार्थकता को भी विद्यार्थियों ने महसूस किया।

सृजनात्मक शक्तियों का विकास : विभिन्न प्रकार की गतिविधियों एवं स्रोतों से प्राप्त जानकारी, तथ्यों और आँकड़ों के संकलन एवं विश्लेषण संश्लेषण करके उन्हें स्वनिर्मित तालिकाओं, पाई, चार्ट, दंड आरेख, आत्मकथाओं, वार्तालाप, कार्टून और रेखाचित्रों के माध्यम से प्रस्तुत करने के साथ-

www.rajsevak.com

साथ समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं में छपने वाले चित्रों को काटकर उनके आकर्षक शीर्षक देने के प्रयासों से विद्यार्थियों में सृजनशक्ति एवं नई सोच पैदा होती है।

सर्वांगीण विकास के अवसर : कार्यक्रम के भाग 'ब' में जैव विविधता और पर्यावरण के संबंधों को वैश्विक स्तर पर समझने के लिए केस स्टडी विधा का प्रयोग किया जिसमें भोजन, कृषि, यातायात और पशुपालन के परंपरागत एवं आधुनिक स्वरूपों को जानने के लिए क्षेत्र का सर्वे, लोगों से साक्षात्कार के साथ-साथ समाचार पत्रों, पुस्तकालय और इंटरनेट की मदद लेने से विद्यार्थियों में नए आत्मविश्वास का संचार हुआ। साथ ही उनकी नेतृत्व क्षमता, टीम भावना, परिपक्वता, अनुशासन, शिष्टाचार, नियमित अध्ययन, लेखन क्षमता, वैज्ञानिक सोच जैसे गुणों का उदय हुआ है।

पुरस्कार बनेगा नई प्रेरणा का माध्यमः राजस्थान के छोटे से गाँव का सरकारी विद्यालय जिसमें अधिकांश पशुपालकों एवं किसानों के बच्चे पढ़ते हैं, उन्होंने राष्ट्रीय स्तर की कड़ी प्रतिस्पर्धा में पुरस्कार जीतकर यह सिद्ध किया है कि यदि दृढ़ संकल्प शक्ति, ईमानदारी, कार्य के प्रति पूर्ण समर्पण और मन में कुछ नया करने का हौंसला हो तो कम संसाधनों में भी बेहतर परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। **बेंगलुरू में आयोजित कार्यक्रम में प्रधानाचार्य सोनू मिस्त्री, स्काउट मास्टर सरूपाराम माली एवं पाँच स्काउट को यह अवार्ड दिया गया जिसमें विद्यालय को एक लाख रुपया, प्रमाण पत्र, स्मृति चिह्न, उपयोगी पुस्तकें और तीन वर्ष के लिए 'सेप' मॉड्यूल से नवाजा गया।** साथ ही पूरी टीम को अहमदाबाद से बेंगलुरू की दो तरफा फ्री हवाई यात्रा, दो दिन पाँच सितारा होटल में ठहरने की सुविधा व देशभर के विजेता विद्यालयों और महाविद्यालयों के विद्यार्थियों, शिक्षकों, शिक्षाविदों व पर्यावरण विशेषज्ञों, विप्रो के मुखिया रिशद प्रेमजी, अजीज प्रेमजी विश्वविद्यालय के वी.सी. अनुराग बेहर के साथ संवाद करने का अवसर मिला। प्रदेश के लिए यह गौरवमयी उपलब्धि कई विद्यालयों के लिए प्रेरणा का माध्यम बनेगी।

व.अ./स्काउट मास्टर
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय डोडुआ, सिरोही
मोः 9785597277

स्व-अध्ययन

कोरोना के दौर में स्वाध्याय की प्रासंगिकता

❒ धर्मेन्द्र तिवारी

समकालीन विश्व को कोरोना महामारी ने अन्य किसी संकट की अपेक्षा सर्वाधिक रूप से प्रभावित किया है। चीन के वुहान से प्रारम्भ होकर विश्व के सम्पूर्ण भाग में फैलकर इस महामारी ने लगभग प्रत्येक देश को अपनी चपेट में ले लिया।

कोविड-19 महामारी ने सम्पूर्ण विश्व में एक नवीन स्थिति को उत्पन्न किया है। मानव समाज के सभी क्षेत्रों की तरह शिक्षा जगत भी इससे उत्पन्न चुनौतियों का सामना कर रहा है। शिक्षा विशेष रूप से विद्यालय स्तर की शिक्षा को इस महामारी ने बहुत अधिक प्रभावित किया है। कोरोना महामारी की वजह से सम्पूर्ण विश्व के साथ-साथ भारत में भी विद्यार्थियों को अनेक विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ा है। इस संकट की वजह से विद्यालयों में न केवल नियमित अध्ययन-अध्यापन प्रभावित हुआ बल्कि बोर्ड परीक्षाएँ भी बीच में ही स्थगित करनी पड़ गई। स्थानीय परीक्षाएँ तो रद्द ही कर दी गई। विद्यार्थियों को पूर्व में प्राप्त अंकों के आधार पर नियमानुसार उत्तीर्ण घोषित कर दिया गया।

कोरोना के कारण उत्पन्न लॉकडाउन की स्थिति के चलते विद्यालयों में नियमित अध्ययन-अध्यापन नहीं हो पाने के विकल्प के रुप में सम्पूर्ण भारत के साथ-साथ राजस्थान प्रदेश में भी ऑनलाईन शिक्षण को अपनाया गया। इसके लिए विभिन्न कार्यक्रम जैसे-स्माईन, शिक्षावाणी, शिक्षादर्शन, हवामहल आदि विभिन्न आनलाईन शिक्षण में नवाचार अपनाएँ गए। इन नवीन विभिन्न नवाचारों से निःसंदेश रूप से राजस्थान में स्कूली शिक्षा में एक सर्वथा नवीन क्रांति का सूत्रपात हुआ है। शिक्षा के क्षेत्र में विद्धार्थियों व शिक्षकों में इन नवीन आयामों को अपनाकर निःसंदेह रूप से आपदा को अवसर में बदला हैं। यह नवाचार हम सभी के लिए नया है तथा विद्यार्थियों व शिक्षकों को यह पसंद भी आया है। इस पहल के लिए राजस्थान सरकार व यहाँ का शिक्षा विभाग निर्विवाद रूप

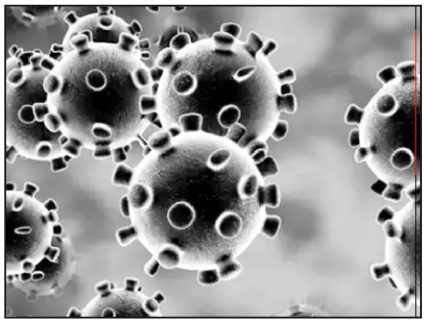

से अत्यधिक धन्यवाद के पात्र हैं।

कोरोना काल के इस विपरीत दौर में सबक लेते हुए विद्यार्थियों को अब अपनी अध्ययन पद्यति में आमूलचूल परिवर्तन करने होंगे। यद्यपि अन्य संकटों की भाँति यह संकट भी इस दिन समाप्त होगा लेकिन कितनें दिन हमें इस चुनौति का सामना करना होगा। विद्यार्थियों को अब ऑनलाइन अध्ययन के साथ-साथ स्वाध्याय की आदत को नवीन जोश के साथ एक चुनौती के रूप में लेना होगा। अब विद्यार्थियों को अपनी दिनचर्या इस तरह से नियमित करनी चाहिए जिससे अपने पाठ्यक्रम को विभाजित कर प्रतिदिन का अध्ययन लक्ष्य निर्धारित करते हुए उसे नियत समय में प्राप्त किया जा सके। इसके लिए विद्यार्थियों को अपनी दिनचर्या प्रातः जागने से लेकर रात को सोने तक एक निश्चित समय-सारणी के अनुसार निर्धारित करनी होगी। यह सर्वविदित है कि विद्यार्थी जीवन सम्पूर्ण मानव जीवन का 'स्वर्ण युग' होता है। विद्यार्थी जीवन में लक्ष्य निर्धारण और उसको प्राप्त करने की क्षमता को पहचानते हुए अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर उसे प्राप्त करने हेतु अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा से अपना सर्वोत्तम प्रयास अतिशीघ्र प्रारम्भ कर देना चाहिए ताकि वह अपने स्वयं के विकास के साथ-साथ अपने देश की उन्नति में अपना सर्वोत्तम योगदान दे सके।

प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान)
रा.उ.मा.वि. सोलियासर,
श्री डूँगरगढ़ (बीकानेर)
मो. 9413402473

www.rajsevak.com

शैक्षिक-चिन्तन

शिक्षा की सार्थकता बनाम उपयोगिता

❒ नारायण दास जीनगर

सामान्यत: शिक्षा की सार्थकता को उपयोगिता से जोड़ा जाता रहा है। गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा इसी विचार की उपज है। व्यावसायिक शिक्षा इसका परिष्कृत स्वरूप है। प्राचीन काल से शिक्षा में नैतिक शिक्षा का समावेश मुख्य रूप से विद्यमान रहा है। गुरुकुल शिक्षा पद्धति में गुरु सर्वप्रथम बालक को संस्कारित, आज्ञापालक एवं व्यवहारिक बनाने पर बल देते थे। हालांकि उस समय भारत में आम आदमी कृषक व्यापारी एवं सेवकों के लिए शिक्षा उपलब्ध नहीं थी बल्कि राजकुमारों एवं ऋषि वंशजों के लिए ही थी। उनके एकाधिकार के कारण शिक्षा प्राप्त करना अन्य लोगों के लिए दुष्कर ही था। धीरे-धीरे व्यापारी एवं व्यापार से जुड़े लोगों के लिए आवश्यकतानुसार शिक्षा उपलब्ध होने लगी। अंग्रेजों के शासन से पूर्व तक शिक्षा आम-आदमी गरीब शोषित एवं पिछड़े लोगों से दूर ही रही। अंग्रेजों ने अपने शासन के लिए शिक्षा को आधार बनाया और इस एकाधिकार को समाप्त करते हुए कर्मचारी (बाबू) प्रशासक वर्ग तैयार किया। मुख्य शासन व्यवस्था (अधिकारी वर्ग) अपने पास ही रखी। इसी कालखण्ड में बाबा साहेब अम्बेडकर जैसों को बड़ी मुश्किल से शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला। जिन्होंने भारतीय संविधान की रचना में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर साबित किया कि शिक्षा पर सबका अधिकार होना चाहिए। शासन को बिना किसी भेद भाव के सबको व अनिवार्य शिक्षा उपलब्ध करवानी चाहिए। भारतीय संविधान में इसका प्रावधान भी किया गया है।

कुछ विद्धानों का मानना है कि शिक्षा जब तक उपयोगी नहीं होगी तब तक सार्थक नहीं हो सकती। वे मानते हैं कि किसी न किसी उपयोग के लिए शिक्षा की आवश्यकता रहती है, उपयोगी होना ही शिक्षा की सार्थकता है। जबकि कुछ लोगों का कहना है कि शिक्षा का सार्थक होना जरूरी है उपयोग व्यक्ति की इच्छा एवं कुशलता पर निर्भर करता है। प्राप्त शिक्षा का उपयोग किस क्षेत्र में व कैसे करें यही व्यक्ति की

रुचि एवं योग्यता पर निर्भर करता है। अत: शिक्षा को सार्थक होना ज्यादा महत्त्वपूर्ण है बनिस्पत उपयोगी होने के।

मेरा मानना है कि शिक्षा अपने आप में परिपूर्ण है। उसके मूल में न तो सार्थकता हैं, न ही उपयोगिता। शिक्षा केवल शिक्षा है जो शिक्षा अर्जित करता रहता है, वह कुछ न कुछ सीखता रहता है और सीखकर वह अपनी समझ व योग्यता में वृद्धि करता रहता है। यही कारण है कि शिक्षा का प्रवाह सतत है। कक्षा 1 से आरम्भ हुई प्रारम्भिक शिक्षा भविष्य की शिक्षा का आधार बनती है। वही शिक्षा भविष्य के विषयों के मूलाधार बनकर उच्च प्राथमिक से माध्यमिक तक सतत चलती है। प्रारम्भिक शिक्षा की गणित, हिन्दी व भाषाएँ उसके जीवन की नींव को मजबूती प्रदान करती हैं। आगे की शिक्षा उस नींव पर सुन्दर जीवन गढ़ने की प्रक्रिया उच्च शिक्षा के माध्यम से चलती रहती है। शिक्षा केवल विद्यालय और महाविद्यालयों में दिए जाने वाले विषय में पारंगत होना मात्र नहीं हैं, वह जीवन पर्यन्त जीवन के साथ चलती रहती है।

मैंने एक सेवारत अध्यापक प्रशिक्षण में अपने संभागी शिक्षकों से चर्चा की शिक्षा क्या है तो किसी ने भी ठीक से उत्तर नहीं दिया, किसी ने शिक्षा कैसे प्राप्त की जाती हैं और कई शिक्षा के प्रकार, माध्यम व विधियों के बारे में बताते रहें परन्तु शिक्षा क्या है? का सही उत्तर नहीं मिल पाया। बाद में प्रशिक्षक के रूप में मैने बताया कि शिक्षा पूर्व ज्ञान में नया ज्ञान जोड़ने के बीच मस्तिष्क में हुए विश्लेषण के उपरान्त लिए गए निर्णय हैं। यह भविष्य के लिए उपयोगी, अच्छा, बेहतर, श्रेष्ठ तथा सही होने पर पूर्व ज्ञान के साथ अटैच (जोड़ना) करना अथवा पूर्वज्ञान को अपडेट (बेहतर) करना शिक्षा है। इसके लिए देखना, सुनना, समझना व लिखना यानी प्रयोग करना उस नए ज्ञान को पक्का करता है। किसी ने कहा है कि-''कोई भी कार्य करने से होता है, सीखकर करने से आसान व सरल हो जाता है, बार-बार या निरन्तर वही कार्य करने से उसमें पारंगत हुआ जाता है।

तो शिक्षा की सार्थकता इसी में हैं कि निरन्तर सीखते हुए अपनी योग्यताओं में बालक से युवा बनने तक वृद्धि करता रहे। यह छात्र जीवन की भी सार्थकता है कि वह खूब मन लगाकर पढ़े और अपने जीवन को ठीक ढंग से गढ़े। जब बालक विद्यालयी शिक्षा पूर्ण कर लेता है तो काफी कुछ समझदार व अपने भविष्य के लिए निर्णय लेने में सक्षम भी हो जाता है। बालक अपनी योग्यताओं व रुचियों को भी अच्छी तरह से पहचानने लगता है। पूर्व योग्यताएँ एवं रुचियाँ ही महाविद्यालय प्रवेश के विषय विशेष को चुनने में मददगार होती हैं। स्नातक के बाद तो केवल एक ही विषय में मास्टर डिग्री प्राप्त कर उस विषय का विशेषज्ञ बन जाते हैं।

देखने में आता है कि कुछ छात्र जिस शिक्षा की बदौलत वे कोई पद प्राप्त कर लेते हैं वे उसे पद को प्राप्त करते ही शिक्षा के महत्त्व को भूल जाते हैं। कई अध्यापक तो सर्विस के बाद कोई अन्य किताब तक नहीं पढ़ते, सिवाय विद्यालयी पाठयक्रम के वो भी केवल कक्षा-कक्ष में।

एक बार गोदरेज कम्पनी के मालिक हवाई जहाज में यात्रा कर रहे थे तो किसी यात्री को ध्यान आया कि ये गोदरेज कम्पनी के मालिक हैं। उस यात्री ने उनसे कहा कि आपकी कम्पनी गोदरेज तो बहुत फैमस है, उसका तो नाम ही काफी है, हर आलमारी को लोग गोदरेज कहने

www.rajsevak.com

लगे हैं जैसे वनस्पति घी को डालडा, वॉशिंग पाउडर को सर्फ, टूथपेस्ट को कॉलगेट फिर भी आप लोग टीवी, अखबार आदि में अनावश्यक विज्ञापन आदि क्यों देते रहते हैं। तो गोदरेज के मालिक ने कहा कि आप पायलट को जाकर बोलो की हवाई जहाज अब आकाश में आ गया है अत: इसका इंजिन बन्द कर दे तो यात्री तपाक से बोला यदि ऐसा करेगा तो जहाज नीचे गिर जाएगा। गोदरेज के मालिक ने कहा- हम लोग भी इसी कारण प्रचार-प्रसार करते हैं। जिसकी बदौलत हम आज यहाँ तक पहुँचे हैं उसे उसी ऊँचाई को कायम रखने के लिए। हमें भी अपनी शिक्षा प्राप्त करते रहना यानी सीखना उस पद को और अधिक प्रभावी एवं अपडेट रखने के लिए सेवारत होने के बाद भी निरन्तर जारी रखना चाहिए।

आज देखने में आता है कि बहुत से अध्यापक जिन्होंने अपने आप को समय के साथ अपडेट नहीं किया, नवीनतम टेक्नोलॉजी को प्रयोग में नहीं लिया, न ही सीखा परन्तु प्रधानाध्यापक या प्रधानाचार्य बन गए उन्हें अपने जानकार अधीनस्थों पर आश्रित रहना पड़ता है। कई बार तो समय पर सूचनाओं का प्रेषण मात्र नहीं होने से नोटिस का सामना भी करना पड़ता है। शिक्षा विद्यालय या महाविद्यालय तक का साथी नहीं बल्कि जीवनभर का साथी है। इसकी सार्थकता इसी में हैं कि वह हमेशा अपने आपको समय, काल, परिस्थिति के अनुसार अपने आपको अपडेट करते रहें। नवीनतम जानकारी, प्रयोगों, टेक्नोलॉजी से न केवल परिचित हों, बल्कि स्वयं उपयोग करने में भी सक्षम बनें, ताकि आप मोबाइल व कम्प्यूटर का भलीभांति प्रयोग कर अपने कार्यों का बेहतर व श्रेष्ठ प्रदर्शन कर सकें। शिक्षा की सार्थकता इसी में है कि वह आपको अधिकाधिक लोक कल्याण के लिए उपयोगी बनाएँ। आप कुछ बनकर ही कुछ लोगों को काबिल बना सकते हैं। आप कुछ लोगों के उपयोग के लिए कुछ नया सृजन कर सकें। आप कुछ नया नवाचार कर आम लोगों का जीवन स्वस्थ, सुन्दर व आसान बना सकें। शिक्षा की सार्थकता जीवन के सार्थक उपयोग में छुपी है। उपयोगी शिक्षा केवल स्वयं के लिए होती है जबकी सार्थक शिक्षा जीवन को उपयोगी बनाती है।

एक बार गुब्बारा बेचने वाला किसी गाँव में आया उसके पास लगभग सभी रंगों के गुब्बारे थे। वह गैस से भरा गुब्बारा आकाश में छोड़ देता बच्चे उसे देख कर अपने लिए गुब्बारा खरीदने के लिए उसको ढूँढ़ते हुए आ जाते और गुब्बारा खरीदते। फिर कुछ देर बाद दुसरा गुब्बारा छोड़ देता। उस गुब्बारे वाले के पास कुछ बच्चे गुब्बारा खरीद रहे थे तभी किसी ने उसका कुर्ता खींचा तो उसने देखा एक छोटा सा सांवला बच्चा है। वह बच्चा बोला आपके पास लाल पीला, नीला, हरा, बैंगनी व गुलाबी रंग के गुब्बारे है परन्तु काले रंग का नहीं है। यदि काले रंग का गुब्बारा होता तो क्या वह भी इसी प्रकार हवा में ऊंचा उठता? गुब्बारे वाले ने उस बच्चे के सर पर हाथ फेरते हुए कहा-कि बेटे ये गुब्बारे अपने रंग व आकार की वजह से ऊपर नहीं उठते बल्कि उसकी वजह से ऊपर उठते हैं जो उसमें भरा गया है।

अत: प्रत्येक बालक के जीवन में शिक्षा के रूप में जो भरा जाए वह सार्थक हो तो उसका जीवन न केवल अपने व अपने परिवार के लिए बल्कि देश व समाज के साथ-साथ, सबके कल्याण के लिए सार्थक बन सके।

प्रकाशन सहायक,
शिविरा प्रकाशन अनुभाग, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर
मो. 9414142641

स्व-अध्ययन

बोरियत से बचने के उपाय

❒ **मदन लाल मीणा**

पढ़ाई करते समय बोरियत से बचने का उपाय : लगातार काम या पढ़ाई करने और एक ही विषय पढ़ने से बोरियत होती है। यह ह्यूमन साइकोलॉजी है। परीक्षा लंबे समय तक चलती है, ऐसे में यह जरूरी कि स्टूडेंट्स पढ़ाई के वैज्ञानिक तरीकों को अपनाएँ और कुछ नयापन लाएँ। लगातार मैथ के फॉर्मूले, केमेस्ट्री के लॉग टेबल आपको बोर कर सकते हैं। यह देखा जाता है कि परीक्षा के दौरान छात्र एक ही विषय को तब तक पढ़ते हैं जब तक उसकी तैयारी पूरी नहीं हो जाती। ऐसा नहीं करना चाहिए।

स्टडी प्लेस बदलते रहें : पढ़ने की जगह में बदलाव करते रहना चाहिए। इसके पीछे का विज्ञान यह है कि दिमाग पढ़ते वक्त पृष्ठभूमि और अनुभूतियों को भी ग्रहण करता है। इसलिए एक जगह की बजाय लाइब्रेरी, कॉफी हाउस, अध्ययन कक्ष आदि का इस्तेमाल करना चाहिए।

नोट्स को बनाए इंट्रेस्टिंग : सिर्फ किताब पढ़ने से बोरियत महसूस हो सकती है। इसलिए नोट्स इंट्रेस्टिंग तरीके से बनाना चाहिए। नोट्स बनाने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आप उसे रेगुलर किताबों में लिखी चीजों की तरह न लिखें और न ही उनका विस्तारपूर्ण तरीका इस्तेमाल करें। कुछ महत्त्वपूर्ण फैक्ट्स की एक श्रेणी तैयार करें, जिससे आप उस टॉपिक से रिलेटेड जो महत्त्वपूर्ण बिन्दु हैं, उनको दिमाग में आसानी से रिवीजन के दौरान बैठा पाएं।

तरीका अपनाएँ स्मार्ट : आज स्मार्ट वर्क की जीत होती है। इसलिए अपनी सहूलियत के हिसाब से खुद स्मार्ट तरीके का ईजाद करें। इसमें ऑडियो-वीडियो मोड का इस्तेमाल कर सकते हैं। वैज्ञानिक और साइकोलॉजिस्ट मानते हैं कि आँखों से देखी और कानों से सुनी चीजें दिमाग में जल्दी बसती है।

वरिष्ठ अध्यापक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
चिड़िया (गिड़ा), बाड़मेर
मो: 9928173922

www.rajsevak.com

आदेश-परिपत्र : अगस्त, 2020

1. शाला दर्पण पोर्टल के माध्यम से सूचनाएँ अपलोड/अपडेट करवाने बाबत्।
2. शाला दर्पण पोर्टल अद्यतन हेतु शाला दर्पण पंचांग जारी करने बाबत्।
3. शाला दर्पण पंचांग (सत्र : 2020-21)।
4. हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा दी गई/वितरित सहायता राशि के संबंध में।
5. भगवान दास टोडी प्रकरण में माननीय उच्च न्यायालय द्वारा पारित निर्णय के आधार पर राज्य सरकार की सेवा में समायोजित कार्मिकों द्वारा बकाया भुगतान के संबंध में दायर अवमानना प्रकरणों में आवश्यक कार्यवाही करने बाबत।
6. शिक्षक दिवस 05 सितम्बर 2020 के अवसर पर झण्डियों का वितरण कर धन संग्रह बाबत।
7. शाला दर्पण पोर्टल पर ऑनलाइन मॉड्यूल प्रारम्भ।

1. शाला दर्पण पोर्टल के माध्यम से सूचनाएँ अपलोड/अपडेट करवाने बाबत।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा-मा/माध्य/शालादर्पण/60304(2)/2016-17/198 दिनांक : 22.06.2020 ● विषयः शाला दर्पण पोर्टल के माध्यम से सूचनाएँ अपलोड/अपडेट करवाने बाबत। ● परिपत्र।

'शाला दर्पण पोर्टल' राज्य के स्कूल शिक्षा विभाग के अत्यंत महत्त्वपूर्ण ऑनलाइन सूचना प्रणाली है, जिसके माध्यम से सीधे संस्था प्रधानों द्वारा सूचनाएँ अपलोड/अपडेट की जाती हैं, जिनका विभिन्न उद्देश्यों हेतु वृहद् स्तर पर उपयोग किया जाता है। इस कार्यालय के समसंख्यक निर्देश पत्र दिनांक 19.10.2016 द्वारा सभी विद्यालयों में एक शाला दर्पण प्रभारी नियत किए जाने हेतु निर्देशित किया गया था, जिसकी सूचना शाला दर्पण पोर्टल पर भी दर्ज की जाती है। शाला दर्पण पोर्टल पर वर्तमान में विभिन्न मॉड्यूल्स के माध्यम से अनेक प्रकार की सूचनाएँ अपडेट की जाती हैं, लेकिन प्रायः देखने में आता है कि कार्य की अधिकता के कारण कई बार शाला दर्पण प्रभारी से कई सूचनाएँ यथासमय एवं त्रुटिरहित अपडेट नहीं हो पाती हैं। अतः इस क्रम में निर्देशित किया जाता है कि संस्थाप्रधान के साथ ही विद्यालयों की विभिन्न गतिविधियों से संबंधित प्रभारियों का भी यह दायित्व होगा कि अपने प्रभार से संबंधित परिशुद्ध सूचना यथा समय शाला दर्पण पोर्टल पर दर्ज/अपडेट हो। उदाहरण के रूप में विद्यालय से संबंधित प्रमुख के संबंध में शाला दर्पण प्रभारी के साथ-साथ अग्रांकित विवरणानुसार संबंधित प्रभारी कार्मिक का भी एतद् द्वारा दायित्व निर्धारण किया जाता हैः-

क्र. सं.	प्रभार का नाम	प्रभारी कार्मिक के उत्तरदायित्व का संक्षिप्त विवरण
1.	कार्यालय प्रभारी	समस्त कार्मिकों के सेवा-अभिलेख के अनुसार शाला दर्पण पर पूर्ण शुद्ध विवरण (प्रपत्र-10) दर्ज करना, कार्यमुक्ति/कार्यग्रहण, इंफ्रास्ट्रक्चर विवरण, विद्यालय प्रोफाइल, कार्मिक की उपस्थिति, अवकाश अद्यतन करना आदि।
2.	कक्षाध्यापक	अपनी कक्षा से संबंधित समस्त छात्रों का प्रवेश/पुनः प्रवेश, नाम पृथक्कीकरण, प्रपत्र-7/7-अ (तृतीय भाषा व वैकल्पिक विषय संबंधित) की पूर्ति, प्रपत्र 9 की परिशुद्ध पूर्ति, छात्र उपस्थिति सूचना, कक्षा क्रमोन्नति, साइकिल/ट्रांसपोर्ट वाउचर हेतु पात्र विद्यार्थियों की सूचना आदि।
3.	निःशुल्क पाठ्य पुस्तक वितरण प्रभारी	निःशुल्क पाठ्य-पुस्तकों से संबंधित सम्पूर्ण विवरण यथा समय शाला दर्पण पर दर्ज करना।
4.	छात्रवृत्ति प्रभारी	छात्रवृत्ति के पात्र सभी विद्यार्थियों से संबंधित सम्पूर्ण विवरण यथा समय शाला दर्पण पोर्टल पर अपलोड करने संबंधी सम्पूर्ण कार्य।
5.	परीक्षा प्रभारी	बोर्ड परीक्षा के ऑनलाइन आवेदन पत्र, यथा समय अंकों/सत्रांकों की फीडिंग, परीक्षा परिणाम तैयार करना, क्रमोन्नति आदि।
6.	एडीएमसी./एसएमसी. प्रभारी	एसडीएमसी./एसएमसी. से संबंधित वार्षिक/अर्द्धवार्षिक/त्रैमासिक/मासिक प्रविष्टियां, प्रशिक्षण सदस्यों का विवरण, बैठकों का विवरण, बैंक खातों संबंधी विवरण आदि।
7.	उत्सव प्रभारी	समय-समय पर आयोजित होने वाले विभिन्न प्रकार के उत्सवों से संबंधित वांछित सूचनाओं की शाला दर्पण पर यथा समय प्रविष्टियां दर्ज करना।

उपर्युक्त समस्त प्रभारों के अतिरिक्त विद्यालय के अन्य प्रभारों से संबंधित सूचना का संधारण भी शाला दर्पण पोर्टल पर किया जाना हो, तो संबंधित प्रभारी यथा समय सही सूचना अद्यतन/दर्ज करवाने हेतु उत्तरदायी होगा।

समस्त संबंधितों द्वारा उपर्युक्त निर्देशों की तत्काल पालना की/कार्रवाई की जानी सुनिश्चित की जाए।

● **(सौरभ स्वामी) आइ.ए.एस.** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

www.rajsevak.com

2. शाला दर्पण पोर्टल अद्यतन हेतु शाला दर्पण पंचांग जारी करने बाबत्।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/माध्य/शाला दर्पण/60306/2019/169 दिनांक : 01.07.2020 ● समस्त पीईईओ/संस्थाप्रधान राजकीय विद्यालय, राजस्थान ● विषयः शाला दर्पण पोर्टल अद्यतन हेतु शाला दर्पण पंचांग जारी करने बाबत्।

'शाला दर्पण पोर्टल' राज्य के स्कूल शिक्षा विभाग की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ऑनलाइन सूचना प्रणाली है, जिसके माध्यम से सीधे विद्यालय द्वारा सूचनाएँ अपलोड/अपडेट की जाती हैं, जिनका विभिन्न उद्देश्यों हेतु व्यापक स्तर पर उपयोग किया जाता है। कुछ विद्यालयों द्वारा डाटा फीडिंग में विलम्ब/लापरवाही अथवा संस्थाप्रधानों की पर्यवेक्षणीय उदासीनता के कारण उपलब्ध समेकित डाटा रिपोर्ट की विश्वसनीयता प्रभावित होती है तथा साथ ही विद्यालय एवं शाला दर्पण हेल्प डेस्क पर भी अनावश्यक कार्यभार में वृद्धि होती है। उपर्युक्त स्थिति के मद्देनजर शाला दर्पण पोर्टल पर समयबद्ध एवं परिशुद्ध डाटा फीडिंग सुनिश्चित करने हेतु इस कार्यालय के निर्देश परिपत्र क्रमांकः शिविरा-मा/माध्य/शाला दर्पण/60304(2)/2016-17 दिनांकः 22.06.2020 द्वारा शाला दर्पण प्रभारी के सहयोगार्थ सम्बन्धित विभिन्न प्रभारियों की भी जिम्मेदारी तय की गई है। इसी क्रम में शाला दर्पण पोर्टल पर समयबद्ध एवं परिशुद्ध डाटा फीडिंग सुनिश्चित करने हेतु एतद् द्वारा शाला दर्पण पंचांग जारी किया जा रहा है। सभी संस्थाप्रधानों को निर्देशित किया जाता है कि संलग्न पंचांग में निर्धारित तिथि/समयावधि के अनुसार प्रतिदिन/प्रतिमाह/त्रैमासिक/अर्द्धवार्षिक आधार पर करणीय कार्य/प्रविष्टियाँ निर्दिष्ट तिथि/समयावधि के दौरान संपादित करवाया जाना सुनिश्चित करें।

समस्त सम्बन्धित संलग्न पंचांग को एक स्थाई विभागीय अभिलेख के रूप में संधारित करते हुए तदनुरूप प्रदत्त निर्देशों की सतत पालना एवं क्रियान्विति सुनिश्चित करेंगे।

● संलग्नः उपर्युक्तानुसार (शाला दर्पण पंचांग)

● **(सौरभ स्वामी) आइ.ए.एस.** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

3. शाला दर्पण पंचांग (सत्र : 2020-21)

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/शाला दर्पण/60306/2019/170 दिनांक 01.07.2020 ● शाला दर्पण पंचांग (सत्र : 2020-21)।

आवश्यक निर्देश :-

1. शाला दर्पण पोर्टल पर प्रतिदिन, प्रतिमाह, त्रैमासिक एवं अर्द्धवार्षिक किए जाने वाले कार्यों की सूची प्रारम्भ में दे दी गई है, तदनुसार शाला दर्पण पोर्टल को समयबद्ध रूप से अद्यतन किया जाना सुनिश्चित करें।
2. शाला दर्पण प्रभारी द्वारा विद्यालय के समस्त कार्य प्रभारियों से प्रतिमाह शाला दर्पण पोर्टल पर उनके प्रभार से संबंधित सूचना अद्यतन/प्रविष्टि पूर्णता का प्रमाण पत्र प्राप्त किया जावे।
3. शाला दर्पण पंचांग में उल्लेखित गतिविधियों में विशेष परिस्थितिवश आंशिक परिवर्तन की स्थिति में तदनुसार संशोधन किया जा सकेगा।
4. पंचांग में उल्लेखित गतिविधियों के अतिरिक्त सामयिक कार्यों को शाला दर्पण पोर्टल पर निर्देशानुसार अद्यतन करना सुनिश्चित करें।

शाला दर्पण पोर्टल पर प्रतिदिन किए जाने वाले कार्य

क्र. सं.	कार्य का विवरण	शाला दर्पण प्रभारी के सहयोगार्थ जिम्मेदार प्रभारी/कार्मिक
1.	STAFF DAILY ATTENDANCE मॉड्यूल में विद्यालय स्टाफ की दैनिक उपस्थिति अपलोड करना।	संस्थाप्रधान/कार्यालय प्रभारी
2.	LEAVE APPROVAL मॉड्यूल में विद्यालय स्टाफ से प्राप्त अवकाश प्रकरण का यथोचित निस्तारण करना।	संस्थाप्रधान/कार्यालय प्रभारी

शाला दर्पण पोर्टल पर प्रतिमाह किए जाने वाले कार्य

क्र. सं.	कार्य का विवरण	शाला दर्पण प्रभारी के सहयोगार्थ जिम्मेदार प्रभारी/कार्मिक
1.	छात्र उपस्थिति रजिस्टर व शाला दर्पण पोर्टल प्रपत्र-5 का मिलान (1 से 5 तारीख के मध्य)	कक्षाध्यापक
2.	स्टाफ उपस्थिति रजिस्टर व शाला दर्पण पोर्टल प्रपत्र-3A(LOCK STAFF DETAIL) का मिलान (1 से 5 तारीख के मध्य)	संस्थाप्रधान/कार्यालय प्रभारी
3.	प्रतिमाह आयोजित SDMC/SMC बैठक सूचना प्रविष्टि अपलोड करना।	SDMC/SMC प्रभारी
4.	प्रतिमाह आयोजित सामुदायिक बाल सभा प्रविष्टि अपलोड करना।	बाल सभा प्रभारी
5.	CLASS-WISE MONTHLY TOTAL WORKING DAYS ENTRY व Student Wise Monthly Attendance Entry पूर्ण करना (1 से 5 तारीख के मध्य)	कक्षाध्यापक

शाला दर्पण पोर्टल पर त्रैमासिक किए जाने वाले कार्य (जुलाई, अक्टूबर, जनवरी, अप्रेल में)

क्र. सं.	कार्य का विवरण	शाला दर्पण प्रभारी के सहयोगार्थ जिम्मेदारी प्रभारी/कार्मिक
1.	SDMC/SMC मॉड्यूल में SCHOOL DEVELOPMENT AND MANAGEMENT COMMITTEE (QUATERLY DATA ENTRY) की प्रविष्टि पूर्ण करना।	SDMC/SMC प्रभारी

www.rajsevak.com

शाला दर्पण पोर्टल पर अर्द्धवार्षिक किए जाने वाले कार्य (जुलाई व जनवरी)

क्र. सं.	कार्य का विवरण	शाला दर्पण प्रभारी के सहयोगार्थ जिम्मेदारी प्रभारी/कार्मिक
1.	कार्मिकों के प्रपत्र 10 प्रिंट लेकर उसका सेवा पुस्तिका के विवरण से अक्षरशः मिलान करना।	संस्थाप्रधान/कार्यालय प्रभारी
2.	विद्यालय प्रोफाइल अवलोकन व आवश्यकतानुसार अपडेट किया जाना।	संस्थाप्रधान/कार्यालय प्रभारी
3.	इंफ्रास्ट्रक्चर मॉड्यूल की जाँच/सत्यापन व आवश्यकतानुसार अपडेट किया जाना।	संस्थाप्रधान/कार्यालय प्रभारी

शाला दर्पण पोर्टल पर माहवार किए जाने वाले कार्यों हेतु शाला दर्पण पंचांग (सत्र : 2020–21)

क्र. सं.	माह	शाला दर्पण पोर्टल पर किए जाने वाले कार्य	शाला दर्पण प्रभारी के सहयोगार्थ जिम्मेदारी प्रभारी /कार्मिक
1	जुलाई	1. प्रतिमाह किए जाने वाले सभी कार्य	संबंधित प्रभारीगण
		2. प्रत्येक कक्षा के विद्यार्थियों के परीक्षा परिणाम की जाँच तथा उपस्थिति रजिस्टर के अनुसार प्रत्येक कक्षा के विद्यार्थियों का मिलान करना।	कक्षाध्यापक
		3. FTB मॉड्यूल में नोडल से प्राप्त पुस्तकों तथा विद्यार्थियों को वितरित पुस्तकों की प्रविष्टि करना।	FTB प्रभारी
		4. नवप्रवेशित/एनएसओ. विद्यार्थियों का शाला दर्पण पर विवरण दर्ज करना व प्रपत्र–7, 7ए 9 की पूर्ति करना।	कक्षाध्यापक
		5. SDMC/SMC मॉडयूल की विभिन्न प्रविष्टियों की जाँच एवं अद्यतन किया जाना।	SDMC/SMC प्रभारी
		6. पूरक परीक्षा परिणाम की प्रविष्टि एवं प्रमाण–पत्र जनरेट करना।	परीक्षा प्रभारी
2.	अगस्त	1. प्रति माह किए जाने वाले सभी कार्य	संबंधित प्रभारीगण
		2. नवप्रवेशित/एनएसओ. विद्यार्थियों का शाला दर्पण पर विवरण दर्ज करना व प्रपत्र–7, 7ए व 9 की पूर्ति करना।	कक्षाध्यापक
		3. FTB मॉड्यूल में वितरित पुस्तकों की प्रविष्टियों की जाँच तथा अतिरिक्त माँग की प्रविष्टि करना।	FTB प्रभारी
		4. शाला दर्पण पर विद्यार्थियों के रोल नम्बर आवंटित किया जाना।	कक्षाध्यापक/ परीक्षा प्रभारी
3.	सितम्बर	1. प्रति माह किए जाने वाले सभी कार्य	संबंधित प्रभारीगण
		2. छात्रवृत्ति हेतु विद्यार्थियों की सूचना छात्रवृत्ति मॉड्यूल में अपडेट करना।	छात्रवृत्ति प्रभारी
		3. प्रथम परख के प्राप्तांक की प्रविष्टि करना।	परीक्षा प्रभारी
		4. निःशुल्क साइकिल वितरण संबंधी प्रविष्टियों की जाँच एवं अपडेट करना।	संबंधित प्रभारी
		5. ट्रांसपोर्ट वाउचर संबंधी प्रविष्टियों की जाँच एवं अपडेट करना।	संबंधित प्रभारी
		6. FTB मॉड्यूल में प्रविष्टियों की जाँच तथा अतिरिक्त माँग की प्रविष्टि करना।	FTB प्रभारी
		7. सीसीई./एसआईक्यूई. संचालित विद्यालयों में प्रथम योगात्मक आकलन से संबंधित पूर्तियाँ एसआईक्यूई. मॉड्यूल में पूर्ण करना।	संबंधित प्रभारी/ विषयाध्यापक
		8. बोर्ड परीक्षा आवेदन पत्र की तैयारी हेतु विद्यार्थियों के डाटा का एस.आर. से मिलान।	कक्षाध्यापक
4.	अक्टूबर	1. प्रतिमाह किए जाने वाले सभी कार्य	संबंधित प्रभारीगण
		2. छात्रवृत्ति हेतु विद्यार्थियों की सूचना छात्रवृत्ति मॉड्यूल में अपडेट करना।	छात्रवृत्ति प्रभारी
		3. निःशुल्क साइकिल वितरण संबंधी प्रविष्टियों की जाँच एवं अपडेट करना।	संबंधित प्रभारी
		4. ट्रांसपोर्ट वाउचर संबंधी प्रविष्टियों की जाँच एवं अपडेट करना।	संबंधित प्रभारी
		5. FTB मॉड्यूल में प्रविष्टियों की जाँच एवं मॉड्यूल की अगले सत्र हेतु निःशुल्क पाठ्य पुस्तकों की माँग को लॉक करना।	FTB प्रभारी
5.	नवम्बर	1. प्रति माह किए जाने वाले सभी कार्य	संबंधित प्रभारीगण
		2. द्वितीय परख के अंकों की रिजल्ट मॉड्यूल में प्रविष्टि पूर्ण करना।	परीक्षा प्रभारी
6.	दिसम्बर	1. प्रति माह किए जाने वाले सभी कार्य	संबंधित प्रभारीगण
		2. सीसीई./एसआईक्यूई. संचालित विद्यार्थियों में द्वितीय योगात्मक आंकलन से संबंधित प्रविष्टियाँ एसआईक्यूई. मॉड्यूल में पूर्ण करना।	संबंधित प्रभारी/ विषयाध्यापक
7.	जनवरी	1. प्रति माह किए जाने वाले सभी कार्य	संबंधित प्रभारीगण
		2. कार्मिकों के प्रपत्र–10 का प्रिंट लेकर उसका सेवा–पुस्तिका के विवरण अक्षरशः मिलान करना।	संस्थाप्रधान/ कार्यालय प्रभारी
		3. अर्द्धवार्षिक परीक्षा के अंकों की प्रविष्टि करना।	परीक्षा प्रभारी
		4. विद्यालय प्रोफाइल अवलोकन व आवश्यकतानुसार अपडेट किया जाना।	संस्थाप्रधान/ कार्यालय प्रभारी

www.rajsevak.com

		5. इंफ्रास्ट्रक्चर मॉड्यूल जाँच/सत्यापन व आवश्यकतानुसार अपडेट किया जाना।	संस्थाप्रधान/ कार्यालय प्रभारी
		6. SDMC/SMC मॉड्यूल की प्रविष्टियों की जाँच एवं अद्यतन किया जाना।	SDMC/SMC प्रभारी
8.	फरवरी	1. प्रति माह किए जाने वाले सभी कार्य	संबंधित प्रभारीगण
		2. सत्रांकों की प्रविष्टि करना।	परीक्षा प्रभारी
		3. Teacher Examiner Data Mapping की प्रविष्टि करना।	संस्थाप्रधान/ कार्यालय प्रभारी
		4. एसआईक्यूई. मॉड्यूल संबंधित प्रविष्टियाँ पूर्ण करना।	संबंधित प्रभारी
9.	मार्च	1. प्रति माह किए जाने वाले सभी कार्य	संबंधित प्रभारीगण
10.	अप्रैल	1. प्रति माह किए जाने वाले सभी कार्य	संबंधित प्रभारीगण
		2. वार्षिक परीक्षा के अंकों की फीडिंग तथा परीक्षा परिणाम तैयार करना।	परीक्षा प्रभारी
		3. वार्षिक परीक्षा परिणाम हेतु ग्रीन शीट को लॉक करना व विद्यार्थियों की अंकतालिका शाला दर्पण से डाउनलोड करना।	परीक्षा प्रभारी
11.	मई	1. प्रति माह किए जाने वाले सभी कार्य	संबंधित प्रभारीगण
		2. स्थानीय परीक्षा परिणाम की जाँच	परीक्षा प्रभारी
12.	जून	1. प्रति माह किए जाने वाले सभी कार्य	संबंधित प्रभारीगण
		2. बोर्ड परीक्षा परिणाम पश्चात् शाला दर्पण पर कक्षोन्नति/परिणाम अद्यतन करना।	परीक्षा प्रभारी

● **निदेशक,** माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

4. हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर द्वारा दी गई/वितरित सहायता राशि के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर ● दिनांक : 07-07-2020 ● अनौपचारिक टिप्पणी

हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर द्वारा सभी श्रेणी के कार्मिकों को विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत वर्ष 2019-20 एवं अप्रेल 2020 से जून 2020 तक दी गई सहायता राशि का वितरण किया गया है। वितरित/दी गई सहायता राशि का विवरण :-

क्र. सं.	योजनाओं का नाम	प्रकरण संख्या	राशि
1.	मृतक कर्मचारियों के आश्रितों को दी गई सहायता	183	2,59,00000/-
2.	बालिका विवाह उपहार योजना अन्तर्गत	500	55,00,000/-
3.	व्यवसायिक शिक्षा अन्तर्गत सहायता	276	27,60,000/-
4.	अजमेर बोर्ड की सैकण्डरी/वरिष्ठ उपाध्याय में 70% या अधिक अंक प्राप्त करने पर सहायता	56	6,16,000/-
5.	शिक्षा विभाग के राज्य कर्मचारियों को बालिका शिक्षा स्नातक/ स्नातकोत्तर में अध्ययनरत होने पर ऋण	11	5,55,000/-
अप्रेल 2020 से जुन 2020			
1.	मृतक कर्मचारियों को आश्रित को सहायता	14	20,00000/-
2.	बालिका विवाह उपहार योजना अन्तर्गत	346	38,06000/-

● **उप निदेशक** (प्रशासन) एवं **सचिव** हितकारी निधि माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

5. भगवान दास टोडी प्रकरण में माननीय उच्च न्यायालय द्वारा पारित निर्णय के आधार पर राज्य सरकार की सेवा में समायोजित कार्मिकों द्वारा बकाया भुगतान के संबंध में दायर अवमानना प्रकरणों में आवश्यक कार्यवाही करने बाबत।

● कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/माध्य/अनुदान दिनांक : 20.07.2020 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय-माध्यमिक, राजस्थान। ● विषयः भगवान दास टोडी प्रकरण में माननीय उच्च न्यायालय द्वारा पारित निर्णय के आधार पर राज्य सरकार की सेवा में समायोजित कार्मिकों द्वारा बकाया भुगतान के संबंध में दायर अवमानना प्रकरणों में आवश्यक कार्यवाही करने बाबत्। ● प्रसंगः वरिष्ठ संयुक्त विधि परामर्शी का पत्रांक प.17(80) माध्य/शिक्षा-2/वि.प्र./2018 जयपुर दिनांक 10.07.2020

उपर्युक्त विषयान्तर्गत शासन के संदर्भित पत्र के क्रम में निर्देशानुसार लेख है कि भगवान दास टोडी प्रकरण में माननीय उच्च न्यायालय द्वारा पारित निर्णय के आधार पर राज्य सरकार की सेवा में समायोजित कार्मिकों द्वारा बकाया भुगतान के संबंध में दायर अवमानना प्रकरणों में वित्तीय स्वीकृति हेतु प्रस्ताव भिजवाये जाने के संबंध में वित्त विभाग ने निम्न निर्देश प्रदान किए हैं। अतः भविष्य में प्रेषित किए जाने वाले प्रस्तावों के साथ 22 बिन्दुओं की चैकलिस्ट एवं अन्य सूचनाओं के अतिरिक्त निम्न सूचनाएँ भी भिजवाना सुनिश्चित करें:-

1. भगवान दास टोडी प्रकरण में पारित निर्णय दिनांक 06.11.2015 से संबंधित अवमानना प्रकरणों में मुख्य सचिव महोदय की अध्यक्षता में आयोजित बैठक (कार्यवाही विवरण दिनांक 21.08.2019) में लिए गए निर्णय की पालना सुनिश्चित की जावें।
2. भगवान दास टोडी प्रकरण के आधार पर निस्तारित न्यायिक प्रकरणों की पालना की सहमति हेतु प्रस्ताव इस कार्यालय को प्रेषित किए जाने से पूर्व **'रिजन्ड आदेश'** जारी किए जाए। यदि तदनुसार पूर्व

www.rajsevak.com

अनुदानित संस्थाओं के प्रति राज्य सरकार की जिम्मेदारी हो तभी तथ्यपूरक प्रस्ताव इस कार्यालय को प्रेषित किए जाए।

3. संस्था को आवंटित भूमि के संबंध में वित्त विभाग द्वारा दिए गए निर्देशानुसार प्रकरण का गहन परीक्षण कर प्रस्ताव प्रेषित करते समय निम्न प्रमाणित वांछित सूचना भी उपलब्ध कराएँः-

a) संस्था का नाम व जिस भूमि व भवन पर संस्था संचालित है, उस पर किसका स्वामित्व है का उल्लेख किया जाए।

b) क्या संस्था को जमीन सरकार द्वारा निशुल्क अथवा रियायती दर पर आवंटित की गई एवं भूमि की वर्तमान स्थिति क्या है?

c) संस्था को सरकार द्वारा अब तक कितना अनुदान प्रदान किया गया है, जिसका वर्षवार विवरण उपलब्ध करवाया जाए।

d) संस्था के कितने कार्मिकों का राज्य सरकार में समायोजन हो चुका है।

e) यदि संस्था द्वारा सरकार से भूमि प्राप्त की गई है तो कार्मिकों के समायोजन पश्चात सरकार द्वारा जमीन के अधिग्रहण के सम्बन्ध में की गई कार्यवाही से अवगत करावें।

f) यदि सरकार द्वारा संस्था को शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से जिन शर्तों के साथ जमीन आवंटित की गई थी, तो क्या संस्था द्वारा उन शर्तों की पालना की जा रही है। यदि नहीं तो संस्था के विरुद्ध की गई कार्यवाही से अवगत करावें।

4. वरिष्ठ संयुक्त विधि परामर्शी के पत्रांक प.18(286) प्रा.शि./वि.प्र. /2018 जयपुर दिनांक 24.06.2020 के निर्देशानुसार वित्त विभाग के निर्देशों के अनुसार भगवान दास टोडी कवर्ड प्रकरणों में निम्नानुसार जानकारी उपर्युक्त सूचनाओं के अतिरिक्त निम्न तालिका में भी सूचना भिजवाना सुनिश्चित करेंः-

संस्था का नाम	यदि संस्था को भू आवंटन राज्य सरकार द्वारा किया गया है तो आवंटित भूमि की वर्तमान स्थिति	आदिनांक राज्य सरकार द्वारा स्वीकृत अनुदान राशि (वर्ष वार प्रामाणिक विवरण)	संस्था के कार्मिकों की संख्या जो राज्य सरकार में समायोजित हुए है (कार्मिकों के नाम व पद)
1	2	3	4

अतः भविष्य में भगवान दास टोडी प्रकरण से कवर्ड प्रकरणों में यदि विभागीय देयता उत्पन्न होती है तो उपर्युक्त बिन्दुओं की संपूर्ण पूर्ति पश्चात् ही वित्तीय स्वीकृति जारी करने हेतु प्रस्ताव इस कार्यालय में भिजवाना सुनिश्चित करें।

● **(सौरभ स्वामी) आइ.ए.एस.** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

6. शिक्षक दिवस 05 सितम्बर 2020 के अवसर पर झण्डियों का वितरण कर धन संग्रह बाबत।

राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान● कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर क्रमांकः शिविरा-मा/राशिकप्र/31582/2020-21● दिनांक : 24.07.2020 ● 1. समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी। 2. समस्त जिला शिक्षा अधिकारी, मुख्यालय (माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा)। 3. समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी। 4. सम्पादक, शिविरा पत्रिका। ● विषयः शिक्षक दिवस 05 सितम्बर के अवसर पर झण्डियों का वितरण कर धन संग्रह बाबत।

माननीय सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन, भूतपूर्व राष्ट्रपति की जन्म तिथि 05 सितम्बर, 2020 को शिक्षक दिवस के रूप में मनाने, समस्त शिक्षक समुदाय के प्रति समुचित आदर एवं सम्मान व्यक्त करने तथा शिक्षकों के कल्याणार्थ धन संग्रह करने के लिए देश के समस्त नगरों, ग्राम खण्डों, पंचायत समितियों एवं उच्च माध्यमिक/माध्यमिक/उच्च प्राथमिक /प्राथमिक विद्यालयों (राजकीय/गैर राजकीय)के स्तर पर शिक्षक दिवस को उल्लास एवं शालीनता से पूर्व की भाँति मनाया जावे। इस सम्बन्ध में कृपया निम्नानुसार कार्यवाही सुनिश्चित करें।

1. **झण्डियों के जिलेवार लक्ष्य के अनुसार धनराशि संग्रहः-** शिक्षक वर्ग के कल्याणार्थ विभिन्न योजनाओं का राष्ट्रीय स्तर पर संचालन करने हेतु झण्डियों की बिक्री से धन राशि एकत्रित की जानी होती है। तद्विषयक शिक्षकों के कल्याणार्थ 36.00 लाख रुपये की धनराशि संग्रह किए जाने का जिलेवार संलग्न विवरणानुसार लक्ष्य निर्धारित किया हुआ है। शिक्षक कल्याण कोष में धन-संग्रह पूर्ण मनोयोग एवं सम्पूर्ण प्रयास से एक अभियान के रूप में **शिक्षक दिवस 05 सितम्बर से झण्डियों की बिक्री का शुभारंभ कर 30.09.2020 तक शिक्षकों के कल्याणार्थ धन संग्रह किया जाना है। तत्पश्चात् एकत्रित धनराशि सचिव कोषाध्यक्ष राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान शिक्षा विभाग, राजस्थान, बीकानेर को एकत्रित धनराशि का बैंक ड्राफ्ट भेजा जावे।**

2. **धन संग्रह हेतु शिक्षा अधिकारी एवं शिक्षक वर्ग व अन्य का सहयोगः** लक्ष्य की पूर्ति के लिए शिक्षा जगत के समस्त वर्ग के अधिकारी, व्याख्याता, अध्यापक, कर्मचारी एवं पंचायत समितियों के अधीन कार्यरत विद्यालयों के शिक्षकों (राजकीय/गैर राजकीय) छात्र/छात्रा से इस कार्य को सम्पन्न कराने, दानस्वरूप धन एकत्रित करने एवं अपना सम्पूर्ण योगदान करने हेतु निवेदन किया जावे ताकि धन संग्रह अधिकाधिक हो सके एवं लक्ष्य की प्राप्ति संभव होकर शिक्षकों के कल्याणार्थ अनेक अन्य योजनाएँ प्रारम्भ हो सके।

3. **धन संग्रह हेतु अन्य सुप्रसिद्ध संस्थाओं एवं दानदाताओं का सहयोगः**

i. योजना की सफलता के लिए स्थानीय निकाय, चैम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज, रोटरी क्लब, लॉयन्स क्लब, जर्नलिस्ट एसोसिएशन, शिक्षक संघों, पत्रकार बन्धुओं एवं संघों, अन्य विशिष्ठ जन समुदाय एवं व्यक्तियों से शिक्षकों के कल्याणार्थ धन संग्रह के लिए सहयोग प्राप्ति हेतु बैठकों का आयोजन कर निवेदन किया जावे ताकि लक्ष्य की प्राप्ति हो सके एवं इन्हें इस अवसर की उपादेयता तथा कार्यक्रमों की जानकारी हो सके।

ii. स्वेच्छा से चन्दा एवं दानदाताओं से दान स्वरूप धन संग्रह हेतु औद्योगिक प्रतिष्ठानों/उद्योगपतियों को कार्यक्रमों की जानकारी सहित उदारता से सहयोग करने हेतु व्यक्तिशः एवं इनके संगठनों से निवेदन करना। दान की कोई सीमा नहीं है। दानदाताओं का नाम, पता एवं राशि के उल्लेख सहित अलग से पत्र प्रेषित करें ताकि धन्यवाद का पत्र प्रेषित किया जा सके।

www.rajsevak.com

4. **योजना की सफलता हेतु कार्यक्रमों का आयोजनः–** धन संग्रह हेतु इस अवसर पर विभिन्न शैक्षिक, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाना आवश्यक है ताकि समाज में शिक्षकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका की जानकारी परिलक्षित हो सके। ऐसे कार्यक्रमों में किसी भी सम्माननीय एवं सुप्रसिद्ध व्यक्तियों को आमंत्रित किया जा सकता है।

5. **धन संग्रह हेतु प्रचार, प्रसार, सांस्कृतिक तथा अन्य कार्यक्रमों का आयोजनः–** जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय (माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा) अपने जिले में एवं संस्थाप्रधान उच्च माध्यमिक/माध्यमिक/उच्च प्राथमिक/प्राथमिक विद्यालयों में उपर्युक्त कार्यक्रमों के अतिरिक्त अन्य कार्यक्रम भी निम्नानुसार आयोजित करें:–

i. विशिष्ठ स्थानों पर वर्णनात्मक पोस्टरों, सिनेमा, स्लाइडों, दूरदर्शन, टेलिविजन अखिल भारतीय एवं स्थानीय समाचार पत्रों के माध्यम से प्रचार-प्रसार करवाना।

ii. केन्द्र सरकार से प्राप्त पोस्टर्स का वितरण करना, पोस्टर को उचित स्थान पर लगाया जावे।

iii. सिनेमा मालिकों/प्रदर्शकों से 05 सितम्बर को एक शो की आय राष्ट्रीय कल्याण प्रतिष्ठान के लिए दान करने का अनुरोध करना।

iv. राजकीय/गैर राजकीय शिक्षण संस्थाओं सहित विभिन्न संगठनों, शिक्षकों द्वारा उत्कृष्ट एवं सराहनीय कार्य करने पर उन्हें सम्मानित करने जैसे विशेष समारोह आयोजित किए जा सकते हैं। शिक्षकों को भावी पीढ़ी के निर्माता के रूप में प्रस्तुत करते हुए उनके जीवनवृत्त, योगदान तथा दृष्टिकोणों पर वाद-विवाद प्रतियोगिताओं एवं संगोष्ठियों आदि का आयोजन किया जाए।

v. सांस्कृतिक कार्यक्रम, वाद-विवाद प्रतियोगिताएँ, संगोष्ठियाँ, खेलकूद प्रतियोगिताएँ, मैत्रीपूर्ण क्रिकेट, फुटबॉल, टेबल टेनिस, टेनिस, बैडमिंटन, खो-खो आदि कार्यक्रमों का आयोजन।

vi. सांस्कृतिक संगठनों एवं शिक्षक संघों, शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से शिक्षक दिवस से एक या दो दिन पूर्व विशेष मनोरंजन कार्यक्रम आयोजित करवाकर कोष के लिए धन संग्रह करवाना।

6. **शिक्षकों के कल्याणार्थ प्रतिष्ठान के लिए धन संग्रह हेतु उत्तरदायित्वः–** समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, समस्त जिलों के शिक्षा अधिकारियों, मुख्यालयों (माध्यमिक/प्रारंभिक) द्वारा राजकीय/गैर राजकीय विद्यालयों में झण्डियों का वितरण करवाकर शिक्षकों के कल्याणार्थ शिक्षक दिवस दिनांक 05.09.2020 को झण्डियों की बिक्री का शुभारंभ कर धन-संग्रह करवाना। धन संग्रह किए जाने एवं शिक्षक दिवस 05 सितम्बर के समस्त कार्यक्रमों को शालीनता एवं पूर्ण उत्साह से सम्पन्न कराए जाने तथा प्रतिष्ठान के लिए अपना सम्पूर्ण सहयोग एवं मार्गदर्शन प्रदान करने की कार्यवाही करना।

7. **झण्डियों का मूल्य, वितरण व्यवस्था एवं लक्ष्य अनुसार धन संग्रहः**

i. झण्डियों की बिक्री मूल्य 2/- (दो रुपये) निर्धारित की गई है।

ii. राज्य में जिला शिक्षा अधिकारी, मुख्यालय (माध्यमिक/ प्रारंभिक शिक्षा), जयपुर को सीधे ही जिलों के जिला शिक्षा अधिकारी, मुख्यालय (माध्यमिक) को झण्डियों का वितरण किया जाएगा।

iii. जिले के जिला शिक्षा अधिकारी, मुख्यालय (माध्यमिक) अपने अधीनस्थ मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारियों, उच्च माध्यमिक एवं माध्यमिक (राजकीय/गैर राजकीय) विद्यालयों में झण्डियों का वितरण करेंगे तथा निर्धारित लक्ष्य के अनुसार मार्गदर्शन एवं धन संग्रह करवाएँगे। झण्डियों के विक्रय से विद्यालयों द्वारा संग्रहित धनराशि संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक द्वारा एकत्रित की जाएगी तथा उस धनराशि का एक ही ड्राफ्ट निदेशालय में भिजवाए। ध्यान रखें कि विद्यालय स्तर से सीधे ही निदेशालय को ड्राफ्ट नहीं भिजवावें।

iv. जिला शिक्षा अधिकारी, मुख्यालय (प्रारंभिक शिक्षा) अपने अधीनस्थ मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारियों एवं पीईईओ./प्रा./उप्रा. (राजकीय/गैर राजकीय) विद्यालयों से धन संग्रह हेतु मार्गदर्शन देंगे तथा धन संग्रह करवाएँगे एवं संग्रहित राशि जिला शिक्षा अधिकारी, मुख्यालय (प्रारंभिक शिक्षा) झण्डियों के विक्रय से एकत्रित राशि का समेकित बैंक ड्राफ्ट निदेशालय को भेजेंगे।

8. **झण्डियों की बिक्री से प्राप्त राशि कहाँ से और किसको कैसे भेजी जावेः–** कृपया झण्डियों की बिक्री एवं अन्य आयोजनीय कार्यक्रमों से प्राप्त धनराशि का बैंक ड्राफ्ट राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर (National Foundation For Teachers Welfare Fund Sec. Edu. Raj. Bikaner) के नाम बनाकर प्रेषित करें।

अतः हम समस्त का उत्तरदायित्व है कि 05 सितम्बर शिक्षक दिवस को पूर्ण शालीनता एवं उत्साहपूर्वक मनाएं एवं इस कल्याणकारी योजना में अधिक से अधिक झण्डियों की बिक्री पर (राजकीय/गैर राजकीय संस्थाओं से) धनराशि जुटाने हेतु अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

नोटः–

1. जिला शिक्षा अधिकारी, मुख्यालय (माध्यमिक/प्रारंभिक) द्वारा जो झण्डिया विद्यालयों में विक्रय हेतु वितरण की जाती हो उस विक्रय से प्राप्त राशि के बैंक ड्राफ्ट विद्यालयों द्वारा सीधे ही निदेशालय भेजे जाते थे, के क्रम में निर्देशित किया जाता है कि अब उक्त एकत्रित धनराशि निदेशालय को विद्यालयों द्वारा सीधे न भेजी जाकर जिला शिक्षा अधिकारी स्तर पर संग्रहित कर जिले का एक ही बैंक ड्राफ्ट बनाकर निदेशालय को प्रेषित किया जाए।
2. बैंक ड्राफ्ट भिजवाने हेतु पता-सचिव कोषाध्यक्ष, राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

● **उप निदेशक (प्रशासन)** राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

www.rajsevak.com

राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान, बीकानेर
राजस्थान राज्य के लिए संग्रह हेतु जिलेवार लक्ष्य
माध्यमिक शिक्षा हेतु (सत्र 2020–21)

जिला शिक्षा अधिकारी, मुख्यालय (माध्यमिक शिक्षा)	आवंटित झण्डिया	आवंटित राशि (लक्ष्य निर्धारित)
1. चूरू मण्डल		
चूरू	30,000	60,000
झुंझुनूं	50,000	1,00,000
सीकर	50,000	1,00,000
योग	**1,30,000**	**2,60,000**
2. जयपुर मण्डल		
जयपुर	60,000	1,20,000
अलवर	47,500	95,000
दौसा	25,000	50,000
योग	**1,32,500**	**2,65,000**
3. उदयपुर मण्डल		
उदयपुर	45,000	90,000
चित्तौड़गढ़	20,000	40,000
बाँसवाड़ा	20,000	40,000
डूँगरपुर	17,500	35,000
राजसमन्द	17,500	35,000
प्रतापगढ़	17,500	35,000
योग	**1,37,500**	**2,75,000**
4. भरतपुर मण्डल		
भरतपुर	40,000	80,000
सवाई माधोपुर	22,500	45,000
करौली	22,500	45,000
धौलपुर	20,000	40,000
योग	**1,05,000**	**2,10,000**
5. जोधपुर मण्डल		
जोधपुर	45,000	90,000
बाड़मेर	20,000	40,000
जैसलमेर	10,000	20,000
योग	**75,000**	**1,50,000**
कोटा मण्डल		
कोटा	50,000	1,00,000
बूँदी	17,500	35,000
झालावाड़	17,500	35,000
बाराँ	17,500	35,000
योग	**1,02,500**	**2,05,000**
पाली मण्डल		
पाली	32,500	65,000
जालोर	20,000	40,000
सिरोही	20,000	40,000
योग	**72,500**	**1,45,000**
बीकानेर मण्डल		
बीकानेर	35,000	70,000
गंगानगर	35,000	70,000
हनुमानगढ़	32,500	65,000
योग	**1,02,500**	**2,05,000**
अजमेर मण्डल		
अजमेर	50,000	1,00,000
नागौर	37,500	75,000
भीलवाड़ा	37,500	75,000
टोंक	17,500	35,000
योग	**1,42,500**	**2,85,000**

● **उप निदेशक (प्रशासन)** राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान, बीकानेर
राजस्थान राज्य के लिए संग्रह हेतु जिलेवार लक्ष्य
प्रारंभिक शिक्षा हेतु (सत्र 2020–21)

जिला शिक्षा अधिकारी, मुख्यालय (प्रारंभिक शिक्षा)	आवंटित झण्डिया	आवंटित राशि (लक्ष्य निर्धारित)
1. चूरू मण्डल		
बीकानेर	30,000	60,000/-
चूरू	30,000	60,000/-
श्रीगंगानगर	35,000	70,000/-
हनुमानगढ़	30,000	60,000/-
झुंझुनूं	35,000	70,000/-
योग	**1,60,000**	**3,20,000**
2. जयपुर मण्डल		
जयपुर	50,000	1,00,000/-
अलवर	32,500	65,000/-
सीकर	32,500	65,000/-

www.rajsevak.com

दौसा	20,000	40,000
योग	**1,35,000**	**2,70,000**
3. उदयपुर मण्डल		
उदयपुर	30,000	60,000/-
चित्तौड़गढ़	20,000	40,000/-
बाँसवाड़ा	12,500	25,000/-
डूँगरपुर	12,500	25,000
राजसमन्द	12,500	25,000/-
प्रतापगढ़	12,500	25,000/-
योग	**1,00,000**	**2,00,000**
4. भरतपुर मण्डल		
भरतपुर	25,000	50,000/-
सवाई माधोपुर	17,500	35,000/-
करौली	17,500	35,000/-
धौलपुर	15,000	30,000/-
योग	**75,000**	**1,50,000/-**
5. जोधपुर मण्डल		
जोधपुर	35,000	70,000/-
पाली	32,500	65,000/-
बाड़मेर	17,500	35,000/-
जालौर	17,500	35,500/-
सिरोही	17,500	35,000/-
जैसलमेर	10,000	20,000/-
योग	**1,30,000**	**2,60,000/-**
6. कोटा मण्डल		
कोटा	45,000	90,000/-
बूँदी	15,000	30,000/-
झालावाड़	15,000	30,000/-
बाराँ	15,000	30,000/-
योग	**90,000**	**1,80,000/-**
7. अजमेर मण्डल		
अजमेर	40,000	80,000/-
नागौर	25,000	50,000/-
भीलवाड़ा	25,000	50,000/-
टोंक	20,000	40,000/-
योग	**1,10,000**	**2,20,000/-**

● **उप निदेशक (प्रशासन)** राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

7. शाला दर्पण पोर्टल पर ऑनलाइन मॉड्यूल प्रारम्भ।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● आदेश

शिक्षा विभाग में कार्यरत समस्त अधिकारियों/कार्मिकों के आश्वासित कैरियर प्रगति (ACP) तथा स्थाईकरण प्रकरणों के सहज एवं त्वरित निस्तारण के क्रम में शाला दर्पण पोर्टल पर ऑनलाइन मॉड्यूल प्रारम्भ किए गए हैं। पूर्व में इस कार्यालय के समसंख्यक आदेश दिनांकः 20.01.2020 द्वारा इस सम्बन्ध में निर्देश जारी किए गए थे। तत्समय तकनीकी समस्या के कारण उक्त मॉड्यूल अस्थाई रूप से बन्द किए गए थे, जिन्हें समुचित संशोधन उपरान्त पुनः प्रारम्भ कर दिया गया है। उक्त क्रम में समस्त संबंधितों को निर्देशित किया जाता है कि भविष्य में समस्त अधिकारी/कार्मिक अपने आश्वासित कैरियर प्रगति (ACP) एवं स्थाईकरण आवेदन के प्रकरण शाला दर्पण पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन ही प्रेषित करेंगे। संशोधन की प्रक्रिया के दौरान पुराना डाटा डीलिट (Delete) हो जाने के कारण पूर्व में मॉड्यूल के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन करने वाले कार्मिक भी अब पुनः आवेदन करेंगे।

चूँकि उक्त आवेदनों हेतु वांछित दस्तावेजों की प्रतियाँ ऑनलाइन आवेदन के साथ ही अपलोड की जानी है, अतः विशेष परिस्थितियों में आवश्यकता होने पर ही अधिकारी/कार्मिक के मूल सेवाभिलेख कार्यालय स्तर पर मंगवाएँ जाए। आवेदनकर्ता अधिकारी/कार्मिक के संवर्ग के अनुसार नियुक्ति अधिकारी (जिला शिक्षा अधिकारी/संभागीय संयुक्त निदेशक/निदेशक) द्वारा ऑनलाइन प्राप्त आश्वासित कैरियर (ACP) एवं स्थाईकरण आवेदन पर नियमानुसार कार्यवाही करते हुए उनका निस्तारण किया जाएगा।

● **(सौरभ स्वामी) आइ.ए.एस.** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

सूचना

● 'शिविरा' मासिक पत्रिका में रचना भेजने वाले अपनी रचना के साथ व्यक्तिगत परिचय यथा– नाम, पता, मोबाइल नंबर, बैंक का नाम, शाखा, खाता संख्या, आईएफएससी. नंबर एवं बैंक डायरी के प्रथम पृष्ठ की स्पष्ट छायाप्रति अवश्य संलग्न करके भिजवाएँ।

● कुछ रचनाकार एकाधिक रचनाएँ एक साथ भेजने पर एक रचना के साथ ही उक्त सूचनाएँ संलग्न कर दायित्वपूर्ति समझ लेते हैं। अतः अपनी प्रत्येक रचना के साथ अलग से पृष्ठ लगाकर प्रपत्रानुसार अपना विवरण अवश्य भेजें। इसके अभाव में रचना के छपने एवं उसके मानदेय भुगतान में असुविधा होती है।

● कतिपय रचनाकार अपने एकाधिक बैंक खाता लिखकर भिजवा देते हैं और उक्त खाते का उपयोग समय–समय पर नहीं करने के कारण वह बंद भी हो चुका होता है। परिणामस्वरूप उक्त मानदेय खाते में जमा नहीं हो पाता। जिसकी शिकायत प्राप्त होती है। किसी रचनाकार के एकाधिक खाते हैं तो रचनाकार अपने SBI बैंक खाते को प्राथमिकता देकर अद्यतन व्यक्तिगत जानकारी उपर्युक्तानुसार प्रत्येक रचना के साथ अलग–अलग संलग्न करें।

–वरिष्ठ संपादक

www.rajsevak.com

नवाचार

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय हल्दीना, अलवर (राजस्थान)

❒ राजेश लवानिया

सरकारी विद्यालयों में नामांकन की कमी एवं बच्चों का ठहराव बड़ी समस्या है। हमारे विद्यालयों में आज भी संसाधनों की कमी के साथ आकर्षक भवन नहीं है। चाइल्ड फ्रेंडली स्कूल भवन और परिसर नहीं है। ग्रामवासी स्कूलों से जुड़ नहीं पा रहे हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए अलवर जिले के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय हल्दीना में नवाचार किया गया है।

समग्र शिक्षा अभियान अलवर के मैं पिछले 11 वर्षों से इस प्रकार के नवाचार कर रहा हूँ जिसके परिणाम सुखद रहे हैं। नामांकन में बढ़ोतरी के साथ समुदाय और छात्रों में स्कूलों के प्रति आकर्षण बढ़ा है और व्यवहारगत परिवर्तन भी देखने को मिला है और स्कूलों में सकारात्मक वातावरण बना है।

शिक्षा के समंदर में ज्ञान का जहाज : ग्रामीण परिवेश के बच्चे पानी के जहाज के चित्र को केवल किताबों में ही देखते थे लेकिन हाल ही में समग्र शिक्षा अभियान के इंजीनियर राजेश लवानिया की पहल पर अलवर जिले के ही राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय हल्दीना में सहगल फाउंडेशन, ग्रामीणों और स्कूल प्रशासन के सहयोग से एजूकेशन क्रूज का निर्माण कराया है। तत्कालीन प्रधानाचार्य डॉ. कोमल कान्त शर्मा के सहयोग से क्रूज का मॉडल तैयार कर कार्य को अंजाम दिया गया जिससे स्कूल के छात्र रोमांचित हैं।

एजूकेशन क्रूज– क्रूज के शेष भाग में दो कक्षा कक्ष बनाए गए हैं जिसका नाम एजूकेशन क्रूज दिया गया है। क्रूज में ग्राउंड फ्लोर पर स्मार्ट क्लास रूम है जिसमें 40 बच्चों के बैठने के लिए फर्नीचर है और सामने की दीवार पर 55 इंच की एल.ई.डी. स्क्रीन लगी है जिसमें कक्षा 6 से 12 के बच्चे बदलते हुए कालांशों में इंटरनेट के माध्यम से पढ़ाई करते हैं और फर्स्ट फ्लोर पर एक्टिविटी रूम में अपनी कल्पनाओं को साकार करने के लिए ड्राईंग आदि बनाते हैं। बाहर से देखने पर क्रूज बहुमंजिला दिखाई देता है। क्रूज

के टेरेस पर खड़े छात्र रोमांचित होते हैं और महसूस करते हैं कि हम पानी के जहाज में खड़े हैं।

क्रूज छात्रों के लिए कई प्रकार के संदेश देता नजर आता है। आगे की ओर इंडियन नेवी का लोगो दिखाई देता है जिससे इंडियन नेवी के विषय में बच्चे जानने का प्रयास करें। क्रूज की साइड की दीवार पर Learning India, Growing India (सीखता भारत-बढ़ता भारत) लिखा नजर आता है एवं दीवार पर आपातकाल के समय काम में आने वाले ट्यूब्स दिखाई देते हैं। क्रूज के आगे के भाग में डोलफिन मछली का चित्र थ्री डी का एहसास देता है। क्रूज के पिछले भाग में जहाँ मुख्य द्वार है प्रवेश करने से पूर्व ऐतिहासिक स्थल इंडिया गेट से परिचित होते हैं। पीछे की ओर राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की 150वीं जन्म शताब्दी पर बापू का लोगो दिखाई देता है। जिससे बापू के आदर्शों को बच्चे जान सकें। एजूकेशन क्रूज के आगे और पीछे स्टील रेलिंग लगी है वहीं दूसरी ओर फर्स्ट फ्लोर पर एक्टिविटी रूम में जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। एजूकेशन क्रूज को दूर-दूर से लोग देखने आने लगे हैं और शेल्फी लेते हैं।

वर्तमान प्रधानाचार्य श्री बनवारी लाल जाट ने बताया कि सहगल फाउंडेशन ने इस स्कूल का कायाकल्प किया है। एक वर्ष पूर्व पूरा स्कूल जर्जर स्थिति में था, छतें टपकती थीं, फर्श, खिड़की, दरवाजें सब खराब थे, शौचालय और पेयजल की अच्छी व्यवस्था नहीं थी। फाउंडेशन द्वारा 45 लाख रुपये लगाकर स्कूल को चाइल्ड फ्रेंडली बनाकर सभी बच्चों को फर्नीचर उपलब्ध कराया गया है।

स्वच्छता वाहिनी भी बनी आकर्षण का केन्द्र : फाउंडेशन द्वारा छात्र एवं छात्राओं के लिए आधुनिक शौचालयों का निर्माण कराया गया है। जिसे बस का रूप दिया है जिसका नाम स्वच्छता वाहिनी रखा है। स्वच्छता वाहिनी इस उद्देश्य से बनाई गई है जिससे बच्चों, स्टाफ और समुदाय में स्वच्छता के प्रति जागरूकता पैदा हो सके। छात्राओं के शौचालय में इन्सीनरेटर भी लगाया है।

रैनवॉटर हार्वेस्टिंग से मिलेगा वर्ष भर बच्चों को पानी: पूरे भवन और परिसर के रिनोवेशन के साथ बारिश के पानी को बचाने के लिए रीचार्ज वेल बनाए गए हैं जिससे लाखों लीटर पानी व्यर्थ बहने से बच सकेगा साथ ही छतों के पानी को वॉटर हार्वेस्टिंग से जोड़ा गया है जिसके पानी का उपयोग विद्यालय के शौचालय और पार्क में लिया जाएगा यानि अलवर की गहराती भू जल समस्या से निजात पाने में भी यह विद्यालय अपना योगदान देगा। बच्चों को पेयजल और हाथ व बर्तन धोने के लिए वाश प्लेट फार्म बनाया गया है।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की 150 वीं जन्म शताब्दी पर उनको एवं उनके आदर्शों को समर्पित दिखाई पड़ता है। यहाँ एक ओर गाँधी वाटिका और दूसरी ओर कबीर वाटिका एवं दोनों ओर पाथ वे बनाए गए हैं।

इंजीनियर
समग्र शिक्षा अभियान, अलवर

www.rajsevak.com

नवाचार

ऑनलाइन शिक्षण

महामारी में शिक्षा की बदली तस्वीर

❒ संजीव बेदी

वैश्विक कोरोना महामारी एक चुनौती है लेकिन यहीं से शिक्षा के अवसर भी निकल कर आए हैं। हम अपनी दूरदर्शिता, नेतृत्व तथा निर्णय लेने की क्षमता के बल पर ही शिक्षा के नए स्वरूप निर्मित कर सकेंगे। भविष्य के नवनिर्माण की जो गाथा लिखी जानी है वह शिक्षाशास्त्रियों की ऑनलाइन पद्धति के द्वारा ही लिखी जाएगी।

कोरोना काल ने ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली को समझने का अवसर दिया है जिसके भविष्य में सकारात्मक परिणाम देखेंगे। कोरोना के कारण अब हमारे विचारों में बदलाव आ गया है। अब ऑनलाइन शिक्षण कार्य करवाया जा रहा है। बस कक्षा-कक्ष की जगह इंटरनेट ने ले ली है परंतु वीडियो कॉलिंग एप पर शिक्षण करवाना ही ऑनलाइन क्लास नहीं है। शिक्षार्थी इसमें भी और ज्यादा चाहते हैं। हर शिक्षार्थी ऑनलाइन शिक्षण ग्रहण करने के लिए तैयार रहता है परंतु विद्यालय प्रशासन उन्हें ऑनलाइन एजुकेशन से जोड़ने में इतनी सफलता अर्जित नहीं कर पाया। आओ ऑनलाइन शिक्षण को बेहतर बनाने के लिए हम किस प्रकार के प्रयास कर सकते हैं? इस पर मनन करें।

छात्र-छात्राओं को सर्वप्रथम पाठ्यक्रम की जानकारी दी जानी चाहिए। शिक्षण का मुख्य उद्देश्य पाठ्यक्रम का शिक्षण होता है। इसलिए आप अपने छात्रों को पाठ्यक्रम विभाजन की जानकारी वीडियो के माध्यम से, वीडियो रिकॉर्ड करके विद्यालय की हेल्प डेस्क पर उपलब्ध करवा सकते हैं जिससे छात्र अपनी पूर्व तैयारी कर सकता है।

शिक्षण कार्य को रुचिकर बनाने के लिए प्रश्नोत्तर विधि का प्रयोग करना- ऑनलाइन शिक्षण कार्यक्रम में हम छात्रों को पूर्व में पाठ्यक्रम से अवगत करवा देते हैं और उसके उपरांत यदि हम शिक्षा की व्याख्यान की बजाए प्रश्नोत्तर विधि के माध्यम से शिक्षण प्रक्रिया को अपनाएँगे तो ऑनलाइन शिक्षण कार्य अधिक प्रभावशाली होगा। अपने शिक्षण में शिक्षण

बिंदुओं के माध्यम से महत्त्वपूर्ण बिंदुओं को लिखवाना भी चाहिए। जिससे यह विधि शिक्षक व छात्र के लिए सर्वोत्तम रहेगी।

छात्रों को ऑनलाइन शिक्षण वीडियो के माध्यम से करवाएँ- जब शिक्षक अपना कार्य करवाना आरंभ करें तो उसे अपने शिक्षण बिंदुओं का वीडियो बना लेना चाहिए। जिससे जटिल शिक्षण बिंदुओं को आसानी से समझा सके और छात्र उसे अपनी सुविधा के अनुसार देख भी सके और अपना वीडियो शिक्षक को यू-ट्यूब पर भी अपलोड कर देना चाहिए। इस तरह उसके वीडियो को देखकर अन्य शिक्षाविद् इसमें सुधार करने के लिए सुझाव दे सकते हैं।

ऑनलाइन शिक्षण में छात्रों की भागीदारी होनी चाहिए- प्रत्येक सप्ताह विद्यार्थियों को गृह कार्य में कुछ कठिन बिंदु तैयार करने के लिए देनी चाहिए। इस तरह छात्रों का ऑनलाइन शिक्षण से जुड़ाव होगा। विद्यार्थियों को समस्या सुलझाने के लिए देंगे तो वह गूगल पर इसका निस्तारण ढूँढ़ेंगे। विद्यार्थियों को ऑनलाइन सवाल पूछ कर उनका ऑनलाइन जवाब खोजने के लिए भी प्रोत्साहित करेंगे।

ऑनलाइन शिक्षण में छात्रों को फीडबैक देना- ऑनलाइन शिक्षण में छात्रों को फीडबैक देना अति आवश्यक है क्योंकि शिक्षण कार्य में छात्र रुचि लेने लग जाते हैं। फीडबैक मिलने से विद्यार्थी अपनी समस्या शिक्षक के सम्मुख बड़ी आसानी से प्रस्तुत कर सकता है। छात्रों से पूछे गए सवालों के आधार पर हम अपना फीडबैक प्राप्त करते हैं और आगामी शिक्षण बिंदु को तैयार कर सकते हैं। छात्रों की समस्या के समाधान के लिए 'कैनवस किवजी टूल्स' को उपयोग में ले सकते हैं। ताकि वीडियो तैयार करके, प्रयोजना विधि में छात्रों को पाठ्यक्रम के अनुसार प्रोजेक्ट दे सकते हैं। इसी प्रकार अन्य शिक्षण विधियों के माध्यम से भी शिक्षण करवा सकते है।

ऑनलाइन शिक्षण में छात्रों को वर्तमान मुद्दों से अवगत करवाना- ऑनलाइन शिक्षण में अपने विषय की वर्तमान समस्याएँ जैसे वैश्विक कोरोना महामारी की जानकारी देनी चाहिए और विज्ञान जैसे विषय में वायरस की उत्पत्ति, उसके प्रभाव व रोकथाम के इस संबंध में जानकारी से अवगत करवाया जाना चाहिए।

ऑनलाइन शिक्षण में छात्र समय का सदुपयोग कर सकें- ऑनलाइन शिक्षण में छात्रों को समय का सदुपयोग करना सिखाना चाहिए। विद्यार्थियों को उनकी रुचि के अनुसार काम करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। जो कि यू-ट्यूब व अन्य शिक्षा पोर्टल के माध्यम से शिक्षण सामग्री मिल सकती है वह अपने विषय में शिक्षण बिंदु की समझ बढ़ा सकते हैं। ऑनलाइन शिक्षण में शिक्षक समय-समय पर अपने विद्यार्थियों को उचित सुझाव दे सकता है।

इस तरह हम ऑनलाइन शिक्षण के माध्यम से देश के प्रत्येक कोने में विराजमान छात्रों को शिक्षण सामग्री उपलब्ध करवा सकते हैं और सरकार द्वारा संचालित दीक्षा पोर्टल, स्माइल क्लासेज, शिक्षा दर्शन, स्प्रभा, युक्ति पोर्टल, ई-पाठशाला, ई-बुक्स, स्पार्क व अन्य कार्यक्रमों के माध्यम से छात्रों को शिक्षा देने की मुहिम को इस लॉकडाउन के समय भी जारी रख सकते हैं। जो छात्र हित के लिए सराहनीय कदम है। सरकार की नई शिक्षा नीति में ऑनलाइन शिक्षण कार्यक्रम को भी प्राथमिकता दी गई है।

वरिष्ठ अध्यापक
राजकीय माध्यमिक विद्यालय अकाव्वाली, श्रीगंगानगर
मो: 9461901444

www.rajsevak.com

शौक्षिक-चिन्तन

शिक्षा में नवाचार जरूरत व महत्त्व

❐ गौरव सिंह 'घाणेराव'

शिक्षा जिसे अधिगम भी कहते हैं और अधिगम का मतलब होता है सीखना। व्यक्ति हो चाहे पशु या पक्षी सभी के लिए सीखना जीवनपर्यन्त सतत् रूप से चलने वाली प्रक्रिया है जिसे मनुष्य विभिन्न क्षेत्रों में अपनाता है।

या यूं कहे कि व्यक्ति जब तक जीवन की डोर से बंधा है उसका सीखना अविरल रूप से चलता रहता है। फिर वो चाहे किसी भी रूप में क्यों न हो। औपचारिक भी हो सकता है और अनौपचारिक भी। व्यक्ति का सीखना सिखाना किसी उम्र या क्षेत्र का मोहताज नहीं है। वो बचपन में दूध पीना सीखने से लेकर बैठना, चलना, बोलना सीखता है। फिर विद्यालय जाना सीखता है। विद्यालय में साथियों और शिक्षकों के संपर्क में आकर जीवन के विभिन्न आयाम व गुर सीखता है। फिर तकनीकी जीवन के अगले पड़ाव में व्यापार, उद्यम व आजीविका के साधन जुटाने के गुर सीखता है। चाहे व्यक्ति बूढ़ा भी हो जाए तो सीखना नहीं छोड़ सकता। मान लीजिए तकनीक के इस जमाने में जब मोबाइल का आविष्कार हुआ तो क्या जो बुजुर्ग थे वो सभी सीखे हुए थे। नहीं! उन्होंने भी इससे सामंजस्य बैठाने के लिए उसे चलाना सीखा तो व्यक्ति का सीखना सिखाना निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जो उसके विकास में बहुत सहायक है।

1. नवाचार से परिचय : नवाचार एक बहूपयोगी महत्त्व का विषय है। नवाचार दो शब्दों नव+आचार से मिलकर बना है। जिसका अर्थ होता है नवीन व्यवहार या नवीन उपयोगी विधि का प्रयोग। नवाचार शिक्षा, विज्ञान, गणित, अर्थशास्त्र, व्यापार, वाणिज्य, तकनीक आदि सभी क्षेत्रों में अपनी महत्ती भूमिका निभाता है। नवाचार को रुचिपूर्ण तरीके से सीखने का सारथी भी माना जाता है। नवीन विधाओं व तकनीकों से सीखना सिखाना शिक्षा में नवाचार कहलाता है।

2. नवाचार की आवश्यकता:– हमें अब यह तो पता है कि सीखना व्यक्ति में निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है लेकिन यह मानव स्वभाव है कि वो किसी भी एक व्यक्ति, वस्तु या तरीके से सतत् रूप से साथ बना नहीं रह सकता। उसे कुछ नयापन चाहिए होता है जिससे से उसकी रुचि बनी रहे। वैसे सही भी है क्योंकि विद्वानों ने कहा है यदि परिवर्तनशीलता नहीं होगी तो जड़त्व आ जाएगा और जड़त्त्व आने का मतलब है विनाश। जैसे एक पहिया चलना छोड़ दे तो उसका महत्त्व समाप्त हो जाएगा और कुछ समय बाद वो सड़ गल कर नष्ट हो जाएगा। यदि व्यक्ति अपने किसी एक अंग को काम में लेना छोड़ दे तो वह अंग धीरे-धीरे काम करना बंद कर देगा। इसीलिए परिवर्तनशीलता बहुत जरूरी है और इसी परिवर्तनशीलता को ही नवाचार कहा गया है। हालांकि परम्परागत तरीके से सीखने में भी कोई बुराई नहीं है लेकिन यदि उसी तरीके में नवाचार का तड़का लग जाए तो उस सीखने के जायके में चार चाँद लग जाएँगे। और सीखने और सिखाने वाले दोनों में रुचि बनी रहेगी। मुझे अधिगम का एक नियम याद आ रहा है कि घोड़े को पानी के पास ले जाया जा सकता है लेकिन उसे जबरदस्ती पानी नहीं पिलाया जा सकता, यह तभी संभव है जब उसकी रुचि होगी तो किसी भी ऑब्जेक्ट को सिखाने के लिए उसे रुचिपूर्ण बनाना बेहद जरूरी है।

इसको शिक्षा से लेकर उत्पादन क्षेत्र तक काम में लिया जा सकता है। इसके विभिन्न रूप है जैसे तकनीकी नवाचार, सेवा नवाचार, वाणिज्यिक नवाचार, व्यापारिक नवाचार, शैक्षिक नवाचार आदि। इन नवाचारों के माध्यम से व्यक्ति अपने क्षेत्र में पारंगत हो सकता है। दिन दुनी रात चौगुनी तरक्की भी कर सकता है। जैसे एक उदाहरण के तौर पर जमीनी स्तर पर बताऊँ तो मैंने एक गन्ने के रस वाले को देखा वो बड़े अनोखे तरीके से रस बना रहा था। उसने कोई पुरानी सी मोटरसाइकिल खरीद कर उसमें ऐसा नवाचार किया कि वो कोल्हू के बैल की तरह चलने लगी और उसने उसके पहिये में घुंघरू भी बाँध दिए जिससे एक अलग सी झनकार आने लगी। यह वहाँ से निकलने वालों के लिए एक रोचक माहौल बना रही थी। इस देखने कुछ लोग जमा भी होने लगे तो जमा होने वाले लोगों में से 50 प्रतिशत लोग जूस भी पीने लगे तो देखा जाए तो कुल मिलाकर नवाचार आपको किसी भी रूप में फायदा दे सकता है।

4. शिक्षा में नवाचार:– मैं राजस्थान शिक्षा विभाग में उच्च प्राथमिक विद्यालय का शिक्षक हूँ तो मैं शिक्षा में नवाचार की बात करता हूँ। मैं शिक्षा में नवाचार करने का समर्थक हूँ और इसके सकारात्मक परिणाम भी मैंने देखे है।

एक प्राथमिक शिक्षक उस कारीगर की तरह है जो एक बहुमंजिला आकर्षक मकान की मजबूत नींव भरने का काम करता है और इस नींव को मजबूरी से भरने के लिए मैं नवाचार रूपी ईंटों के प्रयोग पर बल देता हूँ। नवाचार से तात्पर्य कोई बहुत बड़ा झमेला नहीं है। उसमें हमें थोड़ा कल्पनाशील बनना है और थोड़ा सा बच्चों को रुचिपूर्ण तरीके से सिखाने पर चिंतन मनन करना है।

शिक्षा में नवाचार के कुछ तरीके जो मैंने अपनाए:– प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों को सिखाने के लिए हम कुछ नवाचार कर सकते है जैसे- चार्ट से विभिन्न वर्णाक्षरों के अलग-अलग कटिंग तैयार करना, मात्रा की खिड़की वाली किताब बनाना जिसमें हर पृष्ठ पलटने पर अक्षर वही रहता है लेकिन मात्रा बदलती जाती है। ब्लैक या ग्रीन बोर्ड पर चित्रों के माध्यम से बच्चों को सिखाना, दम सराज खेल के माध्यम से पर्यायवाची व विलोम शब्द सिखाना। टीम बनाकर खेल के माध्यम से बोर्ड पर कुछ शब्द लिखकर उनको छँटवाना आदि ऐसी कई विधाएँ है जो हमारे सिखाने के उद्देश्य को साकार कर सकती है। मैं एक शिक्षक होने के नाते इन सब विधाओं को अपनाता हूँ व जब बच्चे इससे अच्छे से सीख जाते हैं तो मैं आत्मसंतुष्टि से अभिभूत हो जाता हूँ।

अंत में आलेख पढ़ने वाले सभी सम्मानित पाठकों से यही आग्रह करना चाहूँगा कि आप किसी भी क्षेत्र में हो तो नवाचार करें यह आपको कई मायनों में फायदा तो देगा ही साथ में एक अलग पहचान भी देगा।

अध्यापक
महावीर सिनेमा के पीछे, महावीर कॉलोनी,
सुमेरपुर, पाली (राज.)-306902
मो: 9602874886

www.rajsevak.com

सकारात्मकता

नो नेगेटिव बी पॉजिटिव

❒ सत्यनारायण रोलन

सकारात्मकता ऐसा मंत्र है जो व्यक्ति को चिंता और तनाव से उभारता है; रिश्तों में आने वाली दूरियों को समाप्त करता है, मान और अपमान के उतार-चढ़ाव और क्रोध की चिंगारी को शांत करता है। सकारात्मकता एक ऐसा पहलू है जिससे वर्तमान युग की हर समस्या का हल ढूँढ़ा जा सकता है। दोस्तों के बीच घर कर चुकी टकराहट और दो देशों के बीच आ चुकी दरार को मिटाने का ऐसा मूल मंत्र है जो एक दूसरे के प्रति मैत्री भाव, प्रेम, आनंद का प्रचार-प्रसार करता है। दूसरों के द्वारा गलत व्यवहार किए जाने के बावजूद हमारे द्वारा स्वीकार कर लेना ही सकारात्मकता है। कोई हमें गले लगाता है तो यह उसका व्यवहार है लेकिन उसके द्वारा धक्का दिए जाने पर भी उसके प्रति हमारा व्यवहार सौम्य बना लेना सकारात्मकता है।

वहाँ शांति भी है, संतोष भी है जहाँ सकारात्मकता है सम्मान भी है और प्रसन्नता है और आनंद का वरदान भी।

सकारात्मकता के आते ही सब के प्रति नजरिया बेहतरीन स्वतः ही ईजाद हो जाता है। जो व्यक्ति हर समय स्वयं को सकारात्मक बनाए रखने में सफल होता है तो उसकी कार्य क्षमता में श्रेष्ठता, दिव्यता, तेजस्विता का संचार होता है और वह श्रेष्ठ विद्यार्जन करता है।

सकारात्मकता बढ़ाएँ और समस्या मिटाएँ : अगर आपके जीवन में 90 प्रतिशत समस्या है तो केवल 10 प्रतिशत सकारात्मकता अपना कर देखें। मात्र 10 प्रतिशत सकारात्मकता से 90 प्रतिशत समस्याओं का समाधान हो जाएगा। सकारात्मकता अखिल मानवता का पावन मंत्र है जो विश्वशांति को स्थापित कर सकता है।

सकारात्मकता सुई का नाम है तो नकारात्मकता केंची का नाम है : सकारात्मकता अगर मन में रहती है तो सचेतना और सहजता अपने आप रहेगी क्योंकि तीनों में अंतः संबंध है। तीनों एक दूसरे के साथ रहती हैं।

- पूरी दुनिया के नकारात्मक भाव हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते बेशर्त हमारे दिलों में जब तक नकारात्मकता न उतार जाए।
- पूरा समुद्र एक जहाज को नहीं डूबा सकता बेशर्त की जब तक जहाज में पानी अंदर ना आजाए।

इस बात को सदा याद रखें इंसान की एक हथेली में सहजता का एक दीप होना चाहिए तो दूसरी हथेली में सचेतनता का लेकिन दिल में तो सकारात्मकता का दीप होना ही चाहिए। हमारी आँखों में सकारात्मकता की रोशनी होनी चाहिए जो विपरीत परिस्थितियों में भी स्वयं को खरा सिद्ध कर सके।

संस्कारों में दें सकरात्मक सोच : शालीन प्रगति पथ पर अग्रसर हो सकता है जब हमारी आने वाली पीढ़ियाँ संस्कारवान और सकारात्मकता का निर्वहन करने वाली होंगी। इसके लिए परिवार में स्वयं की हर कार्य के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करें। फिर धीरे-धीरे आप का संपूर्ण परिवार एक सकारात्मक मुख्यधारा में बढ़ चलेगा और देखेंगे सबका जीवन सकारात्मक और सचेतनता की ओर बढ़ रहा है।

परिस्थितियाँ बने नेगेटिव पर मनः स्थिति रहे पॉजिटिव : हम देखते हैं चित्त की मन की उत्तेजित धाराओं को, विकृत विचारधारा को बदला जा सकता है। निमित्त अनुकूल हो या प्रतिकूल हो चित्त को प्रभावित किए बिना नहीं रहती। किसी पर क्षणभंगुर प्रभाव पड़ता है तो किसी पर गहरा प्रभाव पड़ता है। हमें निमितों से निरपेक्ष रहने की जीवन दृष्टि अपने भीतर विकसित करनी होगी। मन बदलने के लिए रोज अच्छी किताबें पढ़ो, अच्छी संगति में रहो, जीवन का कायाकल्प करने वाले कैंप ज्वाइन करो।

सबसे बड़ी बात सोच बदलो पॉजिटिव थिंकिंग का प्रभावी मूल मंत्र सुनो व इसे सकारात्मक स्वरूप में रखो। इंसान का मूल प्रेरक मन उसके भीतर ही बैठा है यह अंतर्मन अगर सकारात्मक हो जाता है तो संसार स्वर्ग बन जाता है और यही अंतर्मन जब नकारात्मक हो जाता है तो जीवन और रिश्ते नरक में तब्दील हो जाते हैं।

मन के हारे हार है मन के जीते जीत : तनाव पहला प्रभाव डालता है व्यक्ति की कार्यकुशलता पर, जैसे-जैसे व्यक्ति इसके मकड़जाल में उलझता है उसके मनोबल में कमजोरी आना शुरू हो जाती है। हमने कई बार देखा है कि जब किसी भी टूर्नामेंट में 2 देशों की टीम एक मैदान में उतरती है। तो लोग पहले ही अंदेशा लगा लेते हैं, खिलाड़ियों के चेहरे को देखकर कि कौन हारेगा, कौन जीतेगा जो मैदान में उतरने से पहले ही दूसरी टीम को लेकर मनोवैज्ञानिक दबाव में आ गया, उसका हारना तय हो जाता है। अगर आप दूसरी टीम से जीतना चाहते हो तो मैदान में उतरने से पहले इस पर इतना मनोवैज्ञानिक दबाव डाल दीजिए कि वह मानसिक रूप से स्वयं को हारा हुआ महसूस करने लग जाए, ऐसी स्थिति में खिलाड़ी तनावग्रस्त हो जाता है और उसका आत्मविश्वास कमजोर हो जाता है। मानसिक रूप से हारा हुआ व्यक्ति मैदान में भी हारता है। हमारी जीवन की असफलताओं का पहला कारण है, मानसिक कमजोरी, तनावग्रस्त एक विशेष प्रकार की परेशानी से ग्रस्त होता है, वह हर समय उदास रहता है। अपने आप प्रसन्न रहना खुद को समझना और उन लोगों से दूर रहना जो हमारी प्रशंसा के कारण हैं। यह सब तनाव के स्पष्ट प्रभाव हैं। उदासी और प्रसन्नता हमारे तनाव के स्पष्ट प्रभाव हैं। उदासी और चिंता से हमारी समझ तर्कशक्ति और वैचारिक क्षमता कमजोर हो जाती है और हर समय व्यक्ति का दृष्टिकोण निराशावादी हो जाता है। ऐसा लगता है कि वह कुछ कर ही नहीं पाएगा। छोटी-मोटी बातों को लेकर अपने-आप को अपराधी मानता है और उसका शरीर कुम्हलाया सा हो जाता है। उसे भोजन करने के लिए पूरी भूख नहीं लगती। भोजन करने बैठ जाए तो भोजन स्वादिष्ट नहीं लगता। शायद मन की शांति का सुकून तो सपने में भी नहीं मिल पाता है।

तनाव की धुन ने गेहूँ की तरह आपके दिमाग को खोखला कर दिया है भीतर में शांति की धुन बजाई है अपने दिलों दिमाग को तरोताजा कीजिए।

www.rajsevak.com

जीवन का महान योग है कर्म योग : जीवन में किसी भी कार्य को तन्मयता से करें और उसे बोझ समझने के बजाय योग समझें और अगर आप निष्ठापूर्वक किसी कार्य को संपादित करते हैं तो उस कार्य को शीघ्रता से पूर्ण कर ही लेते हैं, साथ-साथ अनावश्यक मानसिक खिंचाव से भी बच जाते हैं, अगर तुम झाड़ू भी निकालो तो इतनी लगनपूर्वक निकालो कि उधर से देवता भी गुजर जाए तो तुम्हारी पीठ थपथपाएं और कहे कि क्या बेहतर सफाई की।

इससे जुड़ा एक और बिंदु है एक व्यक्ति एक वक्त में एक ही काम करे। यह भी कर दूँ वह भी कर दूँ यह सोचकर अपने दिमाग को भारी करने के बजाय धीरे-धीरे सही व्यवस्थित तौर पर एक-एक कार्य को पूर्ण करें। दिन भर में 20 कार्यों की योजना बनाने के बजाय किन्हीं दो कार्यों को पूर्ण करना ज्यादा लाभदायी है। जो व्यक्ति अपने दिनभर के कार्यों को समय अनुसार व्यवस्थित कर पाता है वह सात दिन के कार्यों को एक दिन में पूरा कर लेता है। अच्छा होगा कि सुबह उठने के बाद जब आप आवश्यक कार्यों से निवृत्त हो जाए तो दिन भर में किए जाने वाले कार्यों की एक सूची बना लें और फिर उसमें पहले किसको करना है और किसको पीछे करना है इसके आधार पर क्रम डालें आप पाएँगे कि आपने सभी कार्यों को सफलतापूर्वक संपादित कर लिया है और आपका कोई भी कार्य तनाव का कारण नहीं बना है।

वरिष्ठ अध्यापक (विज्ञान)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रामजीपुरा
सीकर (राज.) **मो: 9462114958**

परम्परिक सम्पदा

नमामि पुण्य निर्झरणी

❐ पुष्पा शर्मा

भारत में प्रकृति के पूजन की परम्परा अति प्राचीन है। सिन्धु सभ्यता के अध्ययन से ज्ञात होता है कि तत्कालीन समय में पशु-पूजा, अग्नि-पूजा, सूर्य-पूजा, वृक्ष-पूजा एवं जल पूजा का विधान था। इतिहासकार मार्शल के अनुसार सिन्धु सभ्यता (मोहनजोदड़ो) का विशाल स्नानागार सार्वजनिक, धार्मिक आयोजन के लिए रहा होगा। वैदिक संस्कृति में भी पंचतत्व पूजन का उल्लेख मिलता है। वैदिक संहिताओं में भी 31 नदियों का उल्लेख प्राप्त होता है जिनमें से 25 का उल्लेख ऋग्वेद में है। ऋग्वेद के नदी सूक्त में 21 नदियों का उल्लेख प्राप्त होता है।

रामायण एवं अन्य धार्मिक ग्रन्थों में राजा सगर से भागीरथ तक पाँच पीढ़ियों द्वारा गंगा को पृथ्वी पर लाने का वर्णन प्राप्त होता है। राजा दिलीप के पुत्र भगीरथ की तपस्या से गंगा का पृथ्वी पर अवतरण का व्याख्यान उल्लेखनीय है। धर्मशास्त्रों में गंगा को मोक्षदायिनी बताया गया है। गंगा को त्रिपथगा भी कहा जाता है क्योंकि गंगा आकाश, पाताल और पृथ्वी तीनों लोकों में प्रवाहित होती है। भारत में गंगा ही नहीं बल्कि सभी नदियाँ पूज्य होने के साथ भारत की जीवन रेखा है। विष्णु धर्मोत्तर पुराण में कहा गया है कि गंगा एवं यमुना नदियाँ अपने-अपने वाहनों सहित मानवीय रूप में अंकित की जानी चाहिए। गुप्तकालीन स्थापत्य में गंगा-यमुना अपने कर (हाथ) में पूर्ण कुम्भ के स्थान पर चँवर के साथ प्रदर्शित है। इन नदी मूर्तियों के चामरधारी मानवीय स्वरूप की कल्पना कुमारसम्भव में भी प्राप्य है।

राजस्थान के भरतपुर में पुण्य सलिला गंगा की वृहद् प्रतिमा है। उल्लेख मिलता है कि इसका निर्माण महाराजा बलवंत सिंह ने प्रारम्भ किया। राजस्थान की राजधानी जयपुर में गंगा माता के नाम से प्रसिद्ध स्थल है जिसका निर्माण महाराजा सवाई माधोसिंह द्वितीय ने करवाया था। प्राचीनकाल के पुरा-अवशेषों एवं चित्रांकन पर नजर डाले तो ज्ञात होता है कि राजस्थान में स्थापत्य कला में नदी मूर्तियों के प्रमाण प्राप्य है। राजस्थान में नदी मूर्तियों का मानवीय स्वरूप में टंकण झालावाड़ क्षेत्र के चन्द्रावती मन्दिर की देवकुलिका के प्रवेश द्वार पर दृष्टव्य है। गंगा तथा यमुना नदियों का मानवीय रूप में अंकन द्वार भाग में उत्तरी भारत के मंदिरों में दृष्टिगोचर होता है।

राजस्थान के नागौर जिले के केकिन्द ग्राम में 10वीं शताब्दी निर्मित शिव मन्दिर के द्वार भाग के दायें ओर मकरवाहिनी गंगा एवं बायें ओर कच्छपवाहिनी यमुना का अंकन है। राजस्थान के राजपूताना संग्रहालय (अजमेर) में गंगा का सुन्दर चित्रांकन दृष्टव्य है। संग्रहालयानुसार उक्त चित्रांकन 19वीं शताब्दी का है। पुण्य सलिला गंगा को चतुर्भुजी स्वरूप में चित्रित किया गया है। निर्झरणी को अपने वाहन मकर पर आरूढ़ धवल (श्वेत, दूधिया) रक्त आभा युक्त गुलाबी वस्त्रालंकरण से चित्रित किया गया है। मकर के पृष्ठ भाग (पीठ) पर लाल आभा युक्त आसन एवं जल में कमल-दल के साथ सलिला के शीश से चरण तक शृंगार दृष्टव्य है। शीश पर मुकुट, ग्रीवा में मणि-मोतियों एवं पुष्पहार, कर्ण कुण्डल, दोनों उर्ध्वाकार (हाथ) में कुम्भ-कलश एवं दोनों अधः कर में पद्म पुष्प धारण किए है। शीश कर पृष्ठ भाग पर आभा मण्डल के साथ चित्रांकन से प्रतीत होता है जैसे त्रिपथगा आकाश से पृथ्वी पर अमृत-कलश लेकर अवतरित हुई है। सलिला का मुख-मण्डल सौम्य, शान्त एवं मनमोहक है।

चक्रपाणिदत्त ने लिखा है कि हिमालय से निकलने के कारण गंगा का जल औषधियों से युक्त एवं पथ्य है। एक पत्रिका में मैंने पढ़ा- भण्डारकर ओरियंटल इंस्टीट्यूट, पूना में 18वीं शताब्दी के ग्रन्थ 'भोजन कुतूहल' लिखा है कि गंगाजल श्वेत, स्वादु, स्वच्छ, अत्यन्त रुचिकर, पथ्य, भोजन पकाने योग्य, पाचन शक्ति में वृद्धि करने वाला क्षुब्धा को शान्त करने वाला एवं बुद्धि में वृद्धि करने वाला है। अबुल फजल ने आईने अकबरी में गंगा जल को अमृत तुल्य बताया है। फ्रांसीसी यात्री टेवर्नियर ने भी गंगा जल को स्वास्थ्य संबंधी गुणों से भरपूर बताया टेवर्नियर के यात्रा विवरण से ज्ञात होता है कि बड़े उत्सवों पर भोजन के पश्चात अतिथियों को गंगा जल पिलाने का लोकाचार था।

प्राचीन काल में प्रकृति के सन्तुलन का ज्ञान मानवीय समाज को था, इसी कारण वर्तमान में यह धरोहर के रूप में हमें प्राप्त हुई है। वर्तमान सामुदायिक भागीदारी की, ताकि पुण्य सलिला अविरल, अविराम प्रवाहित होती रहे।

ज्योति कॉलोनी, सापुन्दा रोड, केकड़ी,
अजमेर (राज.)-305404
मो: 8003365699

www.rajsevak.com

बाल सभा विशेष

रचनात्मक शनिवार

❒ तिलक राज

विद्यालय वह जगह है जहाँ बच्चे स्वतंत्र रूप से अनुभव प्राप्त करते हैं एवं तरह-तरह के प्रयोग करते हैं अर्थात् विद्यालय बच्चों की प्रयोगशाला है। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्यों बच्चों की स्वाभाविक क्रियाशीलता का विकास करना है जिससे बच्चों में मौलिक चिन्तन, रचनात्मकता, सहयोग एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हो।

राजकीय विद्यालयों को और अधिक आकर्षक, जीवन्त एवं प्रतिस्पर्द्धात्मक बनाने के लिए विभाग द्वारा प्रत्येक शनिवार को (नो बैग डे) बस्ताविहीन दिवस, आनंददायी दिवस एवं रचनात्मक दिवस बनाने की ठोस पहल हुई है। इसके पीछे सोच यह है कि बच्चों में सृजनशीलता, एकाग्रचित्तता, तार्किक क्षमता, अभिव्यक्ति कौशल, शारीरिक विकास एवं नैतिक मूल्यों का विकास विद्यालय स्तर पर हो सके। अब यह देखना होगा कि विद्यालय प्रशासन किस प्रकार अपनी सोच, रचनात्मकता व उद्यमशीलता से इसे कैसे सक्रिय जीवन्त बनाते हैं। सोचना होगा हर बार कुछ नया, अनौपचारिक, पाठ्यक्रम मुक्त, भयमुक्त, अनुशासित, तनावमुक्त, क्रियाशील, शालीन, बच्चों जैसा, हल्का फुल्का, ऊर्जावान वार शनिवार के बारे में।

(क) क्या फायदे होंगे जैसे

- बच्चों की रचनात्मकता, ज्ञान, कौशल, क्रियाशीलता में निश्चित ही अभिवृद्धि होगी।
- बच्चों का विद्यालय के प्रति आकर्षण एवं लगाव, जुड़ाव बढ़ेगा।
- बच्चों की शिक्षकों से निकटता बढ़ेगी एवं भयमुक्त माहौल बनेगा।
- बच्चों की प्रत्येक गतिविधि में शामिल/सहभागी होने से उनमें साझेदारी, एकजुटता, नेतृत्व, ईमानदारी, अनुशासन, भाईचारा, आपसी समन्वयन इत्यादि गुणों का विकास होगा।
- बच्चों की विद्यालय में नियमितता बढ़ेगी।

नामांकन एवं ठहराव बढ़ेगा तथा ड्रॉप आउट दर में निश्चित ही कमी आएगी।

- बच्चों की सीखने की क्षमता में अभिवृद्धि होगी।
- बच्चों द्वारा कई नवाचार होंगे।
- नई प्रतिभाएँ उभरेगी।
- स्थानीय समुदाय की भागीदारी से उनका विद्यालय के प्रति विश्वास बढ़ेगा।
- परीक्षा परिणामों में निश्चित ही अभिवृद्धि होगी।
- अभिव्यक्ति कौशल, वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होगा।
- शिक्षकों के प्रति सम्मान में अभिवृद्धि होगी।

(ख) क्या-क्या गतिविधियाँ की जा सकती हैं:- जिनसे बच्चों का शारीरिक, मानसिक, आत्मिक एवं कौशल का विकास हो सके। जैसे-

- खेल कूद सम्बन्धित (स्पोर्ट्स एंड गेम्स, इंडोर एंड आउटडोर)
- सांस्कृतिक (कल्चरल एक्टिविटीज)
- नाटक (प्ले)
- प्रदर्शनियाँ (एग्जीबिशिन्स)
- व्यायाम एवं योग।
- कम्प्यूटर, स्मार्ट क्लास, आई.सी.टी., प्रोजेक्टर, यू ट्यूब आदि का संचालन सीखना।
- प्रोजेक्ट वर्क।
- ग्रुप वर्क।
- विद्यार्थी पुलिस बल से संबंधित प्रशिक्षण।
- बाल संसद।
- लघु बाल/सामाजिक फिल्मों का प्रदर्शन।
- प्रश्नोत्तरी (क्विज)।
- उत्सव/पर्व/जयन्ती/त्योहार आदि का आयोजन।
- क्रिएटिव राइटिंग।
- पेंटिंग, रंगोली, ड्राइंग, पोस्टर बनाना।
- ड्रेस कॉम्पीटिशन।
- विज्ञान के प्रयोग कराना, मॉडल्स बनाना।
- वाद-विवाद प्रतियोगिता।
- सामूहिक नृत्य/गान।
- पुस्तकालय/वाचनालय का उपयोग।
- कॅरियर गाइडेंस प्रदर्शनी।
- बाल मेले का आयोजन।
- विशेषज्ञों से वार्ता।
- सामुदायिक खेल- रस्सा कस्सी, दौड़, मटका/जलेबी रेस, कबड्डी, कुश्ती, वॉलीबाल, रंगोली, साइकिल रेस आदि।
- शुरूआत में इन गतिविधियों की जिम्मेदारी शिक्षकों की रहेगी, बाद में धीरे-धीरे इसमें बच्चों को सहभागी बनाया जा सकता है।

(ख) जिम्मेदारियाँ किसे क्या-क्या करना होगा:- जैसे

(1) शिक्षा विभाग की भूमिका: इस दिवस को सूचना विहीन दिवस घोषित किया जाए। शिक्षकों को बैठक, प्रशिक्षण या अन्य कार्यों से मुक्त रखा जाए। सप्ताह में आने वाले समस्त पर्व, त्योहार, कार्यक्रम आदि शनिवार को ही आयोजित हो। इस दिवस को औपचारिकताओं से दूर रखा जाए, विद्यालयों को उनके अनुसार बेहतर क्रियान्वयन की पूरी आजादी हो। एक रिपोर्ट प्रत्येक विद्यालय को प्रेषित करनी हो जिसमें कार्यक्रम की अच्छाइयों,

www.rajsevak.com

मजबूतियों, नवाचारों का जिक्र हो क्योंकि जितनी औपचारिकताएँ होगी कार्यक्रम उतना औपचारिक होता जाएगा।

(2) विद्यालय प्रशासन की भूमिका:– प्रत्येक विद्यालय अपने शिक्षकों एवं बच्चों के सहयोग से उपलब्ध संसाधनों के आधार पर एक सुव्यवस्थित कार्य योजना तैयार करनी होगी जिसमें शनिवार की शुरूआती सत्र से समापन सत्र की गतिविधियों का विवरण, शिक्षकों की जिम्मेदारियाँ, बच्चों की सहभागिता, समुदाय की भागीदारी आदि का स्पष्ट उल्लेख हो। प्रत्येक को अपनी जिम्मेदारी की स्पष्टता हो ताकि शनिवार में स्फूर्ति, ऊर्जा, जीवन्तता नजर आए। बच्चों को दो दिवस पूर्व ही कार्य योजना की जानकारी दी जानी चाहिए। प्रत्येक बच्चा किसी न किसी गतिविधि में सहभागी हो यह सुनिश्चित करना।

(3) शिक्षकों की भूमिका:– इस कार्य में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका तो शिक्षक को ही निर्वहन करनी है। आखिरकार वह ही तो विद्यालय का अहम केन्द्र बिन्दु है। विद्यालय के प्रत्येक क्षण को गतिमान, स्फूर्तिवान, ऊर्जावान, जीवन्त बनाए रखने का दायित्व शिक्षक के मजबूत कन्धों पर ही होता है। समस्त जिम्मेदारियों के समस्त गतिविधियों पर अपनी अनुभवी नज़र बनाए रखना, मार्गदर्शन करते रहना, बच्चों को प्रोत्साहित करते रहना, प्रत्येक बच्चे की सहभागिता सुनिश्चित करना, अनुशासन बनाए रखना, भयमुक्त माहौल बनाए रखना, निरन्तर अवलोकित करते रहना, समीक्षा करते रहना एवं सुधार करते रहना ही शिक्षकों की भूमिका है। विद्यालय की कार्य योजना का बेहतर क्रियान्वयन ही शिक्षक का सही कार्य है।

(4) बच्चों की भूमिका:– यह सब कुछ आखिरकार बच्चों के लिए ही तो हो रहा है। प्रत्येक बच्चा अपनी रुचिकर गतिविधि से जुड़े, गतिविधि में बदलाव भी होता रहे बच्चों की सहभागी होना, अनुशासन में रहना, नेतृत्व करना, जिम्मेदारी लेना जरूरी है। जितना वह जिम्मेदार होगा उतना ही उनका विद्यालय से लगाव एवं अपनापन बढ़ेगा। बच्चों में विद्यालय के प्रति अपनत्व की भावना का विकास हो तथा वह यह कह सके कि 'मैं इस स्कूल में पढ़ता हूँ' बच्चा ही समुदाय में हमारे विद्यालय की अच्छाइयों का संदेशवाहक है। इस दिवस पर बच्चे विद्यालय की कोई भी भूमिका निभा सकते हैं।

(ग) कार्य योजना (प्लान ऑफ एक्शन):–

- समयावधि क्या होगी?
- गतिविधियों की प्राथमिकता क्या होगी?
- जिम्मेदारियों एवं प्रभारियों का कार्य विभाजन।
- तैयारियों का लेखा–जोखा।
- उपलब्ध संसाधनों का बेहतर उपयोग।
- सामूहिक सत्र, शुरूआती एवं समापन सत्र।
- आवश्यक दिशा निर्देश/मार्गदर्शक बिन्दु।
- समुदाय की भागीदारी।
- समीक्षा।
- न्यूनतम दो दिवस पूर्व बच्चों को इसकी सूचना/जानकारी दी जानी चाहिए।
- सामूहिक सत्र में किसी विशेषज्ञ को आमंत्रित किया जा सकता है।
- कार्य योजना जितनी बेहतर होगी क्रियान्वयन उतना बेहतर होगा।
- जिम्मेदारी लेना एवं जिम्मेदार होना जरूरी है।
- जितना हो भाषण/व्याख्यान कम से कम होने चाहिए।

(घ) विशेष ध्यान रखने योग्य बातें:–

- अनुशासन का होना बेहद जरूरी है। समस्त गतिविधियों में यदि अनुशासन नहीं होगा तो उनके बेहतर परिणाम नहीं आ सकते। फिर बच्चों को अनुशासन सिखाना भी विद्यालय का एक मुख्य उद्देश्य/अंग है। अनुशासित बच्चा हर जगह अनुशासित ही रहेगा और हर वक्त घर, परिवार, समाज एवं विद्यालय के लिए हितकर होगा।
- समुदाय की भागीदारी एवं साझेदारी को सोच–समझकर ही गतिविधियों का हिस्सा बनाएँ। इसके लिए योजना बनाना जरूरी है।
- प्रत्येक गतिविधि में जेंडर इक्विटी को ध्यान में रखना बेहद जरूरी है।
- सामूहिक सत्र, उदासीन सत्र, व्याख्यान सत्र जितना हो सके न्यूनतम हो।
- बच्चों में अपरिक्वता होती है इसलिए उनको कोई भी जिम्मेदारी देने के साथ–साथ उन पर नजर बनाए रखना आवश्यक है।
- समस्त गतिविधियों में किसी भी प्रकार के भेदभाव को प्रोत्साहित नहीं करें।
- कोई भी इलेक्ट्रॉनिक उपकरण सीधे ही बच्चों को न सौंपे जैसे यू ट्यूब, इन्टरनेट आदि शिक्षक पहले उनको देखकर तसल्ली करें ताकि कोई गैर मुनासिब वीडियोज बच्चों के पास न चला जाए।
- चाहे गतिविधियाँ सीमित ही क्यों न हो, लेकिन जितनी हो उनमें सक्रियता, जीवन्तता, रचनात्मकता, रोचकता, अनुशासन आदि नज़र आना चाहिए।
- शिक्षकों की भूमिका साफ झलकनी चाहिए। यह एक ऐसा दिवस है जिसमें शिक्षक अपनी सक्रिय भूमिका निभाकर स्वयं को ऊर्जावान एवं स्फूर्तिवान बना सकते हैं।

(ङ) उपसंहार:– यह एक बस्ता विहीन, शिक्षण विहीन, सूचना विहीन, दबाव विहीन, शाला गणवेश विहीन, रोचक दिवस हो सकता है। कहीं कोई नीरसता नहीं, भय नहीं, तनाव नहीं। सब कुछ सहज, सरल, शिक्षक इस दिवस को शारीरिक एवं मानसिक दबाव, तनाव, थकान को दूर कर खुद को नई ऊर्जा से परिपूर्ण कर बच्चों में बच्चे जैसा बनकर आनंददायी बना सकते हैं।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
तिजारा, अलवर–। (राज.)

वह देखो पास खड़ी मंजिल
इंगित सी हमें बुलाती है।
साहस से बढ़ने वालों के
माथे पर तिलक लगाती है।

www.rajsevak.com

पुस्तक समीक्षा

किनारा

लेखक : डॉ. राधा किशन सोनी **प्रकाशक** : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली **संस्करण** : 2019
पृष्ठ : 20 **मूल्य** : ₹ 20

बालक को उसके माता-पिता सबसे प्रिय होते हैं। वह एक क्षण के लिए भी उनसे अलग नहीं रह सकता है। किन्तु जैसे-जैसे वह बड़ा होता है, पढ़ लिखकर अपने पैरों पर खड़ा हो जाता है। उसकी शादी हो जाती है, उसके अपने बच्चे हो जाते हैं तो माता-पिता से उसका मोह भंग हो जाता है। एक स्थिति ऐसी आ जाती है कि वह अपने माता-पिता से एक दम किनारा कर लेता है। जब बूढ़े माता-पिता को उसके सहारे की जरूरत होती है वह उनसे किनारा कर लेता है और उन्हें एकदम अनाथ बना देता है। जब से एकल परिवार का प्रचलन बढ़ा है, बुढ़ापा एक अभिशाप बन गया है। यह घर-घर की कहानी बन गया है।

डॉ. राधा किशन सोनी ने समाज की इस ज्वलन्त समस्या को अपनी पुस्तक 'किनारा' में बहुत ही प्रभावी ढंग से कथानक के रूप में पाठकों के सामने रखा है। कहानी के पात्र बुजुर्ग खेमचन्द जिसकी पत्नी का निधन हो गया है, अक्सर बीमार रहता है किन्तु बेटे, बहू व पोते-पोती ने उससे मुँह फेर लिया है। एक दूसरा बुजुर्ग गिरधर जो कभी कलेक्टर हुआ करता था आज अपने ही घर में अपने बेटे गोपी और बहू प्रियंका के आँखों में गड़ने लगा है। वे उससे छुटकारा पाना चाहते हैं। तीसरा बुजुर्ग रतनलाल जो गिरधर के बेटे गोपी का ससुर है वह भी अपने बेटे महेश से उपेक्षित है।

बुजुर्ग लाधूराम जो रिश्ते में बुजुर्ग गिरधर का छोटा भाई है वृद्धाश्रम से जुड़ा हुआ है। वह वहाँ अक्सर जाता है और वृद्धों की सेवा करता है। एक दिन वृद्धाश्रम में कार्यक्रम का आयोजन कर वृद्धों को सम्मानित किया जाता है। बुजुर्ग गिरधर को भी शॉल और स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया जाता है। गिरधर और रतनलाल दोनों वृद्धाश्रम में ही रहने लग जाते हैं। बेटे बहू खुश होते हैं कि अच्छा हुआ बूढ़े से पिण्ड छूट गया। किन्तु जब गोपी बुजुर्ग चुन्नीलाल के लावारिश की हालत में मरने की बात अपनी पत्नी प्रियंका को बताता है तो वह सोचने को मजबूर हो जाती है कि एक दिन वे बूढ़े होंगे। फिर उनका बेटा राघव उनकी सेवा क्यों करेगा? इससे बेटे गोपी और बहू प्रियंका की एकाएक भावना बदल जाती है। वे वृद्धाश्रम जाकर गिरधर को अपने घर लाते हैं। रतनलाल भी अपने बेटे महेश के साथ खुशी-खुशी अपने घर चला जाता है।

लेखक डॉ. सोनी ने अपनी कहानी में इस समस्या के कारण को उजागर किया है। पात्र गिरधर कहता है, 'मैं भी माँ-बाऊजी से कब मिला? कलेक्टर जो था। फुर्सत ही नहीं मिलती थी। सब करनी का फल है बेटा।' और यही बात बूढ़ा चुन्नीलाल अपनी मौत के समय कहता है, 'माँ-बाप की सेवा नहीं की। इसी का फल भोग रहा हूँ। आज मेरे बच्चे मेरे पास नहीं। मौत के समय भी नहीं।.....' कहानीकार ने इस समस्या का समाधान भी सुझाया है।

चुन्नीलाल की बात को सुनकर प्रियंका सोचने को मजबूर होती है-'कल हम भी बूढ़े होंगे। राघव हमारी सेवा नहीं करेगा तो हम भी बेमौत मरेंगे।' यह सोचकर वह अपने पति गोपी और बेटे राघव को लेकर वृद्धाश्रम को जाती है। गिरधर से माफी माँगते हैं और उसे आदर के साथ अपने घर लाते हैं। इस कहानी के माध्यम से कहानीकार यही संदेश देना चाहता है कि अगर हम आज अपने बुजुर्ग माँ-बाप की सेवा करेंगे तो जब हम बूढ़े होंगे तो हमारी संतान निश्चित ही हमारी सेवा करेगी।

पुस्तक की भाषा सरल है। छोटे-छोटे वाक्यों के प्रयोग की कारण पुस्तक नव साक्षरों के स्तरानुकूल है। बीच-बीच में कथानक के अनुसार चित्रों के कारण पुस्तक आकर्षक बन गई है। पुस्तक नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी दोनों के लिए उपयोगी है।

समीक्षक : **ओम प्रकाश तँवर**
प्राध्यापक (सेवानिवृत्त)
डी-213, अग्रसेन नगर, चूरू (राज.)-331001
मो: 9460565427

स्वागत चाँद तुम्हारा

लेखक : डॉ. कृष्णा आचार्य **प्रकाशक** : कलासन प्रकाशन, मॉडर्न मार्केट, बीकानेर **संस्करण** : 2019
पृष्ठ : 80 **मूल्य** : ₹ 150

रचनाकारों में कवियों के बारे में कहा जाता है कि कवि क्षण भर का ऋषि होता है। एक पल में एक सदीं का सफर तय कर उस अनंत का अनुभव क्षणभर के लिए ही सही, कर लेना कवि के लिए एक सहज कृत्य है। तब तो यह अपने आप ही स्पष्ट हो जाता है कि कवि पाठक के लिए ऐसी दिव्य अनुभूति का सरल-सहज माध्यम है। ऐसे में जब किसी मंझे हुए कवि अथवा कवयित्री का लेखन हमारे हाथों में आता है तो हम पाठक भी ईश्वर की दिव्य अनुभूति की गलियों से गुजर आते हैं। अब आप इसे आध्यात्मिकता कह ले या मनोरंजन की श्रेष्ठ वृत्ति।

कवयित्री डॉ. कृष्णा आचार्य की नवप्रकाशित कृति 'स्वागत चाँद तुम्हारा' उक्त बात को अक्षरसः प्रमाणित करती है। डॉ. आचार्य की इससे पहले भी कुछ चर्चित काव्य कृतियाँ आ चुकी हैं, अतः इस काव्य-संग्रह में उनकी कविताएँ काफी परिपक्वता लिए हुए हैं। लगभग 52 कविताओं का यह गुलदस्ता पेज-दर-पेज मन को महका जाता है।

कविताओं में 'हे शारदे माँ वरदान दो!', 'जय हो परशुराम', 'जै गोमाता', 'तुलसी का बिरवा' जैसी कविताओं में शुद्ध आध्यात्मिकता के भाव समाहित हैं। इन कविताओं के माध्यम से मानवीय मनोभावों को शुद्ध रखने की प्रेरणा तो मिलती ही है, साथ ही पौराणिक पात्रों का परिचय, गाय जैसे पवित्र पशु के वैज्ञानिक गुणों के बारे में भी पता चलता है। अनीति-तारक, पाप-मोचक, अद्भुत बलशाली/महावीर सा रूप, व्याघ्रचर्मधारी, जटाजूट भारी/न्याय-प्रतीक परशु उनका, न्यायाधीश अभिराम/पवित्र हृदय, पावन चरित्र, जय हो परशुराम' (जय हो परशुराम) में ऋषि परशुराम का शारीरिक और चारित्रिक वर्णन सटीक भाव से किया गया है।

www.rajsevak.com

कुछ कविताओं में युवा वर्ग को निराशा के गर्त से निकल, आशा का दामन थामने की प्रेरणा दी गई है। 'हरियाली की चादर ओढ़े/काँटों में गुलाब ढूँढ़ता/अनजान सा चलता रहा/ अकेला दीपक जलता रहा' (दीप अकेला जलता रहा), 'मिलती नहीं मुफ्त में खुशियाँ/त्याग-तपस्या जरूरी है/स्वयं तपता दीपक है तो/बाती का जलना जरूरी है' (बाती भी जलती है पूरी), 'काँटों पर चलने वाले/रास्तों को कसूरवार/नहीं ठहराते' (आदमी), एक बीज से पौधा/और उसकी जीवन-गाथा/संवरने में/वक्त तो लगता है' (वक्त तो लगता है) सरीखी कविताओं में युवाओं को दृष्टिभ्रमित नहीं होने की प्रभावी सलाह दी गयी है।

प्रेम समस्त रचनाकारों का प्रिय विषय रहता है। वैसे भी प्रेम के बिना जीवन में सरसता कहाँ रह जाती है। प्रेम है तो जीवन के हर क्षण को जी लेने की चाहत बनी रहती है। 'चाँद मुरझाता नहीं/सूरज को ही ढलना पड़ता है/चाँद के स्वागत में (चाँद के स्वागत में)। यहाँ प्रेम की मार्मिक अभिव्यक्ति तत्कालीन साहित्य में कहीं और दृष्टिगोचर नहीं होती। 'सुनो जी!' शृंखला की कविताएँ पति-पत्नी के बीच के प्रेम की उष्मा को प्रभावी ढंग से दर्शाती हैं। सुनो, मेरे लिए/तुम्हारा साथ/सूर्य-उष्मा है/जिसे मैं पाकर/बन जाती हूँ धूप' (सुनो जी!-2), उसके हँसने से/पता चलता है/चाँद का आकार/स्मृति में लौट आता है/ऋतुसंहार कालिदास का' (हँसती है वह), जब दूरियाँ नहीं तो/स्याही की नजदीकियाँ /जानता है कौन!' (प्रेम-पत्र)। प्रेम के रंग से रंगी कविताओं में कहीं-कहीं जमाने में आए बदलावों से उपजी प्रेम की कृत्रिमता पर व्यंग्य है तो साथ-साथ एक दबी-दबी सी शिकायत भी।

प्रेम हो तो वहाँ वीर रस का आ जाना भी स्वाभाविक है। एक प्रेमिल मन की स्वाभाविक रूप से वीर-रस का आस्वादन कर सकता है। 'शहीद की शहादत', 'हम करते हैं अभिनंदन', 'हो जाओ तैयार साथियों!' कविताओं में देश की रक्षा के लिए हरपल अपनी जान की बाजी लगा देने को तत्पर हमारे शूरवीरों का गुणगान बेहद सशक्त भाव से किया गया है। 'दुर्गम बर्फानी घाटी में/अलख जगाए माटी में/निज स्वार्थ त्यागे जो हर क्षण/हम करते हैं अभिनंदन' (हम करते हैं अभिनंदन), 'बर्फ में डटे हुए देश की करते पहरेदारी/सब धर्मों में बड़ा धर्म है देशहित रक्षा करना/सबसे बड़ा कर्म है। देशहित, दूश्मन से लड़ना/हर दुख में हर सुख में, वो करते पहरेदारी/शहीद के शहादत के हालात उत्पन्न होने पर भी बालिकाओं की भ्रूण-हत्याएँ थम नहीं रही। सामाजिक व्यवस्था में तो उन्हें अभी भी हेय दृष्टि से ही देखा जाता है। इसी बात को कवयित्री रेखांकित करते हुए एक जगह पर अपना आक्रोश व्यक्त करते हुए समाज को समझाने का प्रयत्न करती है- 'अब न बेटा तेरा अभिमान/बेटी का भी कर सम्मान/सोच को थोड़ा आज बदल दे!/नन्हीं कलियों से बगिया भर लें!' (नन्हीं कलियों से बगिया भर लें!) तथा 'सृष्टि का आह्वान बेटियां/कुदरत का वरदान बेटियां/वेद पुरान-कुरान बेटियाँ/भारत की हैं शान बेटियाँ' (बेटियाँ ये बेटियाँ)।

संग्रह की कुछ अन्य कविताएँ जीवन के विविध रूपों से प्रभावित होकर लिखी गई हैं। इनमें ईश्वर, आत्मा, हार-जीत, विषाद आदि पर गहन चिंतन किया गया है। 'आत्मा में रत प्रकाश/भूलते क्यों हो?/परमात्मा में पत्थरों को/ढूँढ़ते क्यों हो?' (भीतर-प्रकाश)। यहाँ कवयित्री ने परमात्मा में पत्थरों को ढूँढ़ने की जो बात कही है, वह सतही नहीं है। इस पर पाठक के गहन चिंतन की दरकार है। आमतौर पर पत्थरों में भगवान ढूँढ़ने की जो बात कही है, वह सतही नहीं है। इस पर पाठक के गहन चिंतन की दरकार है। आमतौर पर पत्थरों में भगवान ढूँढ़ने की निरर्थकता को प्रकट किया जाता है, जबकि कवयित्री का कहना है कि जो सबमें उपस्थित है, उसे पत्थर मात्र में सीमित कर के आँकना या देखना किस स्तर की बुद्धिमत्ता है। 'तलाश एक ऐसे आदमी की/जो मिट जाए स्वयं भले लेकिन/बसा जाए किसी की/महकी हुई हस्ती' (तलाश) में त्यागी इंसानों के प्रति कृतज्ञता प्रकट की गई है। 'उतार दी लाज की गठरी/दबा रही थी बन बोझ/सिर को/रद्दी के साथ रख दिया उसे/कबाड़खाने में' (वजूद की पहचान) में स्त्री-स्वतंत्रता का पुरजोर समर्थन किया गया है। 'आकाश तो छोटा होता नहीं/मैंने हैरत से पूछा/यूं बढ़ते रहोगे/तो कहाँ होगा/परिवार..... परिवार को खाते ऐ बाजार!' (ऐ बाजार!) में शरीर से होते हुए आत्मा में धंस रहे भौतिकवादी व्यवस्था पर अंगुली उठाई है। निश्चय ही आज बाजार ने परिवार में विभिन्न यांत्रिक माध्यमों से प्रवेश कर उसकी निजता भंग कर, नैतिक चरित्र को गिराने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी है।

संग्रह की शेष कविताएँ भी बेहद मार्मिक और प्रभावशाली बन पड़ी हैं। कवयित्री ने जीवन के जितने भी चित्र देखे हैं, उन्हें शब्दों के द्वारा प्रभावशाली भावाभिव्यक्ति देने का पुरजोर प्रयास किया है और उनका यह परिश्रम पेज-दर-पेज इस संग्रह में नजर भी आता है। इस जीवन को हम जीते सभी हैं, लेकिन इसके प्रत्येक पल का साक्षी होना, यह केवल एक संवेदनशील मन के बूते की बात ही हो सकती है। केवल साक्षी भाव ही नहीं होना बल्कि उसे अन्य लोगों के समक्ष सशक्त ढंग से प्रस्तुत करना भी किसी की प्रतिभा का जीवन्त प्रमाण होता है। कवयित्री डॉ. कृष्णा आचार्य ने उसी भाव से चाँद का जो स्वागत किया है, निश्चय रूप से उस का स्वागत हमें भी करना चाहिए।

समीक्षक : **शैलेन्द्र सरस्वती**
बीकानेर, राज.

सामाजिक सरोकार की सार्थक अनुभूतियाँ (अभिमत)

लेखक : जुगराज राठौर **प्रकाशक** : जन चेतना प्रकाशन, बी-422, आर.के. पुरम कोटा-10 **पृष्ठ** : 66 **संस्करण** : दिसम्बर, 2019 **मूल्य** : ₹110

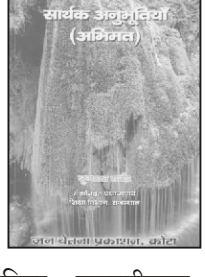

'सामाजिक सरोकार की सार्थक अनुभूतियाँ' श्री जुगराज राठौर का प्रथम लेख संग्रह है। पुस्तक में श्री राठौर ने सामाजिक सरोकार को आधार बनाकर 24 सार्थक लेख लिखे हैं। ये लेख सामाजिक सरोकार से जुड़े विषयों यथा-महिला सशक्तीकरण, सांस्कृतिक वैभव, उत्तम स्वास्थ्य, व्यक्तित्व विकास, सामाजिक कुरीतियाँ, युवा पीढ़ी इत्यादि पर आम भाषा में प्रस्तुत किए गए हैं, जो आत्मविकास व ज्ञानवर्द्धन में सहायक होने के साथ-साथ ऐसे बदलावों की बात कहते हैं, जो आज के सामाजिक-पारिवारिक ताने-बाने के लिए जरूरी है।

लेखक ने प्रथम समय प्रबंधन में समय के सदुपयोग व अवसर को पहचानने के सटीक व उपयोगी बिंदुओं को इंगित किया है, जो जीवन में

www.rajsevak.com

सफलता का मार्ग प्रशस्त करते हैं। 'कॅरियर का चुनाव कैसे हो' लेख में माता-पिता द्वारा निर्देशित व्यवसाय चुनने की बजाय अपनी स्वयं की रुचि का व्यवसाय चुनने का संदेश देते हुए उचित कॅरियर के चुनाव हेतु मार्ग निर्देशक सिद्धांतों का निरुपण किया गया है। 'सामाजिक उत्थान में महिला शिक्षा की भूमिका' नामक लेख में नारी शक्ति को उचित ही समाज की उन्नति का प्रमुख सोपान माना गया है। सफलता का प्रमुख पायदान-पुरुषार्थ लेख में सफलता हेतु पुरुषार्थ के महत्त्व को प्रकाशित करते हुए सफलता के स्वर्णिम सूत्रों का उल्लेख युवाओं की प्रगति का मार्ग प्रशस्त करने वाला है।

'वृद्धावस्था : हारिये ना हिम्मत' लेख में सुखमय वृद्धावस्था हेतु बुढ़ापे के प्रति स्वयं की सकारात्मक सोच एवं स्वयं उपयोगी बने रहने के गुर निश्चय ही कारगर हैं। 'समाज में प्रचलित अंधविश्वास' लेख में बुद्धिजीवियों व नौजवानों को समाज में व्याप्त अंधविश्वासों को दूर करने का आह्वान है। 'परिवर्तनों को स्वीकारना होगा' लेख में लेखक प्रीवेडिंग फोटो शूटिंग, लिव इन रिलेशनशिप आदि असंगत नवीनतम परम्पराओं को गहराई से खंगालते है, परन्तु पठनीयता नहीं खोने देते। 'किशोरावस्था एक चुनौती' नामक लेख में माता-पिता को किशोर/किशोरी को उनकी रुचि के कामों में संलग्न करने का संदेश है। 'साक्षात्कार कला व विज्ञान' लेख में बताए गए गुरु साक्षात्कार देने वालों के लिए प्रेरणादायी है।

'जेनरेशन गेप' नामक लेख में लेखक सहनशीलता, नैतिकता व धैर्य का अवलम्ब लेकर कलह को दूर रखने का सहज समाधान प्रस्तुत करते है। 'वैज्ञानिक कसौटी पर हमारी सेहत व संस्कृति' लेख में लेखक हाथ मिलाने से एक व्यक्ति के कीटाणु दूसरे तक पहुँचे के खतरे से सतर्क रहते हुए समाधान प्रस्तुत करते हैं कि हाथ जोड़कर नमस्कार करने से ऐसी कोई समस्या उत्पन्न नहीं होती। वर्तमान में कोरोना वायरस खतरे के परिप्रेक्ष्य में इस लेख में उनकी एक सामर्थ्यवान दूर दृष्टि देखी जा सकती है, निःसंदेह वे एक दृष्टिवान और समर्थ लेखक है। 'बाल विवाह' लेख में इस कुरीति से मुक्ति हेतु लेखक समाज के प्रबुद्धजनों, अभिभावकों व युवाओं से समझदारी व जिम्मेदारी का परिचय देते हुए इसे समूल नष्ट करने का आह्वान करते है। वैवाहिक खर्चों में कटौती लेख में लेखक वैवाहिक व्यय पर नियंत्रण हेतु व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करते हैं कि हमें इस प्रकार के विलासितापूर्ण आयोजनों की वाह-वाही करने व ऐसे लोगों को आदर्श मानकर उनका गुणगान करने की प्रवृत्ति को हतोत्साहित करना होगा। 'गौ संरक्षण व संवर्धन में हमारी भागीदारी' लेख में लेखक इस मुद्दे पर सामाजिक समरसता बिगड़ने पर चिंता प्रकट करते हुए समाधान सुझाते हैं कि अब इनके संरक्षण से नहीं बल्कि गोधन की उपयोगिता बढ़ाने से ही समस्या पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

श्री राठौर का लेख संग्रह 'सामाजिक सरोकार की सार्थक अनुभूतियां' उनकी चार दशक की साधना का प्रतिफल है। कुल मिलाकर पुस्तक के सभी लेख प्रेरक, सकारात्मक सोच व ज्ञान परिपूर्ण है व प्रोत्साहन के भाव को निरंतर प्रवाहमान करते हैं। पुस्तक समग्र रूप से पठनीय बनी है, लेखक को इस हेतु साधुवाद।

समीक्षक : **राम गोपाल प्रजापति**
आर.ए.एस. (सेवानिवृत्त)
बी-36, नारायण निवास, समता नगर, बीकानेर
मो: 9414470251

पिता मेरे (लंबी कविता)

लेखक : संतोष एलेक्स **प्रकाशक :** इंडिया नेटबुक्स, सी-122, सेक्टर-19, नोएडा-201301 **संस्करण :** 2020 **पृष्ठ :** 52 **मूल्य :** ₹ 100

चर्चित अनुवादक-कवि डॉ. संतोष एलेक्स विगत बाइस वर्षों से अनुवाद के क्षेत्र में सक्रिय हैं। वे देश-विदेश में पाँच भाषाओं- तमिल, तेलगू, मलयालम, अंग्रेजी और हिंदी के परस्पर अनुवादक के रूप में ख्याति रखते हैं। एक अच्छा अनुवादक एक अच्छा रचनाकार होता है और रचनाकार यदि अनुवादक हो तो वह बेहतर अनुवाद करता है। अनुवाद भी अनुसृजन होकर भी एक रचनाकार के लिए सृजन ही होता है। संतोष अनुवाद और सृजन से भारतीय साहित्य की सेवा कर रहे हैं। उनकी मौलिक कृतियाँ मातृभाषा के साथ हिंदी में भी प्रकाशित हैं। 'पांव तले की मिटटी' (2013) और 'हमारे बीच का मौन' (2017) के बाद उनका नया संग्रह 'पिता मेरे' (2020) आया है।

'पिता मेरे' एक लंबी कविता है जिसमें कवि के व्यक्तिगत जीवन की अभिव्यक्ति अंश दर अंश विभिन्न छवियों के रूप में सामने आती है। जीवन में माता-पिता का महत्त्व होता है और इसको कोई रचनाकार अथवा यूँ कहे कवि-मन अधिक संवेदनशीलता के साथ ग्रहण करता है। जो चीजें हमारे बेहद करीब होती है, उन पर लिखना बेहद कठिन होता है। पिता के साथ जीवन में आगे बढ़ते हुए उनकी उपस्थिति का अहसास होता है किंतु यही अहसास उनके ना रहने पर सांद्र हो जाता है। पिता की रिक्ति में उनकी अनुपस्थिति को एक कवि हृदय जब पूर्व दीप्ति में हमें होले होले अपने साथ लेकर जाता है तो हम उसके शोक में शामिल होते जाते हैं। 'पिता मेरे' का पाठ असल में एक यात्रा है जिसे हम कवि संतोष के साथ कविता को पढ़ते हुए निकलते हैं। यहाँ किसी का शोर नहीं है और शोक में भी कोई किसी प्रकार की कोई आवाज नहीं है। रोना-चीखना-चिल्लाना-कोसना कोई सामान्य नहीं है। 'पिता का रोना/ यूं संभव नहीं होता/ पिता चिल्लाएंगे/ रोएंगे नहीं/ पिता का रोना/ उनकी कमजोरी नहीं/ ताकत है/ इसलिए पिता का स्थानापन्न/ केवल पिता ही है।'

'पिता मेरे' कविता के आरंभ में समर्पण पृष्ठ पर कवयित्री गगन गिल की पंक्तियाँ हैं- 'पिता ने कहा-/ मैंने तुझे अभी तक/ विदा नहीं किया/ तू मेरे भीतर है/ शोक की जगह पर।' बेशक यह पिता-पुत्री के संदर्भ से जुड़ी कविता है किंतु इसमें जो कहा-अनकहा सत्य है उसका एक दूसरा रूप संतोष अलेक्स की कविता में मिलता है। पिता अपने अंतिम समय से पहले पुत्र संतोष को कुछ कहना चाहते थे किंतु वे कह नहीं सके अथवा उन्होंने कहा किंतु संप्रेषित नहीं हुआ अस्तु यह कविता पिता के अनकहे को सुनने-सुनाने की कविता कही जा सकती है। पिता अपने पूरे परिवार जिसमें पुत्र भी शामिल है को जीवन भर अपने कार्यों और व्यवहार से बहुत कुछ कहते रहे, इसका अहसास इस कविता में मिलता है। 'काफी बातें समझाई/ लगा कि मेरे साथी हैं/ बड़े भाई हैं/ शुभचिंतक हैं/ गुरु हैं/ पिता मेरे।'

www.rajsevak.com

कवि अपने आत्मकथ्य में लिखता है- 'मेरे लिए पिता जी की मृत्यु स्वाभाविक नहीं आकस्मिक थी। वे मेरी ताकत थे। जीवन में उन्होंने कई चुनौतियों का सामना किया। अपनी सुख-सुविधाओं को त्याग कर हमें अच्छी तालीम दी।' इसी क्रम में उनकी इच्छा के रहते संतोष अलेक्स हिंदी अध्यापक नहीं हिंदी अधिकारी बने तो वे खुश हुए और उनके ना रहने पर माँ के आग्रह पर जब उनका सूटकेस खोला गया तो उसमें दिखाई दिया कि एक पिता अपने पुत्र के लेखक और अनुवादक जीवन को सहेज रहा था। ऐसा क्यों? कवि इसे समझ नहीं पाता और उसे यह पहेली लगती है। यह जीवन है और यही कुछ 'पिता मेरे' कविता में रूपांतरित हुआ है। जीवन, आत्मकथा अथवा दैनिक डायरी को जब हम कविता के प्रांगण में ले जाते हैं तब पहला प्रश्न यही कि यह कविता क्यों? इसके समानांतर यह भी कि कविता क्यों नहीं? आत्मकथा, डायरी अथवा अन्य कोई भी विधा में कविता जैसा वितान अथवा फलक नहीं हो सकता है। कविता अनकहे को भी कहते हैं और अनदेखे को भी देखती-दिखाती है। इसलिए भी 'पिता मेरे' को पिता के अनकहे को सुनने-सुनाने की कविता कहा जा सकता है।

जीवन में जो घटित हुआ जो अनसुना अथवा समझ की परिधि से बाहर रह गया वह कविता के ग्राफ में उतरते हुए होले होले उस परिधि में समाहित होता जाता है। संतोष बिना किसी काव्य-उक्तियों और वक्रोतियों के बेहद सरल सहज ढंग से अपने मौन में अंतर्निहित अवसाद को शब्द देते हैं कि मेरे जैसे किसी पाठक जो जिसने असल जीवन में पिता को खोने का दुख दबाए रखा है वह द्रवित होने लगता है। 'पिता मेरे' कविता एक अहसास की कविता है जिसमें पिता के अद्वितीय अहसास को सहेजने का काव्यात्मक उपक्रम हुआ है। कवि का इस कविता में छोटी-छोटी स्मृतियों के तंतुजाल को खोलना असल में एक बड़ा रूपक रचना है। जिसमें पिता का सान्निध्य है और संबंधों की ऊष्मा में व्यष्टि का समष्टि में रूपांतरण भी। कोई भी पिता अपनी संतान को मुक्त नहीं करता अथवा यह कहें कि वह स्वयं मुक्त होता ही नहीं है। इस संसार में नहीं होकर भी वह अपनी पीढ़ियों में खुद को जिंदा रखता है। उसका चेहरा नाम और रंग-रूप बेशक बदल जाए किंतु पिता ही है पालनहार। वह अपने सृजन के अंश में सजृन को सृजनरत रहने की आकांक्षा और क्षमता भी देता है। 'खुशी इस बात की है/ कि परिवार के सदस्यों की/ यादों में, सांसों में/ जीते हैं वह आज भी।'

भूमिका में प्रख्यात कवि लीलाधर जगूड़ी लिखते हैं- 'किसी एक विषय पर लंबी कविता कवि को संकटापन्न स्थिति में डाल देती है। लेकिन छोटी-छोटी चिंगारियों से ही यह आग जलती है जो एक लंबे समय तक सूर्य की तरह प्रकाश देने का काम करती है।' असल में किसी भी पाठक के मन में दबी ऐसी ही कुछ चिंगारियों को 'पिता मेरे' कविता हवा देने का काम करती है। 'मेरे लिए/ दो पैरों पर चलते/ ईश्वर का नाम है पिता।'

समीक्षक : **डॉ. नीरज दइया**
सी-107, वल्लभ गार्डन, पवनपुरी, बीकानेर-334003
मो. 9461375668

कविताएँ

कोरोना के प्रति जागरूकता है जरूरी

दो गज की रखनी है दूरी
मास्क लगाना भी है जरूरी
हाथ धोने में सावधानी बरतें
कोरोना के प्रति जागरूकता जरूरी
घर से बाहर निकलो जब
हो बहुत जरूरी
एक दूसरे से बनाए रखना दूरी
जहाँ तक हो सके
अपनी जरूरतें घर में ही करो पूरी
कोरोना के प्रति जागरूकता जरूरी
बुड्ढें बच्चों पर ज्यादा
ध्यान देना है जरूरी
भेजो ना बाहर उनको
जब तक ना हो कोई मजबूरी
कोरोना के प्रति जागरूकता जरूरी
भीड़-भाड़ वाली जगह से
बनानी है दूरी
ज्यादा जरूरी होने पर ही
तय करनी है ज्यादा लंबी दूरी
हाथ मिलाना छोड़,
दूर से करो नमस्ते
अनजान चीजों को
छूने से रखे दूरी
कोरोना के प्रति
जागरूकता है जरूरी
आओ कोरोना में
सरकार का सहयोग कर
अपनी जिम्मेदारी निभाते हैं
कोरोना के प्रति जागरूकता से
अपने आपको और
सब को इस से बचाते हैं।

-सुनीता कुमारी
अध्यापिका, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय
चारणवास, हुडील, ब्लाक कुचामन, नागौर (राज.)-341509
मो: 9413339682

शिक्षक जिन्दगी कर्म की वेदी

कोरोना कहर महामारी इंसान
समर्पित शिक्षक सेवा पहचान।
कर्म अपना अभिनत सुन्दर
है अनन्त गुण शक्ति अन्दर।
जुनून चाहे कोई काम
लक्ष्य कोरोना बचाएं प्राण।
नाम का कभी ना चाहा
फिकर ना अपनी जिन्दगी स्वाहा।
दिन-रात फर्ज अपना
सन्तोष हरपल ही मुस्कान।
शिक्षक जिन्दगी कर्म की वेदी
कोरोना जंग आहुति दे दी।
शिक्षक बिन सूना संसार
नमन शिक्षक कर्तव्य महान।

-सत्यनारायण नागोरी
व्याख्याता
रा.उ.मा.वि. केलवाड़ा, राजसमंद (राज.)-313325
मो: 9610334431

www.rajsevak.com

बालशिविरा

अपनी राजकीय शालाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा सृजित एवं स्वरचित कविता, गीत, कहानी, बोधकथा एवं चित्रों को इस स्तम्भ में प्रकाशन हेतु नियमित रूप से संस्थाप्रधान/बालसभा प्रभारी भिजवाएं। श्रेष्ठ का चयन करते हुए इस स्तम्भ में प्रकाशन किया जाता है।

-व. संपादक

(1) हिन्दी : राष्ट्र भाषा

हिन्दी हमारी शान है, हिन्दी हमारा मान
हिन्दु है हम, हिन्दी हमारी मातृ भाषा है
जिसके लिए लाखों, लोगों ने दी है जान
उस राष्ट्र की भाषा है हिन्दी, हमें है अभिमान।।
हिन्दी हमारी आत्मा, हिन्दी हमारी जान
हिन्दी हमारी प्रेरणा, हिन्दी हमारा ज्ञान
कबीर, सूर, तुलसी, जायसी की वाणी है हिन्दी
जाना है जिसको बचपन से वो भाषा है हिन्दी
हिन्दी से ही बना है हिन्दोस्तान
निवासी है इसके हमें गर्व है इस बात पर
गर्व है गुरुर है अपनी मातृ भाषा पर
बोला जिसको बचपन से
सीखा जिसको बचपन से
माँ, दादी की कहानियाँ की भाषा है हिन्दी
जिसको माना संविधान ने राजभाषा वो भाषा है हिन्दी।।

(2) बेटी : घर का गुलाब

फूलों में होता है गुलाब, जैसे घर में बेटी होती है
भगवान को होता है गुलाब प्यारा।
वैसे माँ को बेटी प्यारी होती है
बगीयन को महकावे है गुलाब जैसे
घर को बेटी महकाती है
दुनियाँ भर की खुशियाँ बेटी ले आती है।
जिस घर में होती है बेटी, स्वर्ग वो कहलाता है
माँ लक्ष्मी का रूप है बेटी
जिस घर आती स्वर्ग बनाती
वो घर होता है, अभागा
जिस घर बेटी का वास न होता
चाहे कितनी भी धन दौलत हो
फिर भी वो निर्धन कहलाता
जिस घर में होती है बेटी, स्वर्ग वो कहलाता है।

मीना सैनी
कक्षा-XII रा.उ.मा.वि. कुस्तला, सवाई माधोपुर (राज.)

मुसाफिर हूँ मैं मंजिल की

हे मंजिल, माना कि असम्भव है तुझको पाना
लेकिन मैंने ठाना, असम्भव को है सम्भव कर दिखाना
क्योंकि मुसाफिर हूँ मैं मंजिल की.....

हे मंजिल माना की निराशाएँ अनेक है, तुझको पाने में
लेकिन मैंने भी डूबते सूरज में उम्मीदों को ढूँढ़ना सीखा है,
क्योंकि मुसाफिर हूँ मैं मंजिल की.....

हे मंजिल माना कि बहुत मेहनत से मिलती है तू
लेकिन मैंने भी सागर से मोती निकालना सीखा है,
क्योंकि मुसाफिर हूँ मैं मंजिल की.....

हे मंजिल माना कि बहुत टेडी-मेढ़ी राहे हैं तेरी
लेकिन मैंने भी आँखों पर पट्टी बाँधकर चलना सीखा है
क्योंकि मुसाफिर हूँ मैं मंजिल की.....

हे मंजिल माना कि बहुत कठिन है तुझको पाना
लेकिन मैंने भी पत्थरों में फूलों से खिलना सीखा है
क्योंकि मुसाफिर हूँ मैं मंजिल की.....

हे मंजिल माना कि बहुत ऊँची है तू मुझसे बहुत
लेकिन मैंने भी पंतगों से उड़ना सीखा है
क्योंकि मुसाफिर हूँ मैं मंजिल की.....

हे मंजिल माना कि बहुत खुशनसीब है तू
लेकिन मेरी कमजोरियों का मजाक न बना
हाँ लेकिन मैंने भी कमजोरियों से लड़ना सीखा है
क्योंकि मुसाफिर हूँ मैं मंजिल की.....तुझको पाना है।

किरण सोनिया सन्धावा
कक्षा-XII, रा.उ.मा.वि. कुस्तला, सवाई माधोपुर (राज.)

www.rajsevak.com

थाने पुकारे म्हारो देश....

ओ म्हारे राणा रे थाने पुकारे म्हारो देश रे
थारी धरतरी सोगात पुकारे आज रे
ओ म्हारे राणा रे थाने पुकारे म्हारो देश रे.....

काल थें अपणो फर्ज के खातिर
अपणा जीवण वार दिया
आज क्यूं भूल गया अपणौ फर्ज
ओ म्हारे.....

काल जिण धरतरी सम्मान रे खातिर
थें काट्यो दुश्मन रो शीश
आज क्यूं भूल गया म्हारौ मान
ओ म्हारे.....

काल घर-घर में ही खुशहाली
आज घर-घर में अन्याय है
ओ म्हारे.....

काल हर नारी ने दियो थे सम्मान
आज क्यूं भूल गया नारी अरमान
ओ म्हारे.....

काल म्हारे देश की सीता हो गई कुर्बान रे
आज हो रह्यो कुर्बान नारी रो सम्मान रे,
थे ही बदल द्यो ये ळोजा दस्तूर
ओ म्हारे.....

काल रक्षा करता हा न्याय री
आज बदल गी सरकार
ओ म्हारे राणा रे थाने पुकारे म्हारो देश रे
थारी धरतरी सोगात पुकारे आज रे, ओ म्हारे.....

किरण सोनिया सन्धावा
कक्षा-XII, रा.उ.मा.वि. कुस्तला,
सवाई माधोपुर (राज.)

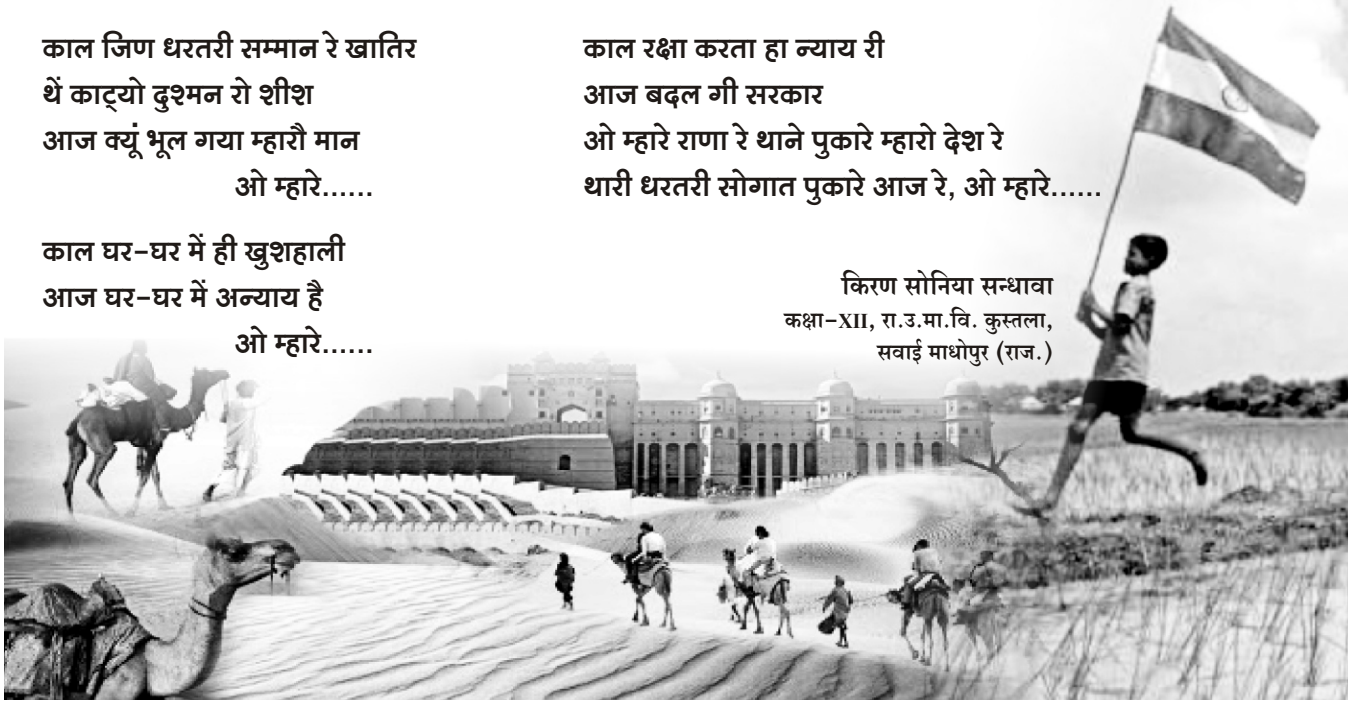

बाल मन को रचनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करने, उनमें सृजन के संस्कार देने हेतु विद्यालय स्तर से ही कविता, कहानी लिखने हेतु उचित वातावरण प्रदान करना चाहिए। प्रत्येक विद्यालय अपने विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को 'बाल शिविरा' में प्रकट करने का अवसर दे सकते हैं। हमें विद्यालयों के छोटे-छोटे बाल रचनाकारों की रचनाओं का बेसब्री से इंतजार रहता है। -वरिष्ठ संपादक

www.rajsevak.com

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shivira.dse@rajasthan.gov.in** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

वार्षिकोत्सव 'उड़ान 2020' सम्पन्न

चूरू। रामावि. बैनाथा जोगलिया, बीदासर में संस्थाप्रधान श्री श्रवण कुमार की अध्यक्षता में वार्षिक उत्सव 'उड़ान-2020' के आयोजन में 23 भामाशाहों का सम्मान किया गया। 1962 से 2020 तक अध्ययनरत पूर्व विद्यार्थियों में से 17 प्रतिभाओं, 13 शिक्षकों व 47 विद्यार्थियों को सम्मानित किया। इस अवसर पर भामाशाह श्री लादूराम गोदारा ने 2 लाख रुपये, विद्यालय स्टाफ ने 21 हजार रुपये, श्री भूराराम गोदारा ने 18,000 रुपये, श्री भगवानाराम व सुगनाराम गोदारा ने 10,000 रुपये विद्यालय विकास हेतु दिए। सरपंच ज्ञानूदेवी ने 51 मेज व स्टूल भेंट की। अन्य भामाशाहों से 13 पंखे विद्यालय को प्राप्त हुए। अन्त में सरपंच प्रतिनिधी श्री पूनाराम कड़ेला द्वारा संस्थाप्रधान का सम्मान किया गया।

जागरूकता अभियान के तहत अनेक गतिविधियों का आयोजन

करौली। राउमावि. वरगमा, हिंडौन सिटी का जागरूकता अभियान के तहत अनेक गतिविधियों के द्वारा आमजन को कोरोना वायरस से बचाव हेतु जागरूक किया गया। इसमें अनिता कुमारी ने राजकीय चिकित्सालय के संगठन 'अस्तित्व की उड़ान' की अध्यक्ष व व्याख्याता अनिता कुमारी मीणा, उपाध्यक्ष श्रीमती मीना पाड़ला, एडिशनल पीएमओ. श्री डी.सी. कोली, सर्जन डॉ. जे. पी. मीना, चिकित्सक डॉ. लक्ष्मी अग्रवाल व श्रीमती सुरेखा ने सार्थक भूमिका निभाई।

स्काउट गाइड ने मनाया पृथ्वी दिवस

डूंगरपुर। राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड डूंगरपुर ने पृथ्वी दिवस थीम पर प्रकृति के दृश्यों से पोस्टर बनाकर सोशियल मीडिया के माध्यम से आमजन को जागरूक किया। सी.ओ. राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड डूंगरपुर श्री सवाईसिंह, राउमावि. नंदौड़ के स्काउट मास्टर श्री पुरषोत्तम पुरोहित, राउमावि. गड़ाझुमजी के श्री कान्तिलाल, राउमावि. भेखरेड के श्री कचरूलाल मीणा, राबामावि. पीठ के श्री मोहम्मद इशाक शेख, राप्रावि. लालपुराघाटा उतार के श्री ललित कुमार बरण्डा के दिशा निर्देश में स्काउट गाइड ने पक्षियों के लिए विद्यालयों में परिण्डे बाधें। संस्थाप्रधान नंदौड़ श्री नानुलाल बुनकर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि प्रकृति के रक्षण एवं संरक्षण से महामारी आदि से बचा जा सकता है।

वार्षिकोत्सव में दिखी असम राज्य की झलक

दौसा। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, रजवास शेरसिंह (दौसा) जिले में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 28 फरवरी 2020 को वार्षिकोत्सव के अवसर पर विज्ञान प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। प्रदर्शनी कक्ष के एक कॉर्नर में 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के तहत असम राज्य की झलक नजर आई। विद्यार्थियों ने असम की संस्कृति से संबंधित बाल चित्रकृतियाँ प्रदर्शित की, साथ ही असमिया भाषा के भौगोलिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक परिदृश्य को भी प्रदर्शित किया गया। प्रधानाचार्य श्री शिव शंकर प्रजापति के अनुसार इस प्रदर्शनी के माध्यम से विद्यार्थियों का रचनात्मक कौशल विकसित हुआ है। साथ ही दर्शकों के सवालों के जवाब देने से विद्यार्थियों की मौखिक अभिव्यक्ति भी मुखरित हुई।

सरपंच को भेंट किए मास्क

राजसमंद। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, स्थानीय संघ, कुम्भलगढ़ के स्काउट ट्रूप ने लॉकडाउन अवधि में मास्क तैयार किए जिन्हें ग्राम पंचायत कुंचोली में कोरोना वायरस से बचाव के लिए 500 मास्क सरपंच श्रीमती निर्मला देवी भील को ग्राम विकास अधिकारी श्री हरीशचन्द्र मीणा की उपस्थिति में भेंट किए। सरपंच महोदया ने इसके लिए स्काउट का धन्यवाद किया। स्काउटर श्री राकेश टांक ने बताया कि स्काउट शंकरसिंह, लविश, निलेश, ललित, सुमेश, मनीष, धूलचंद, जवेरलाल, दिनेशचंद्र, रौनक, रवीना, निशा व अन्य विद्यार्थियों ने मास्क बनाने में अपना सहयोग दिया।

विद्यालय में ई-प्रतियोगिता व ड्राईंग कॉम्पिटिशन का आयोजन

झालावाड़। राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय हरिगढ़, खानपुर में ई-ड्राईंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें सुन्दर प्राकृतिक दृश्य बनाने को दिए गए। प्रधानाध्यापक श्री प्रेम दाधीच ने बताया कि इसमें 45

www.rajsevak.com

बालिकाओं ने भाग लिया। जिसका परिणाम झालावाड़ के प्रसिद्ध चित्रकार एवं समाजसेवी शिक्षक श्री धर्मेंद्र राठौड़ द्वारा अवलोकन कर किया गया। चित्रकला प्रतियोगिता में भूमिका सेन व सिद्धिका नागर प्रथम, नेहा भाटिया द्वितीय, देवेषणा मीना तृतीय स्थान पर रही। सभी विजेताओं को विद्यालय की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। श्री दाधीच ने बताया कि लॉकडाउन में विद्यार्थियों को क्रियाशील रखने के उद्देश्य से नियमित रूप से ई-प्रतियोगिताएँ करवाई जा रही है। जो कि विद्यालय की ओर से किया जा रहा नवाचार है।

झालरापटन में वार्षिकोत्सव सम्पन्न

झालावाड़। राउमावि. झालरापाटन में भव्य वार्षिकोत्सव व पूर्व छात्र मिलन समारोह 'आगाज' का आयोजन किया गया। स्वागत द्वार की सजावट कक्षा 12 के विद्यार्थियों ने की। सरस्वती वंदना के साथ आरम्भ हुए इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एसीपी. श्री आबिद खान, अध्यक्षता श्री हेमन्त शर्मा ने की। पूर्व छात्र परिषद की ओर से श्री संजय बापना एवं श्री कविस जैन ने प्रतिनिधित्व किया। विद्यार्थियों ने पंजाबी गिद्धा, मराठी लावणी, राजस्थानी और सूफी गीतों पर मनमोहक प्रस्तुतियाँ दी। विद्यालय टीम द्वारा तैयार की गई पेपर ड्रेसेस पहन कर किया गया रैप वॉक जिसे श्रीमती मेहा गौतम, श्रीमती अरफीना खातून और श्रीमती मंजुला व्यास द्वारा तैयार करवाया गया जो मुख्य आकर्षण का केन्द्र रहा। पूर्व छात्र श्री सिद्धेश्वर शर्मा ने 10,000 रुपये विद्यालय विकास कोष को भेंट किए। पूर्व छात्र परिषद के औपचारिक गठन की पहल करते हुए श्री विजय मेहता, श्री संजय बापना, श्री पवन शर्मा, श्री बालकृष्ण सेठिया व श्री नरेन्द्र चतुर्वेदी ने 5000-5000 रुपये देकर फाउण्डर मेम्बर के रूप में शुरूआत की। श्रीमती प्रभा सेन ने उपस्थित भामाशाह श्री अनूप जोशी व श्री अरूण शोरी आदि अतिथियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के अंत में सभी ने फागोत्सव व भोजन का आनन्द लिया।

कोविड-19 में सामुदायिक भोजनाशाला में किया आर्थिक सहयोग

चित्तौड़गढ़। राजस्थान राज्य भारत स्काउट्स एवं गाइड्स जिला मुख्यालय बी.पी.पार्क किला रोड़ ने वैश्विक आपदा कोरोना-19 के तहत प्रतापनगर स्थित गुरुद्वारे पर सेवाएँ प्रदान की। राउमावि. पारसौली के शिक्षक एवं स्काउटर श्री अजय सिंह राठौड़ के प्रयासों से जनसहयोग से 1,02,100 रुपये की राशि एकत्रित कर भोजनशाला संचालन हेतु गुरुद्वारे को भेंट की। सीओ. स्काउट चित्तौड़गढ़ श्री विनोद धारू ने बताया कि जनजागृती के माध्यम से 145 भामाशाहों को प्रेरित कर राशि प्राप्त की। जमाधन राशि का चैक जिला कलेक्टर चित्तौड़गढ़ श्री चेतन देवड़ा के माध्यम से गुरुद्वारा श्री गुरुसिंह सभा संस्थान के उपप्रधान श्री संदीप सिंह व कोषाध्यक्ष श्री नवनीत सिंह चड्ढा को भेंट किया। जरूरतमंदों के लिए भोजन जैसी प्राथमिक व्यवस्था करने में सहयेाग के लिए जिला कलेक्टर ने प्रशंसा की। इस अवसर पर जिला प्रशिक्षण आयुक्त श्री हेमेन्द्र कुमार सोनी आदि भी उपस्थित रहे। सभी उपस्थित जनों ने स्काउट गाइड के प्रयासों की सराहना की।

वार्षिकोत्सव, सखा संगम, आर्शीवाद तथा भामाशाह सम्मान समारोह का आयोजन

जोधपुर। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बेरडों का बास ओसियां में दिनांक 20 फरवरी, 2020 को वार्षिकोत्सव सखा संगम भामाशाह सम्मान तथा कक्षा 12 का आशीर्वाद कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में श्रीमान एसडीओ. ओसियां, श्रीमान सीबीईओ. हरिराम जी चौधरी, श्रीमान एसीबीईओ. तथा पूर्व प्रधानाचार्य बेरडों का बास श्री सुरजीत सिंह, प्रधानाचार्य नेवरा रोड श्री कानाराम खोड, प्रधानाचार्य धुंधाड़ा, सर्वश्री अनोपाराम, आरती, भीयाराम, भंवर दान, पूर्व पंचायत समिति सदस्य श्री वीरमा राम, पूर्व सरपंच श्री किसनाराम, पूर्व विद्यार्थी तथा भामाशाह नरेंद्र पाल सिंह उपस्थित रहे। कार्यक्रम का प्रारंभ दीप प्रज्वलन के साथ किया गया उसके पश्चात विद्यालय में 26 जनवरी को घोषित किए गए सरस्वती मंदिर की नींव रखी गई तथा कार्यक्रम में विद्यालय के छात्रों द्वारा ग्राम स्वच्छता पर श्री कमलेश तिवारी रचित नाटिका एवं चुनाव संबंधी हास्य नाटक तथा छात्राओं द्वारा सामूहिक नृत्य की प्रस्तुतियाँ दी गई। कार्यक्रम में उपस्थित अतिथियों को पेट्रा क्रोटन प्लांट कथा श्री रमेश अरोड़ा द्वारा लिखित पुस्तक 'विजय व्यक्तित्व' भेंट की गई। कक्षा 12 के सभी विद्यार्थियों को भी ये पुस्तक भेंट की गई।

www.rajsevak.com

विद्यालय के पूर्व विद्यार्थियों को प्रतीक चिह्न तथा प्रशस्ति पत्र दिए गए। जो किसी न किसी राजकीय सेवा में कार्यरत अथवा सेवा से सेवानिवृत्त है। विद्यालय में उत्कृष्ट कार्यों के लिए सुश्री दीपिका मीना, श्री अनिल वैष्णव, श्री भंवरलाल को सम्मानित किया गया, साथ ही स्थानांतरित कार्मिकों श्री सुरजीत सिंह व श्री मो. नियाज को अभिनन्दन पत्र प्रदान कर पौधे व पुस्तक भेंट की गई, चममव क्षेत्र से सेवानिवृत्त होने वाले उच्च प्राथमिक विद्यालय प्रधानाध्यापक श्री भंवरलाल चौधरी को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर पौधा व श्रीफल भेंट किए गए। कार्यक्रम का संचालन श्री अन्नाराम तथा श्री परसराम द्वारा किया गया। पूर्व विद्यार्थियों द्वारा विद्यालय हेतु लगभग 3,00,000 लागत का टिन शेड 2 महीने के भीतर बनाकर देने की घोषणा की गई। कक्षा 12 के छात्रों ने विद्यालय को आटा पीसने की चक्की भेंट की तथा सभी उपस्थित ग्रामवासियों ने विद्यालय की भौतिक एवं शैक्षणिक विकास हेतु अधिक से अधिक सहयोग देने हेतु आश्वासन दिया। उपस्थित सभी ग्रामीण इस कार्यक्रम से अभिभूत थे। विद्यालय संस्थाप्रधान ने सभी आगंतुकों, अतिथियों, छात्रों, पूर्व विद्यार्थियों तथा पुस्तकें भेंट करने हेतु उपलब्ध करवाने के लिए निर्मल गहलोत उत्कर्ष को धन्यवाद ज्ञापित किया।

मातृभाषा दिवस पर विद्यालय में कार्यक्रम का आयोजन

जोधपुर। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, सांवलों की ढाणी, देचु में 20 फरवरी 2020 को विद्यालय में मातृभाषा दिवस के अवसर विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया। अध्यापक ने मातृभाषा राजस्थानी में संविधान की प्रस्तावना का वाचन करवाया। अंग्रेजी अध्यापक श्री धनसुख ने निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन करवाया जिसमें कक्षा 8 की छात्रा सीमा ने प्रथम, पुष्पा द्वितीय, कक्षा-7 के छात्र पृथ्वी तृतीय रहा। छात्रा संजु, इच्छा व किरण ने राजस्थानी गीत पर नृत्य किया। कक्षा 6 के छात्र भेराराम ने महाराणा प्रताप की जीवन गाथा का गायन किया। शारीरिक शिक्षक श्री तुलछाराम व श्री सोहनराम ने विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किए। प्रधानाध्यापक श्री खेताराम के निर्देशन में आयोजित इस कार्यक्रम में समाजसेवी श्री सवाईदान व श्री पारसदान मौजूद रहे। अन्त में छात्र संसद के प्रधानमंत्री सुनिल ने सभी का आभार व्यक्त किया।

कक्षा 12 (विज्ञान) में उत्तीर्ण मेधावी छात्राओं का किया बहुमान

बाड़मेर। पुरस्कृत शिक्षक फोरम बाड़मेर द्वारा विज्ञान वर्ग में कक्षा 12 के बोर्ड परीक्षा परिणाम में मेधावी छात्राओं का सोशल डिस्टेंस का पालन करते हुए कुमारी कविता एवं कुमारी ललिता का पुरस्कृत शिक्षक फोरम बाड़मेर के जिलाध्यक्ष श्री सालगराम परिहार ने शाल ओढ़ाकर एवं श्री गोवर्धन परिहार तथा श्री उकाराम परिहार ने स्मृति चिह्न प्रदान कर छात्राओं को सम्मानित किया। कार्यक्रम में प्रधानाचार्य श्री सुरेश डांगी, श्री भट्टराज बारूपाल, सामाजिक कार्यकर्ता एवं मजदूर संघ के श्री माँगीलाल बोस, बी.एल. भाटी व श्री सुरेश जीनगर आदि ने प्रतिभावान छात्राओं का माला पहनाकर स्वागत किया। श्री परिहार ने इस अवसर पर विपरीत परिस्थितियों में छात्राओं ने श्रेष्ठ परिणाम देकर क्षेत्र का नाम रोशन किया है। छात्रा के पिता श्री पूराराम भाटी ने सभी अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

शिक्षक ने भेंट किए स्वास्थ्य परीक्षण के लिए थर्मल स्कैनिंग मशीन, सेनिटाइजर व 1000 मास्क

लोसल। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, खाचरियावास के वरिष्ठ अध्यापक श्री सत्यनारायण रोलन ने बोर्ड परीक्षा सेंटर रामजीपुरा में बच्चों के स्वास्थ्य परीक्षण के एक थर्मल स्कैनिंग मशीन और बोर्ड परीक्षा में कोरोना महामारी ने बच्चों को सुरक्षा के लिए सेनिटाइजर व 1000 मास्क देकर एक अनूठी मिशाल पेश की है। शिक्षक श्री सत्यनारायण रोलन का कहना है कि बच्चे देश आने वाले भविष्य के भाग्य विधाता है उनको सुरक्षा प्रदान करना प्रत्येक भारतीय नागरिक का कर्त्तव्य है तथा कर्मस्थली में इस प्रकार के कार्य करने से आत्मिक संतुष्टि का बोध हृदय में होता है इस अवसर पर केंद्राधीक्षक श्री रामचन्द्र कुमावत, अतिरिक्त केंद्राधीक्षक श्री मालीराम जाट, वरिष्ठ शिक्षक श्री रामेश्वर लाल भामा, सर्वश्री नटवरलाल शर्मा, शिवराज सिंह शेखावत, त्रिलोक चंद रैगर, राजू कुमारी, पूर्व सरपंच गोविंद सिंह लांबा उपस्थित रहें।

नामाकांन बढ़ाने का सुप्रयास : प्रवेशोत्सव बैठक में लिया निर्णय

बीकानेर। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय शिवनगर में प्रवेशोत्सव एवं कार्यक्रम अधिकारी श्री मोहरसिंह सलावद की अध्यक्षता में सभी स्टाफ की एक बैठक शिक्षा विभाग के आदेशानुसार एक जुलाई से 15 जुलाई तक चलने वाले प्रवेशोत्सव कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए आयोजित की गई। जिसमें प्रवेश उत्सव कार्यक्रम को सफल बनाने एवं अब तक हुए कार्यों की समीक्षा की गई। बैठक को संबोधित करते हुए श्री सलावद ने कहा कि हम सभी को मिलकर विद्यालय में अधिक से अधिक बच्चों का प्रवेश करवाना है, कोई भी बच्चा छूटना नहीं चाहिए। ड्रॉप आउट एवं हाउस होल्ड सर्वे के लिए शिक्षकों के दलों द्वारा शिवनगर ग्राम के घर घर जाकर अभिभावकों से अपने बच्चों का प्रवेश सरकारी स्कूलों में करवाने का आह्वान किया जा रहा है एवं सरकारी स्कूलों में मिलने वाली सुविधाओं छात्रवृत्ति, एमडीएम. में एक समय का निःशुल्क भोजन,

www.rajsevak.com

निःशुल्क पाठ्यपुस्तकें, साइकिल ट्रॉंसपोर्ट का किराया आदि एवं उत्कृष्ट बोर्ड परिणाम की जानकारी अभिभावकों को दी जा रही है। बैठक में व्याख्याता श्री गोवर्धनलाल गोदारा, वरिष्ठ अध्यापक एवं प्रवेश प्रभारी मोहरसिंह सलावद, हाउस होल्ड सर्वे प्रभारी सर्वश्री रणछोड़ सिंह सोढ़ा, प्रभुराम, दयाराम, बहादुर सिंह राठौड़, सुजानसिंह राठौड़, तेजपाल मेघवाल, मनसुख दान चारण, प्रेमसिंह, गणेशराम आदि मौजूद रहे।

पाँच हजार एकवां पौधा लगाकर हरियालो राजस्थान के संकल्प को पूरा किया

चूरू। राजस्थान के चूरू जिले के सरदारशहर कस्बे के रामसीसर गाँव में एक मिडिल स्कूल राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय जो अपने आप में अनूठा है। जहाँ एक तरफ कला, साहित्य और संगीत की बात करें तो यहाँ आयोजित कला महोत्सव में प्रदेश के जाने माने कलाकार उपस्थित होते हैं। अपनी संस्कृति एवं सभ्यता से रू-ब-रू करवाते हैं साथ ही यहाँ के विद्यार्थी भारत वर्ष के हर धर्म व जाति संस्कृति को अभिनय से दृष्टान्त कराते हैं वही बात करें अनुशासन की तो विद्यार्थी नियमित रूप से टाई बेल्ट सहित स्कूल यूनिफॉर्म में आते हैं साथ ही पूरा स्टाफ भी ड्रेस कोड में उपस्थित रहता है। सप्ताह के तीन दिन अलग यूनिफॉर्म शेष तीन दिन अलग यूनिफॉर्म शिक्षा के क्षेत्र में अनुशासन की अद्वितीय प्रतीति कराता है। ये विद्यालय मजबूत इच्छाशक्ति एवं महत्त्वाकांक्षा से पल्लवित इस विद्यालय के स्टाफ ने अपने स्कूल परिवेश के साथ गाँव के सभी सार्वजनिक स्थानों पर स्वयं के खर्चे से 5001 पौधे लगाकर पर्यावरण को सुरक्षित व संरक्षित किया। साथ ही विद्यालय में उपस्थित अन्य विद्यार्थियों के साथ विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी जो ना सुन सकते हैं ना बोल सकते हैं और ना ही उनके दोनों पैर है उनकी सृजनात्मक शक्ति को इस तरीके से उकेरा है वही सजीव चित्र बनाते हैं नृत्य करते हैं, अभिनय करते हैं, यहाँ के अध्यापक प्राकृतिक रंगों से विद्यालय की दीवार पर पेंटिंग व फर्श पर मनोवेज्ञानिक तरीके से अधिगम हेतु टी.एल.एम. नवनवोन्मेष चित्रित करते रहते साथ ही मिट्टी के सजीव खिलौने बच्चों द्वारा बनाए गए उनकी आर्ट गैलरी स्थापित है और कोरोनावायरस संक्रमण के काल में विद्यालय स्टाफ ने मिलकर 200 खाद्य सामग्री की किट विद्यालय में अध्ययनरत जरूरतमंद विद्यार्थियों को वितरित की। वही भामाशाह को प्रेरित कर विद्यालय में सभी विद्यार्थियों के लिए फर्नीचर का निर्माण करवाया तथा प्रत्येक कक्षा कक्ष इनवर्टर युक्त बना अधिगम के लिए सजीव वातावरण तैयार किया। अधिगम के उन्नयन निमित्त विज्ञान मेला हो या कला मेला स्काउट एण्ड गाइड हो या अन्य सामाजिक सेवा विद्यालय स्टाफ ने विद्यार्थियों व समस्त ग्राम वासियों के साथ मिलजुल कर कार्य करते हैं। 260 के नामांकन वाला उच्च पप्राथमिक विद्यालय जिसने एस.सी.ई.आर.टी. उदयपुर में भी अपनी कला व संस्कृति को गौरवान्वित किया है।

वार्षिकोत्सव समारोह का रंगारंग आयोजन

बीकानेर। रा.उ.मा.वि. सांईसर (पांचू) में वार्षिकोत्सव समारोह का रंगारंग आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्रीमती अनुसूया CBEEO पांचू, ACBEO श्री सुमेर सिंह व धरनोक प्रधानाचार्य श्री नरेन्द्र कुमार के सान्निध्य में पूर्व विद्यार्थी संगम व भामाशाहों का मालार्पण व स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया। श्रीमती अनुसूया ने भामाशाहों को विद्यालय विकास के प्रति प्रोत्साहित किया तथा छात्रों को धैर्य के साथ बोर्ड परीक्षा की तैयारी करने व ईमानदार बनने की सीख दी। श्री नरेन्द्र कुमार ने बालिका शिक्षा पर जोर देते हुए ग्रामीणों को भी निजी विद्यालयों के बजाय सरकारी विद्यालयों में बच्चों को पढ़ाने हेतु प्रोत्साहित किया। छात्रों द्वारा कई सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियाँ दी गई। छात्राएँ संगीता बांगुड़ा व सरिता बांगुड़ा द्वारा प्रस्तुत कालबेलिया नृत्य आकर्षण का केन्द्र रहा। अन्त में संस्थाप्रधान श्री गोमाराम जीनगर ने ग्रामीणों व अतिथियों को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए समापन की घोषणा की। कार्यक्रम का मंचसंचालन व्याख्याता श्री मुकेश खदावा द्वारा किया गया।

कोरोना योद्धाओं का किया सम्मान

सीकर। सांवलोदा लाडखानी गाँव में आयुर्वेदिक विभाग के सहायक निदेशक डॉ. कैलाश शर्मा के मुख्य आतिथ्य में कोरोना योद्धाओं

www.rajsevak.com

का सम्मान भामाशाह द्वारा मास्क वितरण एवं आयुर्वेदिक विभाग द्वारा ग्रामवासियों को रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए काढ़ा पिलाया गया। पिछले तीन माह से कोरोना योद्धा बनकर जंग लड़ रहे राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त शारीरिक शिक्षक श्री भंवरसिंह एवं आयुर्वेदिक विभाग के परिचारक श्री सुभाष भागर्व का ग्रामवासियों ने माला एवं साफा पहनाकर और मास्ट भेंट कर सम्मानित किया। भामाशाह श्री सुमेरसिंह शेखावत ने 300 मास्क ग्रामवासियों को वितरित किए। उसके बाद आयुर्वेदिक विभाग द्वारा तैयार किया गया काढ़ा ग्रामवासियों को पिलाया गया तथा इसकी उपयोगिता की विस्तार से जानकारी दी गई।

कोविड-19 के निगरानी दल के प्रभारी श्री भंवरसिंह ने बताया कि गाँव में अब तक 90 प्रवासी दूसरे प्रदेशों से आए हैं। इनमें भी ज्यादातर महाराष्ट्र, गुजरात और दिल्ली से कोरोना हॉटस्पॉट स्थानों से गाँव आए थे। इनको 14 दिन का हॉम क्वारेंटाइन की पालना सख्ती से करवाई तथा क्वारेंटाइन पूरा करने के बाद भी इनको नियमित से मास्क पहनने, सोशल डिस्टेंसिंग की सरकार की गाइडलाइन की अक्षरशः पालना करने आदि के बारे में समय-समय पर बताया गया। जिससे गाँव आज तक कोरोना मुक्त है इतने प्रवासी बाहर से आने के बाद। इसके बाद स्वयं व परिवार को कोरोना से बचाने के सुझाव बताए। बार-बार अपने हाथ साबुन और पानी से धोएं, भीड़-भाड़ या सार्वजनिक स्थानों पर जाने से बचें, इन जगहों के स्पर्श में आने पर अपने हाथों को सेनिटाइज करें, अपने आँख, नाक और मुँह को हाथों से न छुए, सार्वजनिक स्थानों पर न थूके, अगर आपको सर्दी, खांसी, बुखार जैसे लक्षण है तो जल्द से जल्द डॉक्टर से इलाज ले आदि बातें जागरूकता रखने के लिए ग्रामवासियों को बताई।

स्काउट गाइड ने पेंटिंग बनाकर दिया कोरोना से बचाव का संदेश

स्वच्छता पखवाड़े एवं कोरोना महामारी के प्रति जागरूकता के क्रम में राजस्थान राज्य स्काउट एवं गाइड स्थानीय संघ श्रीडूँगरगढ़ द्वारा आज श्रीडूँगरगढ़ के विभिन्न सार्वजनिक स्थानों पर पेंटिंग कर कोरोना के प्रति जागरूक रहने व कोरोना को हराने का संदेश दिया। स्काउटर विकास चन्द्र व्याख्याता ने बताया कि सीाओ स्काउट श्री जसवंत सिंह राजपुरोहित एवं श्री वल्लभ पुरोहित के मार्गदर्शन में आज स्काउट गाइड स्थानीय संघ श्रीडूँगरगढ़ द्वारा घूमचक्कर से मैन बाजार के प्रवेश द्वारा उपखण्ड अधिकारी एवं तहसील कार्यालय में पेंटिंग बनाकर लोगों को कोरोना महामारी से स्वयं को बचाए रखने एवं कोरोना को हराने हेतु संदेश दिया। इस अवसर पर उपखण्ड अधिकारी राकेश कुमार न्योल, तहसीलदार मनीराम खींचडड़, एसीबीईओ ईश्वर सिंह गरुआ आदि ने मौके पर पेंटिंग का अवलोकन करते हुए स्काउट संगठन के प्रयासों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए उपस्थित नागरिकों को इस महामारी में स्वयं को बचाकर परिवार व देश को सुरक्षित रखने की अपील की। पेंटिंग के द्वारा आमजन को सावधान रहने, बार-बार हाथ धोने, 2 गज की दूरी रखने, मास्क का उपयोग करके कोरोना से बचाव हेतु प्रेरित किया। इस अवसर पर स्थानीय संघ सचिव संतोष शेखावत, स्काउटर विकास चन्द्र भारू, रामकृष्ण पन्नीवाल, गाइडर मुनेष कुमारी, रेंजर पूजा शर्मा व महामाया सहित रवि ढाका, राहुल झाझड़िया, महेश शर्मा सहित स्काउट व गाइड उपस्थित रहे।

इस अवसर पर स्वामी विवेकानंद राजकीय मॉडल स्कूल की छात्राओं द्वारा हस्तनिर्मित लगभग 100 मास्क भी तहसीलदार मनीराम खींचड़ को भेंट किए।

सरस्वती मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा

दौसा। ''माँ सरस्वती की जहाँ पूजा-अर्चना, साधना-आराधना होती है, वहाँ ज्ञान की गंगा बहती है।'' उत्तम संस्कारों की वृष्टि होती है। इन्हीं उत्तम भावों से शिक्षा प्रेमी इंजीनियर श्री सीताराम मीना एवं उनकी अर्धांगिनी श्रीमती मंजू देवी ने अपने गाँव टोडामीना के रा.उ.प्रा. विद्यालय में अपने जनक-जननी सर्वश्री प्रभाती लाल मीना एवं धन्नी देवी की प्रेरणा से भव्य सरस्वती मन्दिर का निर्माण करवाया है। मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा के अद्भुत कार्यक्रम में श्री ठाकुर जी के मन्दिर से भव्य शोभा यात्रा विद्यालय में पहुँची तो वातावरण शिक्षामय हो गया।

शाला परिसर में आयोजित शिक्षा संवाद कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व सरपंच श्री रामनारायण ने की। संवाद के मुख्य अतिथि श्री राम विलास मीना एवं विशिष्ठ अतिथि शिक्षा विभाग, बीकानेर से पधारे श्री भगवान सहाय मीना (गुरुजी) एवं पीईईओ. श्री अशोक गुप्ता थे। संचालन श्री सीताराम डोबवाल ने किया। वक्ताओं ने शिक्षा का महत्त्व बताते हुए अधिकाधिक बालक-बालिकाओं को राजकीय विद्यालयों में प्रवेश दिलाने पर जोर दिया। 'प्रवेशोत्सव' में सहयोग प्रदान करने का संकल्प लिया।

शिक्षा संवाद कार्यक्रम में गाँव के गणमान्य व्यक्तियों सर्वश्री रामजीलाल मीना, रामेश्वर, रामकरण, नाथु महाराज, कन्हैया हाल्या, जौहरी सेहणा, कैलाश डोबवाल, गंगा सहाय, रामधन, अर्जुन, बाबुलाल, जगदीश, राकेश तथा विद्यालय के गुरुजनों ने भाग लिया।

उपस्थित महानुभावों द्वारा भामाशाह श्री सीताराम मीना एवं मीना परिवार की इस उत्तम पहल की सराहना करते हुए उनका माल्यार्पण करके सम्मान एवं आभार प्रकट किया गया। संस्थाप्रधान श्री सुरेन्द्र कुमार मीना, शिक्षक श्री महेन्द्र शर्मा तथा नारंगी मीणा व सुश्री मीना मीण उपस्थित रहकर विभाग की ओर से आभार प्रकट किया। पधारे महानुभावों और सम्पूर्ण ग्राम पंचायत वासियों के लिए भोजन एवं प्रसाद की उत्तम व्यवस्था भामाशाह इंजीनियर श्री सीताराम मीना (रेलवे) के परिवार की ओर से की गई।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

www.rajsevak.com

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किये जाते हैं। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

चतुर्दिक समाचार

हरड़ और चाय से भी रुक सकता है संक्रमण

भारती प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) दिल्ली ने शोध एवं अनुसंधान कर चाय और हरड़ को भी कोरोना से लड़ने में सक्षम पाया है। आइ.आइ.टी. दिल्ली के कुसुमा स्कूल ऑफ बॉयोलॉजिकल साइंसेज के वैज्ञानिकों ने शोध में यह पाया है कि हरड़ और काली या ग्रीन टी कोरोना संक्रमण को कम करने में मददगार साबित हो सकती है।

इंटरनेशनल जर्नल में शोध प्रकाशित : प्रोफेसर अशोक कुमार पटेल की अगुवाई में किए गए शोध से यह पता चला कि चाय (ब्लैक और ग्रीन टी) तथा हरीतकी (हरड़) कोरोना के मुख्य प्रोटीन को अप्रभावी करने में कारगर हैं। प्रो. पटेल ने बताया कि इससे संबंधित रिसर्च पेपर इंटरनेशनल जर्नल फाइटोथेरेपी रिसर्च में प्रकाशित भी है। इस अनुसंधान में मेरे साथ आइ.आइ.टी. दिल्ली के मोहित भारद्वाज, सौरभ उपाध्याय, प्रवीण त्रिपाठी, शिव राघवेंद्र तथा मोरारजी देसाई इंस्टीट्यूट ऑफ योग की डाक्टर मंजू देसाई हैं।

कुल 51 पौधों पर हमने काम किया : प्रो. पटेल– प्रो. पटेल बताते हैं कि औषधीय गुणों वाले 51 पौधों पर हमने काम किया। हमने पाया कि 26 प्रोटीन से बना कोविड-19 का मुख्य प्रोटीन 3 सीएल प्रोटीन को प्रतिरूप बनाकर रोकने का गुण इन दो औषधीय पौधों में है। अभी इसका क्लीनिकल ट्रायल नहीं हुआ है। इसलिए हम यह नहीं बता सकते हैं कि इनका सेवन कब और कितनी मात्रा में किया जाना चाहिए।

साभार : हिन्दुस्तान, 3 जुलाई 2020, पेज-5 से

ओखला लैंडफिल साइट पर कूड़े से बिजली बनेगी

ओखला लैंडफिल साइट पर कूड़े की समस्या के निष्पादन के लिए एक एकड़ में ठोस कूड़े से सायन गैस और बिजली उत्पादन के लिए वेस्ट टू वेल्थ प्लांट लगाया जाएगा। दक्षिण दिल्ली नगर निगम इस प्लांट को इंडियन ऑयल और एनटीपीसी के सहयोग से लगाएगा। इसके लिए गैस मंत्रालय, विद्युत मंत्रालय, उपराज्यपाल और दक्षिण निगम के महापौर और निगमायुक्त के बीच एक समझौते पर हस्ताक्षर हुए हैं।

दक्षिण दिल्ली निगम के निगमायुक्त ज्ञानेश भारती ने बताया कि इस नवीन परियोजना से लैंडफिल साइट पर पड़े ठोस कूड़े के निष्पादन की समस्या का समाधान हो सकेगा। संयंत्र के जरिए ठोस कूड़े से आरडीएफ (रिफ्यूज्ड डिराइव्ड फ्यूल) को पहले अलग किया जाएगा जिससे गैस और बिजली का उत्पादन होगा। सायन गैस करीब एक मेगावॉट बिजली का उत्पादन कर सकेगी। उन्होंने बताया कि इस संयंत्र को लगाने के लिए इंडियन ऑयल को ओखला लैंडफिल साइट पर एक एकड़ जमीन लीज पर दी जाएगी। दक्षिण निगम संयंत्र पर उत्पादित बिजली को सस्ते दामों पर एनटीपीसी से खरीदेगा। इससे निगम को करीब 2.6 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष की बचत होगी। उन्होंने बताया कि संयंत्र स्थापित करने के लिए इंडियन ऑयल तथा एनटीपीसी द्वारा 50-50 प्रतिशत का निवेश किया गया है। एक तरह से दोनों ही एजेंसी पूरे संयंत्र का संचालन करेंगी।

केंद्रीय मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान ने कहा है कि दिल्ली में दस हजार टन कचरा निकलता है। ऐसे संयंत्र लगाने से कूड़े की समस्या दूर हो पाएगी। विद्युत मंत्री आरके सिंह, उप राज्यपाल अनिल बैजल, दक्षिण निगम महापौर अनामिका ने भी इस प्रयास की सराहना की है।

साभार : हिन्दुस्तान, 2 जुलाई, 2020, पेज-5 से

मास्क उतारे बिना समझा सकेंगे बात

कोरोना वायरस से बचाव के लिए मास्क पहनना बेहद जरूरी है। हालांकि, मास्क पहनने पर अवाज धीमी होने की शिकायत भी सामने आती है। इससे सामने वाला कई बार आपकी बात नहीं समझ पाता। जापान की एक शीर्ष कंपनी ने इस समस्या का हल खोज निकाल लिया है। कंपनी ने 'सी-मास्क' नाम का एक ऐसा मास्क ईजाद किया है, जो स्पीकर की मदद से आपकी आवाज कई गुना बढ़ा देगा ताकि सामने वाला आपकी बात समझ पाए।

अंग्रेजी-चीनी सहित आठ भाषाओं के अनुवाद में सक्षम : निर्माता 'डोनट रोबोटिक्स' से मुताबिक 'सी-मास्क' एक खास स्मार्टफोन ऐप के जरिए यूजर की ओर से बोले जाने वाले शब्दों को 'टेक्स्ट मैसेज' में भी तब्दील करने में सक्षम है। ऐप की मदद से यह संबंधित संदेश का आठ भाषाओं में अनुवाद करने की भी क्षमता रखता है। इनमें अंग्रेजी, चीनी, स्पेनी, फ्रांसीसी, कोरियाई, थाई, वियतनामी और इंडोनेशियाई भाषा शामिल हैं। हालाकि अनुवाद सेवा का इस्तेमाल करने के लिए यूजर को कुछ मासिक शुल्क अदा करना होगा। यह शुल्क कितना होगा, फिलहाल इसके बारे में कोई जानकारी नहीं दी गई है।

ऑफिस का काम आसान : 'डोनट रोबोटिक्स' के निदेशक ताइसुके ओनो की मानें तो यूजर 'सी-मास्क' में लगे माइक्रोफोन का इस्तेमाल बिजनेस मीटिंग की रिकॉर्डिंग खुद बखुद फोन में सेव होती चली जाएगी, ताकि बाद में इस्तेमाल करना संभव हो। उन्होंने बताया कि 'सी-मास्क' जापान में कई वर्षों से रिसेप्शनिस्ट के तौर पर इस्तेमाल किया जा रहे उस रोबोट से प्रेरित है, जो सामने वाले की ओर से पूछे जाने वाले सवालों का जवाब देने में सक्षम है। अमेरिका, यूरोप और चीन की कई कम्पनियों ने 'सी-मास्क' खरीदने में दिलचस्पी दिखाई है।

साभार : हिन्दुस्तान, 1 जुलाई 20, पेज 17 से

103 वर्षीय बुजुर्ग का स्काइडाइविंग में रिकॉर्ड

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान विमान के पुर्जों का निर्माण करने वाले सेवानिवृत्त क्राफ्ट्समैन ने 2017 में अपने 100वें जन्मदिन पर 10,000 फीट की ऊंचाई से पहली बार स्काइडाइविंग की थी। अब तीन साल बाद उन्होंने अपना रिकॉर्ड तोड दिया। उन्होंने कहा, मैंने कभी नहीं सोचा था की मैं ऐसा कर पाऊँगा। आमतौर पर उम्र बढ़ने के साथ इंसान साहसी काम करने से बचने लगता है। लेकिन ब्रिटेन के एक 103 वर्षीय बुजुर्ग ने इस बात को झूठा साबित कर दिया है। अल ब्लास्वके नाम के इस बुजुर्ग ने 14000 फीट की ऊँचाई से उड़ रहे विमान से स्काइडाइविंग कर सबको चौंका दिया है। ऐसा कारनामा करके उन्होंने अपना नाम गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज कर लिया है।

साभार : हिन्दुस्तान, 7 जुलाई, पेज-15 से

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

www.rajsevak.com

जयपुर

रा.बा.उ.मा.वि. पावटा को डॉ. विनोद शर्मा (हिन्दी विभाग राज. विश्वविद्यालय जयपुर) द्वारा 50 स्कूल यूनिफार्म भेंट जिसकी लागत 25,000 रुपये, श्री रामेश्वर प्रसाद सैनी (ठेकेदार, विराटनगर) से 4 पिन बोर्ड लागत 10,000 रुपये और 4 पंखे (सिलिंग) जिसकी लागत 4,400 रुपये, श्री धीर सिंह शेखावत, पावटा से 2 पंखे (सिलिंग) प्राप्त जिसकी लागत 2,400 रुपये, मै. मंगल हार्डवेयर पावटा से एक 3 डी प्रिन्टर HP प्राप्त जिसकी लागत 16,500 रुपये, डॉ. बलदेव सिंह द्वारा पानी का भूमिगत सीमेन्टेड टैंक (क्षमता 2,000 लीटर) जिसकी लागत 35,000 रुपये, श्री सुभाष गोयल (महन्त राठी मन्दिर, पावटा द्वारा) 2 ट्यूबवैल 8 इंच वाला 400 फीट गहरा जिसकी लागत 1,40,000 रुपये, श्री रामावतार सैनी (डीलर इण्डेन गैस एजेन्सी, पावटा से 20 सैट स्कूल टेबिल जिसकी लागत 20,000 रुपये, श्री धमेन्द्र गोयल (ठेकेदार पावटा) से आर.ओ. पानी क्षमता 500 लीटर जिसकी लागत 38,000 रुपये, श्री नरेश यादव राशन डीलर, कूनेड़ से आर.ओ. पानी क्षमता 500 ली. जिसकी लागत 35,000 रुपये, श्री दिलीप योगी (किराने वाले) से एक वाटर कूलर क्षमता 80 लीटर प्राप्त जिसकी लागत 50,000 रुपये, श्री नरेश यादव (कूनेड़ वाले) से एक प्लास्टिक पानी की टंकी क्षमता 500 लीटर जिसकी लागत 3,000 रुपये, राजस्थान कॉलेज पावटा से डायस/स्पीच टेबिल जिसकी लागत 3,500 रुपये, श्री दीनदयाल यादव, श्री द्वारिका प्रसाद शर्मा से कार्यालय में पर्दे जिसकी लागत 3,500 रुपये और मेट जिसकी लागत 3,000 रुपये, निहारिका पब्लिक स्कूल द्वारिकापुरा, पावटा द्वारा प्रधानाचार्य कार्यालय नेम बोर्ड जिसकी लागत 6,000 रुपये, श्रीमती अंजू व्याख्याता से एक सीलिंग पंखा जिसकी लागत 1,200 रुपये, श्री सुरेश जैन (बबेड़ी वाले पावटा) द्वारा विद्यालय में 22 कैम्पर पानी (सत्र 2019-20) प्रति कैम्पर 10 रुपये के हिसाब से प्रतिवर्ष, श्री बंशी गेट (पूर्व सरपंच जोधपुर) से 5 ड्रेस स्काउट गाईड्स को भेंट जिसकी लागत 4,000 रुपये, सर्वश्री हरिराम टाक (से.नि. व्याख्याता), सुरेश चन्द्र शर्मा शम्भू स्टेशनर्स, पावटा द्वारा पाँच-पाँच स्कूल यूनिफार्म भेंट प्रत्येक की लागत 1,500-1,500 रुपये, श्रीमती सुमित्रा कुमारी फुलवारी द्वारा 100 छात्र/छात्राओं को 2017-2018 में जूते जुराब एवं स्वेटर वितरण जिसकी लागत 20,000 रुपये, श्रीमती परमा चौधरी व श्रीमती सुमन चौधरी (वेदान्त वेली पब्लिक स्कूल लाडाका बास, पावटा द्वारा 100 छात्र/छात्राओं को स्वेटर वितरण जिसकी लागत 15,000 रुपये। **रा.उ.मा.वि. लक्ष्मण डूंगरी, बास बदनपुरा** को शॉओमी कम्पनी के प्रबंध संचालक श्री मनु कुमार जैन द्वारा स्मार्ट टी.वी. 49'', 43'', 32'' की तीन स्मार्ट टी.वी. विद्यालय को सप्रेम भेंट जिसकी लागत 1,33,995 रुपये (एक लाख तैतीस हजार नौ सौ पिचाणवे रुपये मात्र) इसी विद्यालय के अध्यापिका श्रीमती राजबाला के पति श्री निशान्त चौधरी से स्टील की दो अलमीरा प्राप्त जिसकी लागत 13,000 रुपये।

भामाशाहों के अवदान का वर्णन प्रतिमाह इस कॉलम में कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें। **-व. संपादक**

हमारे भामाशाह

झालावाड़

रा.उ.मा.वि. आमेठा, ब्लॉक अकलेरा को स्थानीय स्टाफ द्वारा विद्यालय विकास हेतु भामाशाह के रूप में निम्न प्रकार सहयोगी राशि दी गई। श्री नरेश कुमार गौतम पैंशनर (व्याख्याता) से 31,000 रुपये, श्री रामनिवास शर्मा (व्याख्याता) से 15,000 रुपये, श्री रूपेन्द्रनाथ गौड़, प्रधानाचार्य से 11,000 रुपये, शिवप्रकाश राठौर (वरिष्ठ अध्यापक) से 5,100 रुपये, सर्वश्री अरुण कुमार शर्मा (व्याख्याता) दीपक कुमार गोठरवाल (व्याख्याता), दौलत राम रैगर (व्याख्याता) प्रत्येक से 3,100-3,100 रुपये प्राप्त, सर्वश्री पानमल मीणा (व्याख्याता), सचिन कुमार (व्याख्याता), अल्ताफ हुसैन (वरिष्ठ अध्यापक), सोहन लाल मीणा (अध्यापक), ब्रजेश कुमार सैन (अध्यापक), श्री फूला बाई मीणा (अध्यापिका) प्रत्येक से 2,100-2,100 रुपये प्राप्त हुए, सर्वश्री धनराज मीणा (वरिष्ठ अध्यापक), सुश्री ज्योति साल्वी, श्रीमती नीतू जैन (वरिष्ठ अध्यापक), श्रीमती गीता बलरिया (वरिष्ठ अध्यापक), प्रमोद कुमार मीणा (वरि. शारीरिक शिक्षक), गुलाब चन्द लोधा (अध्यापक), बिरधी लाल मालव (अध्यापक), मुकेश कुमार मीणा (अध्यापक), प्रद्युम्न कुमार गौतम (अध्यापक), श्रीमती कल्पना (अध्यापिका), रामकरण वर्मा (पु.अ.) प्रत्येक से 1,100-1,100 रुपये प्राप्त, श्री राम निवास मीणा (वोकेशनल) से 500 रुपये प्राप्त।

अजमेर

रा.उ.मा.वि., खिरिया पं.स. सरवाड को श्री हरिराम तोषनीवाल (पूर्व प्रधान, खिरियाँ) से 50 टेबल स्टूल सैट लोहे के प्राप्त जिसकी लागत 61,000 रुपये व सात कार्यालय चेयर प्राप्त जिसकी लागत 15,000 रुपये, 5 वाटर कूलर सैट (अधीनस्थ विद्यालय में) प्राप्त जिसकी लागत 1,25,000 रुपये, श्री नेमीचन्द, शिवजी मेवाड़ा (समाज सेवी) से एक वाटर कूलर सेट + 10 नल फिटिंग जिसकी लागत 27,000 रुपये। **रा.उ.प्रा.वि., सरगाँव, पं.स. जवाजा** को लॉयन्स क्लब ब्यावर यूनिट से 30 बैंचे प्राप्त हुई, श्री दिगम्बर जैन युवा मण्डल ब्यावर से 11 बैंचें प्राप्त हुई, श्री कमल भारती से 5 बैंचे प्राप्त, श्री श्रवण सिंह रावत से 5 बैंचे प्राप्त, श्री हंसराज जैन से 5 बैंचे प्राप्त, श्री भागूराम साल्वी से 5 बैंचें प्राप्त, विद्यालय अध्यापक श्री जीतराम चौधरी से 2 बैंचे, श्रीमती परवीन खान व श्री गिरवर सिंह से एक-एक बैंच प्राप्त हुई।

बाड़मेर

रा.उ.मा.वि., होडू को कक्षा 12वीं विज्ञान/कला वर्ग 2019-20 विद्यार्थियों से प्रिंसिपल टेबल प्राप्त जिसकी लागत 18,000 रुपये, श्री भवेन्द्र कुमार गोयल (प्रधानाचार्य-होडू) से एक टी.वी. प्राप्त जिसकी लागत 20,000 रुपये, श्री पोकर राम सेंवर (सरपंच प्रतिनिधि होडू) से क्रिकेट मेट प्राप्त जिसकी लागत 11,000 रुपये, श्री रणछोड़मल नगाजी मोनी होडू से दो छत पंखें प्राप्त जिसकी लागत 4000 रुपये, सर्व श्री ओम प्रकाश शर्मा (व.अ.) जेठाराम सांई (अ.) मालाराम मेघवाल (अ.) से 16 प्लास्टिक कुर्सी प्राप्त जिसकी लागत 11,000 रुपये।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

शिविरा पत्रिका (मासिक) : अगस्त, 2020 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादक: अनिल कुमार अग्रवाल, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

www.rajsevak.com

बाल शिविरा

हमारे बाल कलाकार...

रा.उ. प्रा. वि. खेड़ी भूपालसागर,चित्तौड़गढ़
कक्षा-8 छात्रा- रिमझिम वैष्णव

रा. उ.मा. वि. लक्ष्मण डूंगरी, जयपुर
कक्षा-8, विद्यार्थी-ईशान

महैनम पब्लिक स्कूल माण्डलगढ़, भीलवाड़ा
कक्षा-8, विद्यार्थी-गर्वी सोनी

चित्रवीथिका : अगस्त, 2020

माध्यमिक शिक्षा निदेशक श्री सौरभ स्वामी को कोरोना वारियर्स अभिनन्द पत्र भेंट करते राजस्थान शिक्षक संघ राष्ट्रीय के प्रदेशमंत्री श्री रवि आचार्य साथ में विनोद पूनिया, नरेन्द्र आचार्य व रमेश व्यास।

(बाएं) राजस्थान राज्य शिक्षा नीति 2020 दस्तावेज (प्रारूप) एवं (दाएं) शिक्षा विभाग में बचत एवं मितव्ययता के सुझाव एवं प्रस्ताव दस्तावेज माननीय शिक्षामंत्री श्री गोविन्दसिंह डोटासरा को सौंपते राजस्थान राज्य शिक्षा नीति समिति के चेयरमेन श्री ओंकारसिंह, पूर्व आई.ए.एस.। श्री ओंकारसिंह निदेशक (माध्यमिक शिक्षा) भी रहे हैं।

भारत स्काउड गाइड, स्थानीय संघ श्री डूंगरगढ़ के स्काउट्स द्वारा सार्वजनिक स्थानों पर कोरोना जागरूकता संदेशों को पेंटिग द्वारा आम जनता को जागरूक करते स्काउटस एवं गाइडस् तथा स्काउट मास्टर आदि।

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय सांवलों की ढ़ाणी, गोविन्दपुरा में शिक्षकों द्वारा सौन्दर्यीकरण कार्य के दौरान शिक्षण सामग्री बनाते शिक्षक गण।

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय टोडा मीणा (दौसा) में माँ सरस्वती मंदिर में प्रतिमा के प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव पर महिलाओं की कलश यात्रा, भामाशाहों द्वारा माँ सरस्वती का पूजन व भामाशाहों का सम्मान, अतिथिगण, अभिभावक एवं शाला स्टाफ।